– ये बोलते आंकड़े –

नाम–आचार्य श्री रघुनाथजी म०

जन्म भूमि–सोजत नगर (प्राचीन नाम ताम्रवती)

देश–मारवाड़

पिता–श्री शाह नथमलजी बलावत हाकिम सोजत।

माता–सोमादेवीजी

जन्म तिथि–विक्रम संवत् १७६६ बसन्त पंचमी।

गृहवास–सम्वत १७६६ से १७८६ तक अर्थात् २० वर्ष।

पद–सोजत हाकिम ३ वर्ष तक।

सम्बन्ध–सोजत निवासी कुन्दनमलजी वेद मूथा की सुपुत्री रत्न कुंवर

वैराग्य का कारण–मित्र की अकस्मात् मृत्यु श्रवण से।

अमर होने को–चामुण्डा देवी के सन्मुख शिर चढ़ाने जाना।

सत प्रेरक–आचार्य श्री भूधरजी म० सा० का मिलना और ईश्वर कर्तृत्व पर चर्चा सं० १७८३

विरक्त भाव–सं० १७८३ मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी से सं० १७८७ का जेष्ठ कृष्णा १ तक।

दीक्षा–सं० १७८७ जेष्ठ कृष्णा २ बुधवार को।

दीक्षा स्थान–जोधपुर, राज्यमान् वीर शिरोमणि दिवान भण्डारी खींवसींजी द्वारा दीक्षा का सारा व्यय राज्यकोष से।

गुरु–आचार्य श्री भूधरजी म० सा०

सम्प्रदाय–जैन स्थानक वासी (साधु मार्गी संघ)

प्रतिज्ञा–दीक्षा के प्रथम दिन से ही लगा जीवन पर्यन्त पांच २ का पारणा करना तथा घृत को छोड़कर चारों विगय का त्याग, कारण को छोड़ कर।

गुरु के साथ विचरण–सं० १७८७ से १८०३ तक क्योंकि १८०३ के विजय दशमी को आचार्य श्री भूधरजी म० सा० का मेड़ता (मारवाड़) मे स्वर्गवास हो जाना।

स्वतन्त्र विचरण–सं० १८०३ से १८४६ माघ शुक्ला ११ तक।

आचार्य पद–सं० १८०४ चैत्र शुक्ला पंचमी सोजत।

विचरण भूमि–मारवाड़, मेवाड़, मालवा, गुजरात, पंजाब जमुना पार, ढुंढाड़, थली आदि।

अध्ययन–वेद, उपनिषद, भागवत पातन्जल, व्याकरणादि। क्योंकि प्रथम रामानुज सम्प्रदायानुयायी थे। पश्चात् जैनागमों के प्रखर विद्वान बने।

भाषाज्ञान–गुजराती, फारसी, संस्कृत, प्राकृत, आदि।

मातृ भाषा–मारवाड़ी।

भाषण शैली–वैराग्योत्पादक, धर्म कथा, प्रबन्ध, जिनागमों की मान्यता से युक्त अतीव प्रभाव-शाली।

लक्षण–दाहिने हाथ व पैर मे ऊर्ध्व रेखादि शुभ चिह्न।

तपश्चर्या–पाँच २ के पारणे के उपरान्त ५ मास का तप १ चार मास का तप तीन ३ मासी तप ११ ग्यारह, २ मास तप सात, मासिक तप इक्कीस, पाक्षिक तप पॉच ६० वर्षों में किये। कुल ६० वर्षों मे आहार के दिन केवल ६७५ ही हैं, ऐसा घोरातिघोर तप किया। तपस्या में केवल गर्म पानी तथा आच यानि गर्म छाछ के ऊपर का नितरा हुवा पानी लेते थे।

त्याग–चार विगय का त्याग एक चद्दर के उपरान्त ओढने का त्याग, १५ पन्द्रह द्रव्य के उपरान्त लगाने का त्याग, दिन में २ घण्टा मौन और रात्रि मे तीन पहर मौन रखते थे।

उपसर्ग–जहर मिश्रित आहार मिला, तीन दिन तक हवेली में बंद कर दिये, पत्थरों से मारे, कुत्तों से कटवाना और गांव में प्रवेश आदि नहीं करने देना वगैरह २ भयंकर उपसर्ग विरोधियों द्वारा क्रियान्वित हुए। किन्तु आप अपने सिद्धान्त पर क्षमा युक्त अटल रहे।

साहित्य निर्माण–बत्तीस सूत्रों की हुंडियों का निर्माण तथा चर्चात्मक छोटे बड़े ५ ग्रन्थ बनाये। यह सम्पूर्ण साहित्य गद्य मे बनाया गया है।

भावना–विश्व शान्ति तथा प्राणी-मात्र से वात्सल्य भाव रखना।

शिष्य–आपके २२ और पौत्र शिष्य ५० तथा प्रपौत्र शिष्य ६५ थे।

गुरु भ्राता–६ नौ थे। मुनि श्री गोरधनदासजी, श्री रूपचन्दजी, श्री नारायणदासजी, श्री रघुनाथजी, श्री जेतसीजी, श्री जयमलजी, श्री कुशालोजी, श्री जगमालजी व श्री रामरत्नजी।

दिक्षाओं की संख्या–५२५ स्त्री और पुरुषों को।

चर्चा–वेदान्तियों से, यतियों से, पोतिया=बंद पंथ वालों से व भिक्खणजी आदि से अनेकों बार की।

प्रतिबोध–सेठ साहुकारों को, राजा और जमीदारों को व अन्य लोगों को बोध दिया।

व्यक्तित्व–आपका कठोर क्रियायुक्त बड़ा चमत्कृत पूर्ण था।

वर्षावास संख्या–६० साठ, २३ क्षेत्रों में हुआ।

क्रम से:–

अन्तिम वर्षावास–पाली (मारवाड़) १८४६ खेद होने से विशेष विराजे, उसी वर्ष माघ शु० ११ को स्वर्गवासी हुए।

॥ श्री ॥

—:: चतुर्मास–तालिका ::—

★

संख्या	स्थान	ठाणा	सम्वत्	
१.	मेड़ता	६	१७८७	पूज्य श्री भूधरजी म०
२.	"	२	१७६६	पूज्य श्री रघुनाथजी
३.	"	५	१८००	"
४.	"	६	१८०३	"
५	"	७	१८०६	"
६	"	६	१८१५	"
७	"	६	१८२०	"
८.	"	६	१८२४	"
६.	"	६	१८२६	"
१०.	"	६	१८३४	"
११.	"	४	१८३८	"
१२.	"	४	१८४२	"
१३.	"	६	१८४५	"
१.	सोजत नगर	८	१७८८	पूज्य श्री
२.	"	३	१७६४	"
३.	"	३	१८०५	"
४.	"	६	१८०८	"
५.	"	४	१८११	"
६.	"	४	१८१४	"

संख्या	स्थान	ठाणा	सम्वत्	
१	बगड़ी	४	१८०६	"
२	"	५	१८१२	"
१	जयतारण	५	१८०७	"
१	बिलाड़ा	५	१८१७	"
२	"	७	१८२३	"
१	बिकानेर	५	१८१८	"
२	"	५	१८२५	"
३	"	६	१८३२	"
१	सादड़ी	७	१८१६	"
२	"	६	१८४१	"
१	पाली	६	१८२७	"
२	"	६	१८३५	"
३	"	१०	१८४६	" स्वर्गवास
१	दिल्ली	५	१८३०	"
१.	पालनपुर	७	१८३६	"
१.	उज्जैन	८	१८३७	"
१.	उदयपुर	६	१८४४	"

—❀ मीजान ❀—

३५.	मेड़ता,	सोजतनगर,	जोधपुर,	जालोर,	लाड़नू
	१३,	१०,	६,	१,	२,
=	नागोर,	पिपाड़,	बड़ी पादू,	रुपनगर,	जयपुर
	२,	१,	१,	१,	३

१०	बगड़ी,	जयतारण,	बिलाड़ा,	बिकानेर,	सादड़ी
	२,	१,	२,	३,	२,
७.	पाली,	दिल्ली,	पालनपुर,	उज्जैन,	उदयपुर
	३,	१,	१,	१,	१,

---

६० चातुर्मास—

संख्या सम्वत् दिक्षायें:—

संख्या	सम्वत्	स्थान	दिक्षायें	तिथि
१.	१७८७	मेड़ता	श्री जयमलजी,	मिगसर वदी २
३	१७६५	बड़ी पादू	श्री दलाजी,	कार्तिक शुक्ला ५
			,, पेमाजी	,,
			,, हीराजी	,,
४	१७६६	मेड़ता	श्री पालजी	भाद्र पद शु० १४
			,, नेनूजी	,,
			,, भांणजी	,,
			,, थानोंजी	,,
३.	१७६७	जोधपुर	श्री रेखोजी	कार्तिक कृ० ३
			,, लिखमोजी	,,
			,, खूमजी भण्डारी	,,
			चढता भावों सू	
२.	१७६८	रूपनगर	श्री नन्दलालजी	भाद्र पद शु० ६
			,, रूगलालजी संवत्सरी के प्रातः	
			महेश्वरी सगा भाई—	

संख्या	सम्वत्	दिक्षाये:—		
१	१८००	मेड़ता	श्री हीरजी	श्रावण शु० १० गुरुवार
३.	१८०२	जयपुर	श्री हीरजी छोटा	भाद्र पद मास में
			" नाथोजी	कार्तिक शु० ७
			" नारायणजी	"
३	१८०३	मेड़ता	श्री मगनमलजी	श्रावण बदी ६
			दफ्तरी	"
सतियां ३,				
३	१८०४	जोधपुर	" हसोजी कोठारी	"
			" जेतोजी–	"
			श्री रेखोजी	आसोज कृ० ३
			" फूलजी	"
			जड़ावजी, मगूजी, फूलोंजी–	
२	१८०५	सोजत	छोटा नाथाजी,	भाद्र पद कृ० ७
			श्री किशनाजी	"
			पोरवाल	
३	२५			

बड़ी दीक्षा–काती सुदी २ ने साथ २

२	१८०८	सोजत	श्री अमीचंदजी	दूजा अषाढ़ सुदी २
			" भीखमजी	" अषाढ़ बदी ८
१.	१८१०	जोधपुर	श्री आसूजी	आसोज शु० ११

संख्या सम्वत् दिक्षाये—

स० ४

५.	१८११	सोजत	श्री हेमजी कंटालिया वाला	आसोज शुक्ला पूर्णिमा
			" सोमजी साथीण—	"
			" शाहमलजी सांचोरा पोरवाल	"
			श्री मगराजजी दुधेडिया सोजत	"
			" दलीचन्दजी भंडारी जोधपुर	
			४ सतियां—	
६.	१८१२	बगड़ी	श्री टोड़रमलजी	कार्तिक कृ० ६ बृहस्पतवार बगड़ी में
			" उर्जनजी	फागण शु० २
			" मघराजजी	फागण शु० १
			" टोकरजी	फागण शु० ५
			" नगराजजी	वैसाख कृ० १०
			" माणकजी	वैसाख शु० ३
२.	१८१४		" जयचन्दजी	जेठ शु० १३
		सोजत	श्री कुशलोजी	फागण शु० १ बड़ी

(

संख्या	सम्वत्		दिक्षाये—
			दीक्षा असाढ शु० १
१	१८१४		श्री गोकलजी मिगसर बदी ६
	१८१७	बिलाड़े	„ सांवतजी कटारिया श्रावण बदी ८
५, १.	१८२०	मेड़ता	सतियांजी फतुजी के पास ५ दिक्षाऐ श्रावण सुदी ११ श्री चोथमलजी झामड़ भंवाल— मिगसर बदी २
२, १.	१८२५	बिकानेर	श्री धूलचन्दजी वैद मूथा श्री खींवराजजी री धर्म पत्नियां व लड़के— आसाढ़ी चातुर्मासी को तीन सतियां काती बदी १३
२, २	१८२७	पाली	श्रीठाकरसीजी, लूणकरणजी, धारीवाल स जोड़े चारों की दीक्षा— आसोज शु० १०
२,	१८३०	दिल्ली	श्री छगनजी, श्री बगतांजी धाकडीवाल, काती सुदी ७ ने
३,	१८३४	मेड़ता	श्री जतनजी, श्री झमकुजी, पानाजी काती बदी १०
२,	१८३६	पालनपुर	श्री लाधाजी, रतनजी भादवा सुदी ६

संख्या	सम्वत्	दिक्षाये—	
१	१८३७	उज्जैन	श्री भगवान पोरवाल आसोज सुदी ७
	१८३८	मेड़ता	श्री फेफजी की दीक्षा श्री हरकुजी सती के पास काती वदी ३
१, २	१८४१	सादड़ी	श्रीवीरचंदजी कावेडिया, मेघराजजी बाफणा श्री राजांजी सती— श्रावण शु० १५
२५—	५१		

१

जीवन चरित्र

❀ श्री वीतरागाय नमः ❀

उत्तरार्द्ध खण्ड

पूज्य श्री धर्मदासजी म. सा.

का

जीवन चरित्र प्रारभ्यते

तर्ज—लावणी

भये धर्म प्रचारक धर्मदास वड भागी,
सुन लेना तस अधिकार भव्य वन रागी ॥टेर॥

अहमदाबाद के पास ग्राम इक भारी,
सरखेज नाम का भावसार जहां व्हारी ।

था सात सौ के लगभग सदन सुखकारी,
लौंका गच्छीय श्रीमन्त बडे व्यौपारी।
कालीदास सुत जीवनदास सौभागी ॥ भये० १ ॥
था प्रमुख स्वजाति बीच सरलता वाला,
थी हीरा देवी नार सदन उजियाला।
ग्यारस शुक्ला चैत्र समत सतरा की,
हैं एका अनमोल रयन अधरा की।
जन्मा पुत्र उदार दशा शुभ जागी ॥ भये० २ ॥
धर्मदास दियो नाम धाम गुण केरा,
उमर वर्ष जु आठ वधे सुख शहेरा।
पाठशाला में पढ़े विचक्षण गहेरा,
केशवजी यति पास लौंका मत हेरा।
उस पै धार्मिक ज्ञान पढा पग लागी ॥ भये० ३ ॥
ज्यौ ज्यौ पढते आप चाह तत्वों की,
सज्जन करे विचार सुत्रन सत्वों की।
तेजसिंह यति लौंका गच्छ के आये,
शका का समाधान उसी से पाये।
दीक्षा लेन हित लगन उसी को लागी ॥ भये० ४ ॥

॥ कवित ॥

मात तात सेति आज्ञा, मांगी है विनय युत,
सुनते चकित सारे, एकदम हो ग॥

अरे पुत्र एकाएक, ऐसा क्यों विचार किया,
हमें हैं आधार कौन, एसा कहि रो दिये ।
धर्मदास धैर्यता से, सभी से कहत पीछा,
रहा कौन जीता जग, केते प्राणी सोगये ।
याते अंतराय मत, दीजिये दयालू आप,
पाप बीच पड़े सो तो मनुभव खोगये ॥१॥

ढाल तर्ज-लावणी

करते खेंचातान दिवस कई वीता,
देत परिषह अपट रह गये रीता ।
उसी समय एक पथ प्रान्त में फैला,
धर्म पोतिया बध पात्र इक मेला ।
रक्त पहनते वस्त्र मिथ्या मत छागी ॥भये० ५॥
मुनि धर्म है नाय दुषमी आरा में,
क्रिया हीन है सर्व ढोंग सारा में ।
श्रावक क्रिया सुचग करो मिल करणी,
श्रद्धा सच्ची एह जान भव तिरणी ।
चोटी रखते शीश क्रिया पथ पागी ॥भये० ६॥

पंथ के संस्थापक-(चंद्रायणा)

प्रेमचद श्रीमाल सरवान्या ग्राम का,
१६८९
शोले निव्वे की साल पुत्र जयराम का ।

सतरा से उन्नीस को, सुद पंचम कातीय ।
धारा में इक्वीस जन, मालव में साथीय ॥२॥
ले आज्ञा गये गोचरी, प्रथम दिवस की बात ।
द्वेषी राख वेरायदी, कुछ उड़गी कुछ हाथ ॥३॥

ढाल ३री

तर्ज-हां पास मोय लागे प्यारो

रही राख को लेकर आये गुरुवर को सब हाल सुनाये,
श्रवण करत मन में हर्षाये ।
गुरु कहे तू पुन्यवान धर्म को सहायक भारी रे ॥१॥
होगा कलियुग अवतारी, धर्मदास तूं शुद्ध आचारी,
बढसी बहु परिवार जैन शांसण जयकारी रे ॥टेर॥
राख बिना घर लावे नांई, वैसे तुम शिष्यो बिन भाई,
खाली गाम रहेगो नाहीं,
सत्य वचन गुरु शर्ध राख पीनी तिनवारी रे ॥ हो॰ २ ॥
दिन इकवीस रहे गुरु राई, कियो काल गये स्वर्ग सिधाई,
सथारा उज्जैण कहाई-
सतरा उन्नीस अगहन ग्यारस कृष्ण विचारी रे ॥ हो॰ ३ ॥
दिवस अल्प गुरु शिर पर छाज्या, याते स्वय बुध्य वह वाज्या ।
जास कृपा सुद्ध संजम साज्या,
विचरे विमलाचार से तप जप अधिकारी रे ॥ हो॰ ४ ॥

भूप सेंधीया नगर ग्वालीयर, विचरत आप पधारे वहां पर।
ध्यान धर्यौ छत्री जहां सरवर,
गयो भूप सामतो साथे करन सिकारी रे॥ हो० ५॥
पवन झूमगो विष भरियोड़ो, डंक लगत राजा भू पड़ियो।
वदन त्रिलोकी मत्री डरियो,
लास लिजावत शहर में निरख्यो अनगारी रे॥ हो० ६॥
धर्मदास पै मंत्री आकर–कटुक वचन कह्या शीश नमाकर।
दुखित हृदय से आंसू लाकर,
संतो खोलो ध्यान वात सुन लीजो म्हारी रे॥ हो० ७॥

॥ कवित ॥

आपको पधार वो तो–मांके न ही आछो भयो,
प्रजा प्रति पाल भूप, भणी साप झूमगो।
मृत्युक समान लास, पडि है निहार लीजे,
चारों ओर त्राहि त्राहि मची मेह सूमगो।
सच्चे अवधूत हो तो, इन्हों को उबार दीजे,
ना तो थांके माथे आय, काल आज घूमगो।
थोड़ा में विचार आप, साप को मिटावो ज्हेर,
दुनियों पड़ेगी पाय, चावो जस चूमगो॥ १॥
ध्यान पार गुरुदेव-कहै ललकार उसे,
मरणे का भय हम, डरसे न आने है।

लौंका गच्छीय कुवर यतिजी से निकल,
स्थापित कीनो पथ वदलदी मुनि सिकल ॥१॥
साचोरी जालोर सिरोही प्रान्त में,
मालव अरु गुजरात मेवाड़ज ख्यात में।
फैल्यौ वांको पथ श्राविका पिण बनी,
जड़ोपासक नहीं तेह क्रिया श्रावक तणी ॥२॥

॥ दोहा ॥

प्रेमचन्द के पट्टधर, गागोंजी गहराय।
तस शिष्य श्रीकल्याणजी, पंथपति कहलाय ॥१॥
वासठ थे रक्तांवरी, लिंगधारी नर नार।
करते धर्म प्रचार उत; आये करी विहार ॥२॥

ढाल २री

तर्ज-ना छेड़ो गाली दूंगी रे

नहीं साधू पन हैं भाई रे, इस पचम आरा माय ॥टैर॥
सघयण रहा नहीं ऐसा, मुनि धर्म निभावे जैसा,
फिर लगे दोप उस मांई रे ॥ इस० १ ॥
कल्याण कथा के मांही, यों श्रद्धा रया जचाई,
कई लोगों के मन भाई रे ॥ इस० २ ॥
गया धर्मदास उन पासे, निज भाव सुनाया वांसे,
वो अपनि श्रद्धा विठाई रे ॥ इस० ३ ॥

ले आज्ञा धर्म सभाले, धर्मदास तास पथ चाले,
तदपि न रुचा मन मांई रे ॥ इस० ४ ॥
लवजी ऋषी मिलिया उनको, जब धर्मदासजी वन को,
चर्चा जो खूब चलाई रे ॥ इस० ५ ॥
इकवीस वात का फेरा, रहा धर्मदास हित हेरा,
फिर मिला धर्मसी तांई रे ॥ इस० ६ ॥
वांसे पिण मिली न शरधा, रहा सात बोल का अरधा,
मालव में घूम रहाई रे ॥ इस० ७ ।

॥ कवित ॥

जगाधर यति शिष्य, जीवराज ज्योतिर्धर,
महा क्रियावत ज्ञान ध्यान में प्रवीन है ।
अकले अबीहसींह भांती क्रांती मचा दई,
शांति को समुद जामे इन्द्र गुण लीन है ।
जांपै धर्मदास जाके, चर्चा चतुर कीनी,
जमी धर्मदास जीय, जैसे वारी मीन है ।
एक पात्री पोतिया बंध को प्रपच छोर,
मुनि पण लीनो पुनि श्रद्धा सुध कीन है ॥१॥

॥ दोहा ॥

एक वर्ष कुछ दिन अधिक, सेव्यौ पोतिया बन्ध ।
जीवराज गुरु धारते; ढहग्यौ सारो ध्वंध ।१॥

सतरा से उन्नीस को, सुद् पंचम कातीय ।
धारा में इक्वीस जन, मालव में साथीय ॥२॥
ले आज्ञा गये गोचरी, प्रथम दिवस की बात ।
ढ्रपी राख वेरायदी, कुछ उड़गी कुछ हाथ ॥३॥

ढाल ३री

तर्ज-हां पास मोय लागे प्यारो

रही राख को लेकर आये गुरुवर को सब हाल सुनाये,
श्रवण करत मन मे हर्षाये ।
गुरु कहे तू पुन्यवान धर्म को सहायक भारी रे ॥१॥
होगा कलियुग अवतारी, धर्मदास तू शुद्ध आचारी,
वढसी वहु परिवार जैन शांसण जयकारी रे ॥टेर॥
राख विना घर लावे नांई, वैसे तुम शिष्यो विन भाई,
खाली गाम रहेगो नाहीं,
सत्य वचन गुरु शर्ध राख पीनी तिनवारी रे ॥ हो॰ २ ॥
दिन इकवीस रहे गुरु राई, कियो काल गये स्वर्ग सिधाई,
सथारा उज्जैण कहाई-
सतरा उन्नीस अगहन ग्यारस कृष्ण विचारी रे ॥ हो॰ ३ ॥
दिवस अल्प गुरु शिर पर छाज्या, याते स्वय वुध्य वह वाज्या ।
जास कृपा सुद्ध सजस साज्या,
विचरे विमलाचार से तप जप अधिकारी रे ॥ हो॰ ४ ॥

भूप सँधीया नगर ग्वालीयर, विचरत आप पधारे वहां पर।
ध्यान धरयौ छत्री जहां सरवर,
गयो भूप सामतो साथे करन सिकारी रे॥ हो० ५॥
पवन झूमगो विष भरियोड़ो, डंक लगत राजा भू पड़ियो।
वदन विलोकी मत्री डरियो,
लास लिजावत शहर में निरख्यो अनगारी रे॥ हो० ६॥
धर्मदास पै मंत्री आकर-कटुक वचन कह्या शीश नमाकर।
दुखित हृदय से आंसू लाकर,
सतो खोलो ध्यान बात सुन लीजो म्हारी रे॥ हो० ७॥

॥ कवित ॥

आपको पधार वो तो-मांके न ही आछो भयो,
प्रजा प्रति पाल भूप, भणी साप झूमगो।
मृत्युक समान लास, पडि है निहार लीजे,
चारों ओर त्राहि त्राहि मची मेह सूमगो।
सच्चे अवधूत हो तो, इन्हों को उबार दीजे,
ना तो थांके माथे आय, काल आज घूमगो।
थोड़ा में विचार आप, साप को मिटावो व्हेर,
दुनियों पड़ेगी पाय, चावो जस चूमगो॥ १॥
ध्यान पार गुरुदेव-कहै ललकार उसे,
मरणे का भय हम, उरमे न आने है।

तो भी तेरा भूप आज, पीछे ना सिकार खेले,
प्राण तुल्य जीव सारे-हृदय में ठाने हैं।
सचिव कहत हमे, वाक्य है प्रमाणदेव,
इतनी कहत राजा, स्वस्थ्य भो सयाने हैं।
प्रभावित राजा आदि, होगई जहान सब,
भक्तवनी भक्ती युत गुरु खास माने हैं॥ २॥

ढाल-पूर्वकी

वधियो नाम अताप कर्म से, श्रावक रजित हुये धर्म से।
होगये पन्नके हटे भर्म से,
निन्नाणू भये शिष्य और परिवार अपारी रे ॥ हो० ८ ॥
सवत सतरा और वहोत्तर-चैत्र शुक्ल तेरस को सुखकर।
वाइस सिंघाडा थाप्या हितधर-
कल्पवृक्ष सम बन्धो सघ धारापुर व्हारी रे ॥ हो० ६ ॥

॥ छप्पय ॥

प्रथम पूज्य धनराज, लालचन्द दूजा जानो,
हरिदास, जीवराज, बड़ा पृथ्वीराज पिछानो।
लघु हरी, लघु प्रथेश, मूलचन्द, तारक मानो।
प्रेम खेतसी पूज्य, पदारथ दिल में ठानो।
लोकपन्न, भवानी, मूलमुनी, पुरुपोत्तम मुनि,
मुकटसी-गुरु सहाय मनोहर बागसी, सिमरथ
आदि सुधरसी (धर्मदास)।

यह बावीस समुदाय, सवत सत्तरा बहोत्तर,
तेरस उज्वल चैत [illegible] नगर वर।
धर्मदास परिवार संत सतियों का सुखकर,
बढियो भारत माय क्रिया वह पालत दुर्धर।
गुजरात और पंजाब में यू पी राजस्थान वर,
कच्छ काठियावाड़ मुनि महाराष्ट्र में रहे विचर ॥२॥

॥ वज्र छंद ॥

सारा आगा अखडित पाले, गणियर गमवर ज्यों मही माले,
वो तो पाखड्यों उर साले, कांटो जैसे पग में।
वहां की वचन संपदा ऐसी-मानो गोयम गणधर जैसी,
बोली मीठी अमृत तैसी-रमती रग रग में॥
चारों सघों की रखवाली वो तो सो हमसी कर डाली,
जांको चमत्कार निहाली-दुनियों चकराती।
चपा मोरसिली की भांती, शोभा रूप सुगन्धी आती,
समकित हो जाती मदमाती भ्रमना जाती है॥

॥ दोहा ॥

शिष्य एक संथार से, धारशहर के माय,
सिथिल हुवा परिणामतस-सुणियो पूज्य सुवाम ॥१॥
उज्जैणी से पूज्य श्री-त्वर्या कीध विहार,
मग में भुजिया तेल का, तिनको लिया अहार ॥२॥

ढाल ४ थी

तर्ज-जगत गुरु तृशला नंदन वीर

सांज समें पउधारियाजी, आचार्य अभिराम।
समजायो समज्यों नहीं जी, गुरु सूता तिणठाम ॥१॥
धर्म पै पूज्य दियो बलिदान ॥ टैर ॥

पाणी पिण पीधो नहीं जी, पच्चख्यौ प्रभू चौ विहार,
सूरवीर इसडा हुवेजी, आन बचावण हार ॥ ध० २ ॥

सथारो सखरो कियो जी-धर्म दिपावण नाथ,
दुनियों रहगई देखतीजी-धन-धन ज्यांरी मात ॥ ध० ३ ॥

तीन दिवस संथार में जी-गर्मि रो उपसर्ग,
सम परिणामें सहकरी जी, सचरिया गुरु स्वर्ग ॥ध०४॥

सिद्ध पावडिया में खुल्यों जी, नाम जिणा रो खास,
एका अवतारी हुसीजी-युग प्रधान विलास ॥ ध० ५ ॥

पाट पूजीजे आज लों जी-धारा नगर मजार।
नाम लियो नव निधहुवेजी, वर्त्ते जय जयकार ॥ ध० ६ ॥

चाले पाट परपराजी-चारों दिसा मजार।
लखों श्रावक श्राविकाजी-शांसण में सुखकार ॥ ध० ७ ॥

भू शशि नंभ हग अब्द में जी, कार्तिक एकम कृष्ण।
शिवाने "मिश्री मुनीजी" कथियो मन हो प्रश्न ॥ध० ८॥

पाने जूने पेखीयो जी यावडकों सेधार ।
मन कल्पित नहीं केलव्योजी पूज्य तणो अधिकार ।। ध० ६ ।।

॥ कलश ॥

धर्म धोरी कर्म तोडी अपर भव अप वर्ग में,
जावसी पिण विद्यमा ने सुख माणे स्वर्ग में ।
बुधमाल गुरु पद्पद्ममधुकर मिश्रीमुनि कितीथुणी ।
गढ़ शिवाने चरित रचियो प्रेम से गावे गुणी ।। १ ।।

।। इति श्री धर्मदासाचार्य गुण ग्रंफित चतुषढालिया सपूर्णम् ।।

२

जीवन चरित्र

ढाल १ ली

तर्ज-हिंडे हालोरे

मुज मन भायारे श्री पूज्य धन्नाजी धर्म दिपायारे ।।टेर।।
मारवाड साचौर परगने मालवाडा सुख दायारे,
पोरवाल वागाजी मूथा श्रेष्ट कहायारे ।। मु० १ ।।
कमकुंवाइ के रे उदर से सतरे एक सुहायारे,
चैत्र सुदी दशमी को जन्म्या सुन्दर कायारे ।।मु०२।।
तेरा वर्ष की उमर हो गइ होस्यारी में आयारे,
सर्प मारता लोगों ने लखि मन घबरायारे ।। मु०३ ।।
इस भांति प्राणी जग मरकर भव संसार वढायारे,
पुद्गल में फंसकर के केइ जन्म गमायारे ।। मु० ४ ।।
धर्म पोतिया वंधू जिन्हों में दीक्षा हित हुलशायारे,
आज्ञा लेकर तातमात से जग छिटकाया रे ।।मु०५।।
ज्ञान पढे उन्हके सग विचरे पिण नहीं चित लुभायारे,
क्रिया हीन क्या मुजे तारसी ढोंग वधायारे ।।मु०६।।
त्यागी पुरुष मिलै को म्हाने सफल करु निज कायारे,
प्रथमा ढाले मुनि मिश्री यों दर्शाया रे ।। मु० ७ ।।

|| दोहा ||

आठ वर्षयों वितगा मालव में मलपंत,
धर्मदास आचार्य की संगत भइ सुखंत ।।१।।

सतरा पर इक्कीश को कार्तिक पंचम सुद्ध,
धर्मदास के शिष्यमै संजम लियो विबुद्ध ॥२॥

ढाल २ जी

तर्ज--मास खमण रो मुनि रे पारणोरे

धन्ना मुनीश्वर करणि आदरीरे दुक्कर कारक ममता टाररे,
चारों विगय का त्यागज कर लिया रे,
झटझट तपस्या लीनी धार रे ॥१॥

वारी जावू' हो धन्ना आप पै रे कर्मो सू लड़वा त्यार रे,
कायारी छोडी शाल सभाल ने रे,
शात परिणामी सुद्धचार रे ॥ वा० टैर ॥

बलती बैलू पै पौढे जेठ में रे अथवा पर्वतरो शिल्ला जायरे,
तपिया कडावोंरी परवा है नही रे,
लौटे ज्यों सुख शैय्या रे माय रे ॥ वा०२ ॥

एक चादर तो ओढे चूपसू रे मिगसर पौष मासरी ठंडरे,
सहन करै छे साचा सूरमारे,
गाले है पाखंडियों रा घमडरे ॥ वा० ३ ॥

तीन द्रव्यों सू ध्यादाना लिये है जीती लीधो है जीव्हा स्वाद रे,
मौन तो दिन में मूहुर्त आठरी रे,
ज्ञान मे मगन रहै अह लादरे ॥ वा० ४ ॥

सतरा पर इकीश को कार्तिक पंचम सुद्ध,
धर्मदास के शिष्यमै संजम लियो विवुद्ध ॥२॥

ढाल २ जी

तर्ज--मास खमण रो मुनि रे पारणोरे

धन्ना मुनीश्वर करणि आदरीरे दुकर कारक ममता टाररे,
चारों विगय का त्यागज कर लिया रे,
झटझट तपस्या लीनी धार रे ॥१॥

वारी जावूं हो धन्ना आप पै रे कर्मो सू लड़वा त्यार रे,
कायारी छोडी शाल सभाल ने रे,
शात परिणामी सुद्धचार रे ॥ वा० टैर ॥

बलती बैलू पै पौढे जेठ में रे अथवा पर्वतरो शिल्ला जायरे,
तपिया कडावोंरी परवा है नही रे,
लौटे ज्यों सुख शैय्या रे माय रे ॥ वा०२ ॥

एक चादर तो ओढे चूपसू रे मिगसर पौष मासरी ठंडरे,
सहन करै छे साचा सूरमारे,
गाले है पाखंडियों रा घमडरे ॥ वा० ३ ॥

तीन द्रव्यों सू ब्यादाना लिये है जीती लीधो है जीव्हा स्वाद रे,
मौन तो दिन में मूहुर्त आठरी रे,
ज्ञान मे मगन रहै अह लादरे ॥ वा० ४ ॥

सूत्र बत्तीसों केरी प्रेमसूं रे साज्जाय करणी शालो शाल रे,
क्षण भर सेवे नहीं परमाद ने रे,
मिश्री मुनि कही दूजी ढाल रे ॥ वा० ५ ॥

॥ दोहा ॥

दृढताइ व्रत नियम में चढता नित्त भावोंय;
मढवाइ गुण हेम में मृदुता वर मणियोंय ॥१॥
वडी घडी गहरी घुरे जस भेरी जग माय,
पडि भींत मित्थ्यात्वरी भरी नींव श्रद्धाय ॥२॥

ढाल ३ री

तर्ज–करेजा कूमी नहीं काइ

धन्ना गणि धन धन अधिकाइ कर,
केसरिया घोडा राल्या कर्म जग मांइ ॥ टेर ॥
भाखा निर्वद्य वदे भले री बोलन सुघडाइ,
ईर्या समिती सोधत चले गजगति सुखदाइ ॥ ध० १ ॥
दिव्य देशना देवे दयालू सरल भाषा मांइ,
वैराग्गरी नित्त उठे तरगो भवि हृदय मांइ ॥ ध० २ ॥
पाच शिष्य है पंचमेरु सम चढती पुन्याइ,
क्रिया पात्र विद्वान तपस्वी सोभा घरणाइ ॥ ध० ३ ॥

श्री भूधर अरु मूलचन्दजी प्रसिद्धि पाइ,
सम्प्रदाय दश इन दोनों की अछावधी तांइ ॥ ध० ४ ॥
रूपचन्द मुनि नवमलजी तन मे नरमाइ,
देवीचन्द की देख छाटा झट पावे प्रभूताइ ॥ ध० ५ ॥
शिष्यों के सघ झलक २ मे समकित सरसाइ,
उंचो लाया जैन धर्म ने तारक कहलाइ ॥ ध० ६ ॥
उमर में टसको नहीं कीनो ओषध नहीं खाइ,
मुनि सिश्रीमल महिमा गावे तीजी ढाल माइ ॥ ध० ७ ॥

॥ दोहा ॥

मूल मुनि सौराष्ट्र को गया सूं आज्ञा पाय,
कच्छ काठियावाड में हैं उन्हकी समुदाय ॥१॥
वसु गणे गणी विचरता भूधर साथे स्याम,
दिल्ली सु मरुधर भणी आये गुण धाम ॥२॥

ढाल ४ थी

तर्ज--नवलीचन्दजी है कसजनी

सतरे से चौरासीये हो गुणीजन नगर मेडते बार रह्या रात,
छत्रि विषे हो गुणिजन धन्ना गणि गुणधार के ॥ १ ॥
धन २ पूजजी हो सुगणा धन्नाजी महाराज ॥ टैर ॥

दिनोदये स्थंभतणो हो गुणि,

सहारे ऊभा आप सतों ने फरमावियो हो गुणी।

पूज्यसा व मुख साफ ॥ ध० २ ॥

सथारो है मायरे हो सतो ! पचखलियो चोविहार,

थभो खावे धान ने हो सतों तोले धन्नो अहार ॥ ध० ३ ॥

विस्मित सब मुनि चरऊत्रा हो सुगणा सुणकर दूसडी बात ।

क्या सोची गुरुदेव ने हो सुगणा विचरत दीनानाथ के । ध०४ ॥

मौन करी नहीं बोलिया हो सुगणा दोय दिवसलो तेथ,

चैत्र शुक्ल दशमी दिने हो सुगणा सूर्योदय उपेत के ॥ ध० ५ ॥

नश्वर तन को तज करी हो सुगणा स्वर्ग गया सुखकार,

आंखो खुल्ली कमल ज्यों हो सुगणा दीपरयो दीदार के ॥ ध० ६ ॥

अक्समात उत आविया हो सुगणा खींवसी भूप दिवाण,

अति अचभो ते लियो हो सुगणा देख पूज्य कल्याण के ॥ध०७॥

संस्कार चन्दन मयी हो सुगणा भंडारीजी कीध,

भूधर आदे सब मुनि हो सुगणा विहार कियो प्रसिद्ध के ॥ध०८॥

पटधर भूधर ओपिया हो सुगणा गुण रत्नों की खान,

चौथी ढाले चूंप सू हो सुगणा व मिश्री करै बयान के ॥ ध० ९ ॥

॥ कलश ॥

जय वत शांसण वीर जिनका प्रघट पचम कालमें,

अविचल चलेगा सिंह के ज्यों सदा मगल माल में ।

सिततर वे पट्टधारी धर्मदास विख्यात है,
इठत्तरवे गणी धन्ना षटकाय के वर नाथ है ॥ १ ॥
वर्णं व्यागुण राह किंचित् यथा पूर्वज से सुना,
बुधमाल पदरज मुनि मिश्रीमल ने ऐसे थुना ।
चंद्र अचला व्योम नेत्रे गढ सिवाने जानिये,
कृष्ण कार्तिक प्रतिपदा दिन बुधवार पिछानिये ॥ २ ॥

॥ इति श्री धन्नाचार्य्य कथनाकम् ॥

३

जीवन चरित्र

अर्हं

श्रीमज्जैनाचार्य
पूज्य श्री भूधरजी महाराज
का
जीवन-चारित्र

नोटः—यह व्याख्यान प० रत्न मं० मुनि श्री को जोधपुर निवासी भाकरवाली हवेली वाले भडारीजी जुगजोत दानचन्द्रजी से प्राप्त हुई है। उसी की नकल है।

तर्ज—लावनी

श्री मज्जैनाचार्य पूज्य जसधारी।
महाराज जेन दरसन का उजालाजी॥
अहो भूधरजी महाराज भये अवतारी आलाजी॥ टेर॥

रहता था नागोर देश मरुधर में ।
महाराज मुणोयन खांप वहां रीजी ॥
माणकचन्द मतिवत, तास रूपादे नारीजी ।
सुत जनम्यो सुखकार सतरै व्यारा को ॥
महाराज विजय दशमी सुखकारीजी ।
मिल भूधर दीनो नाम सभी को वल्लभकारीजी ॥
लालो लच्छनवंत लाडलो लड़को ।
महाराज दीखता रूप रुपालाजी ॥ अहो० १ ॥

छंद शिखरिणी

वड़ी मीठी चाली चमक मुखड़ा की सरस थी ।
दृगों में थी लाली, मुदित मतवाली बरसती ॥
कचों की जुल्फाली भ्रमर सम काली करस थी ।
वनिती रूपाली वदन तस भाली तरसती ॥ १ ॥

ढाल पूर्व

पढ़ गुन पडित भये विवुध के पासे ।
महाराज ललित जौवन वे आयाजी ॥
पद दीना नागोर सैर सोजत मन भायाजी ।
वहां करे काम कचहरी बीच जाकर के ॥
महाराज एक दिन अवसर पायाजी ।
धर्म पोथिया वद मुनि उनपै ललचायाजी ॥

सुत वनिता पुनि तात मात परी कर के।
महाराज छोर के जग जंजालाजी ॥ अहो० २ ॥
चल दिये धनाजी साथ मालवा कानी।
महाराज करे वहां धर्म प्रचाराजी।
पूज्य धर्मदास महाराज उनिको मिले सुखदानीजी।
उनसे चर्चा करत सद्धा सुध आई ॥
महाराज बने उनपे अनगारीजी।
गुरु भये धनाजी धन्य शिष्य भूधर अति प्याराजी ॥
कियो जैनागम को ज्ञान अति रग भीनो।
महाराज तप तपे अति निरलाजी ॥ अहो० ३ ॥

छंद द्रुतविलंबित

विनय भक्ति सदा गुरु की करै।
झल रही तनु कांति अति सिरै ॥
कमनियें भर कांति विराजती।
विमल वानि मनोहर छाजती ॥ १ ॥
बिगय पंच लगावत है नहीं।
पुनि अतापन लेवत हैं सही ॥
दिन सुपच सुपचहि अहारहे।
समत वो तन पै न लिगार है ॥ २ ॥
प्रबल धर्म प्रचारक ईसजी।
कठिन कष्ट सहे तज रीसजी ॥

सकल जीवन के संग प्यार है ।
प्रिय सदा पथ न्याय विचार है ॥ ३ ॥

तर्ज—चुरा के ले गया कोई मेरी जंजीर सोने की

मचादी क्रांति दुनियों में, अहिंसा धर्म के सहारे ।
हटे हरगिज न वह पीछे, विमल कर्तव्य से प्यारे ॥ टेर ॥
पूछते प्रश्न केई आकर, कदर से देत वह उत्तर ।
मिटा के सका वह उनकी सदर श्रद्धा पै कर डारे ॥ म० १ ॥
अलौकिक युक्तियों सुनकर दुनी सब दंग रह जाती ।
अकड़ भी आन कर चरनों, भक्ति युत सीस को डारे ॥ म० २ ॥
पोल का ढोल पाखंडी, बजाते पेट भरने को ।
खोलदी उनकी खलकत में, चासनी झोल की सारी ॥ म० ३ ॥
करे जो पाप की पुष्टि उसे समजाके सत्वर ही ।
दयामय धर्म की बातें, जचाते जिगर में वांहारे ॥ म० ४ ॥
सदेशा वीर भगवन का, फैलाया देश भारत में ।
विचरते हर जहां स्वामी, लगाते ज्ञान के नारे ॥ म० ५ ॥

ढाल पूर्व

इधर जोधपुर खानदान भंडारी ।
महाराज खींवसी था बलधारीजी ।
मरुधर म   ासवंत भूप का आज्ञाकारीजी ॥ १ ॥

बादशाह दिल्ली की सुनकर बातें ।
महाराज खीमसी को तीन वारीजी ॥ २ ॥
किया फौजी अफसर खास ।
दिया रुतबा अति भारीजी ॥ ३ ॥
कृपापात्र बनगये आप ल्याकत से ।
महाराज मिलै सिरपाव दुसालाजी ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

बादशाह की लाडली, हुर्मा सब से दोय ।
जिसमें भी थी एक अधिक, ला मिसाल है मोह ॥ १ ॥

तर्ज—राधेश्याम

मानेतन हुर्मा के मोटी सायजादी सुखकारी थी ।
बेमिसाल खूबसूरत थी और बादशाह की प्यारी थी ॥
किसी बजे से हमल रहा ये पता सौत माता को चला ।
जिकर किया उन बादशाह ते, सुनकर अति जिय जला ॥ १ ॥
उसकी मात के महल बादसाय आकर व तें कहडारी ।
सायजादी को बुलवा के वहां पूछ रहे कर दगलाली ॥
लुच्ची हरामजादी तेने मेरा नाम डुबाया है ।
सच्चा हाल सुनादे हम को, किससे जुल्म कमाया है ॥ २ ॥
धर्मावतार सरताज पिताजी, कसमखाय सच कहती हूँ ।
नेक राह से चलती हूँ और अपने महल में रहती हूँ ॥

इस बात की मुझे न मालूम इक मालिक का सारा है।
कुदरत ने कर कोप मेरे पे, जाल आनके डारा है॥ ३॥
गुस्से होकर बादशाय चल खास कचहरी आया है।
काजी मुल्ले और ओलिया, पंडितों को बुलवाया है॥
कहे बतादो हराम के बिन हमल रहे अथवा नाहीं।
अपने २ ग्रन्थों की कर खोज जल्द दो बतलाई॥ ४॥
सब कहे कर जोड़ बात या हजूर क्या फरमाते हैं।
सब को मालूम साफ भोग बिन गर्भ नहीं रह जाते हैं॥
कर बर्खास्त बादशाह सबको ऐसा हुकम हकारा है।
मार डालो चट उस दुष्टन को मेरा नाम बिगारा है॥ ५॥
खान और उमराव किसी की हिम्मत नहीं है बोलन की।
पकड़ शेर के दांत गिने किम, और अही मुख खोलन की॥
खड़ा हुआ है ताम खीमसी खपा माप स्वामी कीजै।
एक दफा महलों में जाकर उसे मुझे देखन दीजे॥ ६॥
क्या देखे उस हरामजादी को महेलां जाकर के।
पटक पछाड़ो अभी जमीं पर मेरे सामने लाकर के॥
नहीं जहांपना ऐसा होगा काम समझ के करना है।
बदनामी दुनिया में फैले उससे हरदम डरना है॥ ७॥

॥ दोहा॥

बादशाह की लेर जा, भंडारीजी महल।
निरखत नजर जमाय के किंतु न दीसै मेल॥१॥

पूछताछ करके प्रकट, लौट आये दरबार।
मान अरज मारो मती, सत्य कहूं सरकार ॥२॥

ढाल पूर्व—

बुरे काम का लच्छन रती न दीसै,
महाराज जरा खामोस कराओजी।
मैं निर्णय करूंगा पूछ, दयाकर हुकुम दीरावोजी,
कहै बादशाय मैं निर्णय खूब कर डाला।
महाराज व्यर्थ क्यू देर लगावोजी,
फिर भी तुझे दू रजा इसीका पता लगावोजो।
अब बात खीससी गुम त्रिबुध से पूछे,
उत्तर दे होगये कालाजी ॥ ५ ॥

छंद तोटक

सब शास्त्र को हम हेरलियो जन,
पारन कूं जो जवाब दियो।
बिन भोग न जोग ये होत कभी,
फिर वेरही वेर ये क्या पूछो अभी ॥ १ ॥
नहीं तास सतोष हुआ सुनकै,
उठ आप चलै सिर को धुनिकै।

कोहू काम इन्दौर की ओर चले,
दल दोय सहसही साथ चलै ॥

तर्ज--चलित

इन्दौर पास इक ग्राम पादरुल भारी,
यहां भूधरजी महाराज बड़े तपधारी।
ठहर सदर बाजार वाणी विस्तारी,
सुधा सरीसी जेह सुनै नरनारी ॥ १ ॥
इधर सवारी लेय जावे भंडारी;
मुनि मुख मण्डल छवि देख मतवारी।
आये पूज्य के पास डेरा निज डारी,
फौजी ड्रेस से करी वंदन तिनवारी ॥ २ ॥
पूज्य कहै महाभाग नाम बतलाना,
किस उद्देश्य को लेके हुआ इत आना।
जो कुछ शंका होय हमें सुनवाना,
मैं दूंगा तुम्हें जवाब रखो मत छाना ॥ ३ ॥

तर्ज--हो सरदार थांको पंचरंग लेरचो

नाम खींवसी मांयरोरे जात भंडारी जान,
हो मुनिराज थैंतो मनरी बातां जाणी म्हारा श्याम।
जन्म भूमि जोधाणां री रे नृप जसवत दिवान,
हो गुरुराज थांरी वल्लभ लागे वाणी म्हारा श्याम ॥ १ ॥

इक सका दूरी करो रे बनूं चरणां को दास,
हो गुरुराज गर्भ बिन भोग रहे वा नाहि मोरा श्याम।
घणा जनाने पूछियोरे हुश्रो न हृदय उजास हो,
गुरुराज देवो पुख्ता बात बताई म्हारा स्याम ॥ २ ॥
गोल मोल कीजो मती रे दीजो स्पष्ट जवाब हो,
गुरुराज म्हारी विकसे मनकी कलियां म्हारा स्याम।
आगम साख दिराईये रे दूनो बढ़ै रवाब हो,
हो गुरुराज फैले सुजस प्रेम की फलियां ॥ ३ ॥
आप जिसा गुरु मेटियारे पुण्य प्रमाने आज,
हो बैरागी पुरुषों आछो जोग रमायो मोरा स्याम।
निर्लोभी निरलालची रे मुख पे नहीं मिजाज हो,
बड़भागी पुरुषों भोग दूर छिटकायो मोरा स्याम ॥ ४ ॥
एक मुझे समझावियों रे होगा लाभ अपार,
हो गुणवता स्वामी ज्ञान खजानो खोलो मोरा श्याम।
मरुधर में फैलायदू रे धर्म यही सुखकार हो,
पुण्यवता पुरुषां परिमित भाषा बोलो मोरा स्याम ॥ ५ ॥

ढाल पूर्व—

गुरुदेव कहै सुनो वैन सूत्र अनुसारे,
महाराज भंडारीजी झूठ न जाणोजी।
श्री स्थानायगजी सूत्र उन्हीं को पचम ठाणोजी,
रहे पांच कारण से गर्भ वीर प्रभू फरमाई।

महाराज फरक एक रतियन मानोजी,
निस्सकित जिन वैन श्रद्धा उनपै दृढ़ आनोजी ।
और भगवति बीच चले अधिकारा,
महाराज ज्ञान का अजब मसालाजी ॥अ०॥ ६ ॥

तर्ज—हां नार चल खास कचेड़ी

हा पांच कारण बतलावे, झूठ रतीना सत्य सुनावै ।
अलग २ से स्थान ज्ञान से आज गिनाओं जी ॥ टेर ॥
जहां जल मे नर स्नान करे है, पुद्गल वीर्य के जो तिरे है ।
उत बनिता बिन वस्त्र स्नान किये गर्भ रहावे रे ॥
अंगासी पे सोत उगारी, वनिता ऋतु मति सर्म बिनारी ।
गिरे वीर्य ऊपर से आन गर्भ रहे फिर पछताओरे ॥ पा० २ ॥
वस्त्र जगा कोई वीर्य पड़ा हो, रज आवित भगत्रहीं अड़ा हो ।
देव जोग है तुर्य पाचवा भोग कहावे रे ॥ पा० ३ ॥
भोग किया जो गर्भ रहेगा उनके तन में हाड़ बधेगा ।
बिना भोग के गर्भ अस्थि उनमे न दिखावे रे ॥ पा० ४ ॥
व्यर्थ वाक्य जिनके हो जावे, तो उनपे हम सीस कटाओ ।
युक्ति युक्त है वचन पूज्य भूधर फरमावे रे ॥ पा० ५ ॥

॥ दोहा ॥

सुख पाया भाया भला, फ़ुरमाया गुरु वैन ।
दरसाया आगम विसे, धन्य धन्य है जैन ॥ १ ॥

यदि सत्य हो जायगा तो स्वामी तुम तीर ।
ले समकित श्रावक बनूं बदे खीमसी वीर ॥ २ ॥

तर्ज—मारो श्याम सुन्दर चितचोर लियो रे ।

जिन बचना पे राच रयोरे, खीमसी को मन विकसाय गयोरे ।।टेर।।
इन्दौर को कास पौच पीछे लौट आये ।
बादसाय मणि हाल पूजको सुनाये ॥
विसमय बादसाय सुण भयोरे ॥ जिन० १ ॥
बादसाय कहे हाल सत्य नहि जाणू ।
तथापि तुम्हारी कैन स्हेंतो आज मानू ॥
वचन अनोखो सुणाय दियोरे ॥ जिन० २ ॥
मुनि को कथन कभी झूठ नहीं जासी ।
विश्वास दृढ़ मेरी बात रहजासी ॥
न्यायमग नाथ मैंने यही गहोरे ॥ जिन० ३ ॥
बाला महेलों बन्दोबस्त बादसाय कीनो ।
गर्भ काल पूरण हुआ तेही जन्म दीनों ॥
मुनि का कथन सत्य पाय लियोरे ॥ जिन० ४ ॥
हाड़ के बिना को बाल रुई के सो थेलो ।
हाथो हाथ मिल गई कहे मन्त्री एलो ॥
हर्षित हो गयो तसजियो रे ॥ जिन० ५ ॥

तर्ज—मेरे मोला बुलालो मदीने मुझे

ऐसे गुरु को मिलादे खोश मुझे ।
लगी लगन दरस की जताता तुझे ॥
कैसा अपूरव कथन कीना ज्ञान के भण्डार है ।
विरली ऐसी आतमाए इस जहां के मजार है ॥
उनकी वाणी का प्याला पिला दे मुझे ॥ ऐसे० १ ॥
खोजकर कोहनूर का हीरा ए कांसे पालिया ।
अब तो उसको मत छिपा तरसता मेरा हिया ॥
उनके कदमों में सर को झुकाना मुझे ॥ ऐसे० २ ॥
काजी मुल्ला ओलियों से ना पता कुछ भी चला ।
विद्वज्जनों से पूछने पर वो न वतलाया भला ॥
धन्यवाद तुमी आ जगाया मुझे ॥ ऐसे० ३ ॥
नाहक कतल हो जाति पल में, साहजादी लाड़ली ।
दुनिया में मेरी छाय जाती अपयस की गहरी बादली ॥
इस हित्या से आज बचाया मुझे ॥ ऐसे० ४ ॥
दिलदार अब ना देर कर सग फोज को ले जाइये ।
हर जहां से खोज कर के गुरु देव को झट लाइये ॥
उनसे मिले बिना नहि चैन मुझे ॥ ऐसे० ५ ॥

॥ चन्द्रायना ॥

हुकम उठा निज सीस भण्डारीजी जवै ।
छड़ी सवारी लेय त्वरित चाल्या तवै ॥

मिल गये हैं महाराज श्रद्धा धारण करी ॥
सीखे अपूरव ज्ञान करे सफली घड़ी ॥ १ ॥
उपजै अधिक इलोल तर्क बुद्धि खरी ।
षट्द्रव्यन की बात हिये मैं ली भरी ॥
अहो २ गुरुदेव भाग्य भल भेटिया ।
था उर बीच अज्ञान जरद ही मेटिया ॥ २ ॥

तर्ज—कमली वाले की

गुरुराज दासकी अर्ज आज सुन करके उनपै गौर करें ।
दिल्ली की तर्फ विहार करो, उपदेस सुनी भवजीव तरें ॥ टेर ॥
बादसाय खुद चाहता है दरसन जो आप दयालु का ।
वेमिसाल वह तड़फ रहा ।
दरसन की प्यास से जिगर जले ॥ गुरु० १ ॥
ये तो मुझको है मालूम अति कष्ट हुजूर उठायेंगे ।
पर लाभ मिलेगा बहुत बड़ा ॥
इसलिए महर की नजर करें ॥ गुरु० २ ॥
जिनवाणी का जनता को, सरबत ये घोल पिलाना है ।
जो पड़ी नैया अब भंवर बीच ॥
उसको जल्दी से पार करें ॥ गुरु० ३ ॥
आप देवन के देव हमारे आप प्राणों से प्यारे हैं ।
आप आनन्द की मूर्ति गुरुवर ॥
मेरे भव दु.ख दूर हरें ॥ गुरु० ४ ॥

समकित के दाता ज्ञाता, साता सब जीवों को देते हो।
जिसपे नाथ की कृपा होत॥
इक पल मे तस भडार भरें ॥ गुरु० ५॥

ढाल पूर्व--

गुरु मान वीनती कीना उधर बिहारा,
महाराज साथ में चले भंडारीजी।
कहे पूज्य रहो मत पास साथ नहि लहैं तुम्हारीजी,
जो कष्ट पडेगे सहन करेंगे सारा।
महाराज लार नहीं रोवे नारीजी,
कृत कर्मों का भोग भोगे बिन लगे न कारीजी।
सुन दंग रह गये ताम खीमसी जोलों,
महाराज बचन कहे धन्य दयालाजी ॥ ७॥

॥ दोहा ॥

आज्ञा नहीं संग रहन की, जान खींवसी जाम।
आगे या पीछे रहे तिन कोस तज गाम॥

तर्ज--अस्सी रुपया ले कलदार

भूधर पूज्य सुगुन भण्डार, कृपानाथ करते उपकार ॥ टेर॥
असल आचारी ममता मारी आप तिरै अरु तारनहार॥ भू० १॥

सहर भरतपुर स्याम पधारे, उतरे हैं सरघर की पाल ॥ भू० २ ॥
अज्ञ पुरुष मुनि मग नहि जाने, चौर जान करते तकरार ॥ भू० ३ ॥
क्यू इत आये ठहरे क्यूं इत, खबर राजमें करें अवार ॥ भू० ४ ॥
पूज्य कहे हम चोर नहीं हैं धरम प्रचारक सुनिये सार ॥ भू० ५ ॥
कैसा धर्म प्रचार करो तुम, हमें सुनादो धर के प्यार ॥ भू० ६ ॥
दयाधर्म पर धरम देशणा पूज्यराज देते सुखकार ॥ भू० ७ ॥

तर्ज--शिक्षा दे रहीजी हमको रामायण अति प्यारी

आरम्भ क्यू आदर्यो जीके, प्यारे बढ़े पाप को भार ॥ टेर ॥
झूठा झगड़ा है इस जग का, मतलब की मनुहार । बिछड़त
वार लागे नहीं वाला, निरखो नयन उघार ॥ आरम्भ १ ॥
विविध तरह की हिंस्या करते अल्प जीवन के काज ।
हाथी घोड़ा माल खजाना, सग चले नहीं राज ॥ आरम्भ २ ॥
मौत आया ते कौन छुड़ावै, खड़ो रहत परिवार ।
जीव अकेला परभव जाता, कर्म सुभासुभ लार ॥ आरम्भ ३ ॥
सुन उपदेश सभी हरपाये, नागरिक नरनार ।
भक्त बने हैं गुरुदेव के करते सेवा अपार ॥ आरम्भ ४ ॥
अग्रवाल और पल्लीवाल कई समकित लीनी धार ।
नारायणजी दीक्षा लीनी, छोड़ सकल जजाल ॥ आरम्भ ५ ॥
वहां से विचरत शहर आगरे, धर्म की ध्वनि लगाई ।
दिया परिषह तुर्क आनके समता नाथ रमाई ॥ आरम्भ ६ ॥

मास कल्पवां करके आगे, कदम रंजा फरमाया।
तीन कोस दिल्ली से आगा पूज्य भूधरजी आया ॥ आरम्भ ७ ॥

॥ दोहा ॥

तरुतल पूज्य विराजिया, इत भंडारी आय।
नेह धरी वन्दन करै, कहै पूज्य महाराज ॥१॥
आज कहां से आविया, खबर लगी किम तोय।
कहै खीमसी साथ नाथ के, रह्यो दूर डर जोय ॥२॥

तर्ज—लावणी

पूज्य भूधरजी महाराज गुणाकर भरिया,
आज कम काटवा काज किया केसरिया ॥ टेर ॥
कर वन्दन तिनवार खीमसी जावे,
बादसाय से हाल सकल सुणावे।
सुन बादशाय के अमित खुशी तन छावे,
पुलकित होकर के प्रत्युत्तर फरमावे।
साबास खीमसी काम अच्छा ये करिया ॥ पू० १ ॥
बड़े ठाठ के साथ बधाके लाओ,
सदर बजारां बारेदड़ी ठहराओ।
भण्डारीजी अधिक लियो ऊमावो,

धर्म प्रभावन काज साज सजवावो।
जोरदार ले ठाठ सामा सचरिया ॥ पू० २ ॥
आतो लवाजम देख पूज्य घिर जावे,
भण्डारीजी आन अरज गुजरावे।
नहिं आप काज आरम्भ हुजूर सुनावे,
हम हैं, संसारी कुछ पोजीसन चावें।
पूज्य कहे नहीं चलै लगे हम किरिया ॥ पू० ३ ॥
वाजे गाजे बन्द किये तिनवारी,
गुरुदेव पधारे सैर लेर सुखकारी।
दौड़ २ आ दर्स करे नरनारी,
मोहन गारी छविसात रसवारी।
बादसाय भी आय चरण में पड़िया ॥ पू० ४ ॥
सायजादी निजमात सगाते आवे,
कर बन्दन लिए सपथ अभक छिटकावे।
पूज्य प्रतापे जिणवाणी बरसावे,
भव्य भ्रमर गुरु पद पंकज लिपटावें।
बहुत हुआ उपकार सुनी उन विरिया ॥ पू० ५ ॥

॥ ढाल पूर्व ॥

केई समकित धारी मिथ्या मत तज करके,
महाराज धरम में हो गया पक्काजी।
बादसायने अभय दान का लिखा पट्टाजी,

जीवाजीव का जानपना कै कीना महाराज,
थोकड़ा बहुजन सीखाजी।
सब जन हो रये मगन गुरु तो मिल गये नीकाजी,
धर्म दलाली करे भण्डारी भारी महाराज,
पिये भक्ति रस प्यालाजी ॥ अहो० ॥

तर्ज--मोहन वांसी वारे

जैन धरम के झंडे भूधर पूज्य दयाल ॥ टेर ॥
चूप धरी दिल्ली चोमासा, करके धर्म को खूब प्रकासा।
कीना ज्ञान उजासा भूधर पूज्य दयाल ॥ १ ॥
जैन जैनेतर आने लगे हैं, उनके आतम भान जगे हैं।
षट्काया के रक्षक ॥ भूधर० २ ॥
पचा चार पालने वाले, दोष दयालू दूरा टाले।
जैणा से मग चाले ॥ भूधर० ३ ॥
मुँहपति मुखडे ऊपर बान्धी, मेट देई भव भ्रमनी आंधी।
प्रीति सब से सांधी ॥ भूधर० ४ ॥
सावज भाषा दूर निवारी, न्याय युक्त बोले सुविचारी।
परिमित वल्लभकारी ॥ भूधर० ५ ॥

॥ दोहा ॥

खंतधरी कहै खीमसी, मरुधर करन विहार।
अवसर जानी पूजजी कर लीनी स्वीकार ॥१॥

चतुर्मास कर चालिया; मरुधर को महाराज ।
पौंचावन श्री पूज्य को, आयो अखिल समाज ॥२॥

तर्ज--भूंडोलालचियो

पूज्य पधार्या विहार करीने, लार खीमसीसार,
गुरु गुण भारियारे हुकुम दियो बाईस रजवाड़ों,
बादसाय तिनवार ॥ गु० १ ॥
उधर पधारे पूज्य भूधरजी कष्ट देवेगा कोय,
सारा सुण लीजो हुकुम यही दिल्लीपति का,
दण्ड मिलेगा सोय ॥ गु० २ ॥
आया मरुधर सैर मेड़ते, सतरा अस्सी साल
पूज्य धन्नाजी कर सथारो, कर गया वांपे काल ॥ गु० ३ ॥
कर बिहार कालू गुरु पौंचे, उतर्‌या खास बजार ।
ओसवाल अरु घणा श्रावगी, लीनी समकित धार ॥ गु० ४ ॥
लेते अतापना नदी बीच मे मास ज्येष्ठ को जान ।
क्षमा पुंज है किसा पूज्यजी, सुणजो धरके ध्यान ॥ गु० ५ ॥

तर्ज--पंजाबी

गम खाते वीर दुलारे, नहिं कायर नर को काम है ॥ टेर ॥
इक जाट उधर से जावे, इक दिन का जिकर सुनावे,

लौटत मुनि को लख पावे, वो जाट विचारी ताम है।
बनियां का काज सुधारे ॥ ग० १ ॥

बनिया पै धान अपारा, सरिता में ध्यान कर डारा,
बरसा को रोकन वारा, दु:ख देंगे मुल्क तमाम को।
इसलिए इन्हीं को मारें ॥ ग० २ ॥

कांटों की पाथी लाके, मुनिवर के पास बिछाके,
अज्ञानी रीस में आके, पग पकड़ घसीटे ताम है।
फिर फरसी की सिर मारे ॥ ग० ३ ॥

खलके हैं खून के नाले, एक मनुष्य दूर से भाले,
बाजार बीच कह डारे, मुनिवर तो गुण के धाम है।
क्यूं जाट फोड़ा तस घाले ॥ ग० ४ ॥

महाजन सुनकर रीसा के, कहा हाल रावले जाके,
हवलदार उसे बुलवाके, दियो पकड़ खोड़े मे जाम है,
जूतां से खाल उतारे ॥ ग० ६ ॥

॥ ढाल पूर्व ॥

पूज्य ध्यान पार गांव में आवे,
महाराज चले है खून की धाराजी।

कांटे भागे सब बदन, भीज गये कपड़ा साराजी,
मुनिराज बदन को देख केई भक्तां के महाराज छूट गई आंसू धाराजी।

कैसा सहा इन कष्ट धन्य इनका अवताराजी ।
उतरीया तिन स्थानक जाय किया उपचारा,
महाराज परीसय परा करालाजी ॥ अहो० ६ ॥

तर्ज—पपैया काहे मचावे सोर

क्षमा सम धर्म नहीं जग ओर,
क्रोध को काढ़े कान मरोर ॥ टेर ॥
पूज्यराज के कान भनक पड़ी, उड़ उन्हीं के ठोर,
भक्तजनों से पूज्य कहे क्या जुल्म किया तुम घोर ।
जाट को लाना बन्धन तोर ॥ क्ष० १ ॥
सभी कहे हे नाथ दिया तुमें, जबरा कष्ट झकोर,
जैसी करेंगे वैसी भरेंगे सुनो स्याम सिरमोर ।
उन्हें क्यू छुड़ा रहे प्रभु ओर ॥ क्षमा० २ ॥
पूज्य कहे जोलोंना छूटे, देंगे आहार हम छोड़,
बचन सुनता सब ही भक्तों के फीके पड़ गये तौर ।
कैसे गुरु क्षमा पुष्प के भौंर ॥ क्षमा० ३ ॥
जाय रावले बात कही सब, हवलदार पिनदौर,
पूज्य पासयो आय पयपै, करें अरज पे गौर ।
सजा के काबिल है वो चोर ॥ क्षमा० ४ ॥
पूज्य प्रकासी साह दिया मुझ, करके कृपा की कोर,
जान कृपालु चरण कमल में, सकल नमें कर जोड़ ।
जाट को लाये पूज्य पै छोड़ ॥ क्षमा० ५ ॥

॥ दोहा ॥

पड़्यो चरण गुरुदेव के, वो रोवत तिनवेर ।
माफ करो महाराज सव, जे दुख दीनों जैर ॥१
पूज्य कहे आनन्द है मत कर सोच लिगार ।
मद्य मांस छिटकाय दे, भरें रहे भण्डार ।२

तर्ज—मोहन गारोरे

धरम दीपाया है आदर्श क्षमा का पाठ दिखाया है ॥ टेर ॥
कुशालपुरा होते स्वामीजी सोजत आया है ।
मिल मिथ्यात्वी लोग भय का स्थान वताया है ॥ धर्म० १ ॥
गत नाथ को दिया परिसह, धीरप से समजाया है ।
नहिं मरणे से लोग अचम्भा अद्‌भुत पाया है ॥ धर्म ० २ ॥
इते खींवसी आप पधारे, पूज्य को सीस झुकाया है ।
सुलभ हो गये बहु श्रावक गण, हर्ष मनाया है ॥ धर्म० ३ ॥
चार भुजा का मन्दिर तुर्कों, मस्जिद रूप वनाया है ।
उसी स्थान को खास भण्डारीजी, स्थानक ठाया है ॥ धर्म० ४ ॥
समत सतरे साल इकयासी परवाना लिखवाया है ।
मोहल्ले कोट के जैन धर्म का, रंग सवाया है ॥ धर्म० ५ ॥
जैन धर्म का मर्म मरूधर, घूम २ समझाया है ।
रघुपति जयमल कुशल आदि नव शिष्य सवाया है ॥ धर्म० ६ ॥

वट साखा ज्यूं सिस्य सुयस, परताप जगत प्रगटाया है।
चौथा आरा की ऐह बानगी नजरां आया है॥ धर्म० ७॥

तर्जः—आज आनन्द घन जोगी सर आया

क्रांतिकारक धरमदासजी जैन की जोति लगाई रे लो।
शिष्य निन्यानूं जिनका नीका एक से एक अधिकाई रे लो॥११॥

धर्म दिवा कर पूज्य भूधरजी॥ टेर॥

सम्प्रदाय बावीस जिनों की, भारत में फैलाई रे लो।
स्थानकवासी धर्म स्थापियो, जबरो जोर लगाई रे लो॥धर्म० २॥
तस्सिस धन्ना धन्ना मुनि से धर्म रथ्य का धोरी रे लो।
अन धन माया प्यारी बनिता एक पलक में छोड़ी रे लो॥धर्म०३॥
तस्सिस भूधर भूधर के सम आत्म धर्म अधिकारी रे लो।
किंचित महिमा उनकी गाई अल्प बुद्धि छे म्हारी रे लो॥धर्म०४॥
रघुपति टोडर इन्द्रराजजी भोपत गिरधर सारी रे लो।
धर्मचद मुनि मान तना, सिस, बुधमलजी जयकारी रे लो॥धर्म० ५॥
तस पद पकज अलि मुनि मिश्री, गुरु कृपया गुन माला रे लो।
जोड़ी सो सज्जन मन भाई काटे कर्म का जाला रे॥ धर्म० ६॥
तुर्य भुज स्वामी कथन तै ए अधिकार बनाया रे लो।
उन्नीस सौ छिन्नू केसरसिंह के, गुड़े रग सवाया रे लो॥धर्म०७॥

ढाल पूर्व

प्रथम श्रावण शुक्ल ग्यारस जल ससि,
तनय महाराज पहर परथम सुखदायीजी।

निर्मित कियो व्याख्यान सभी को मगलन दायीजी,

जोधाणे के जग जोत दानचन्द भण्डारी।

महाराज भूधरजी की ख्यात दिखाईजी,

तस अनुसार यह सज्जनों मैंने बनाईजी।

न्यूनाधिक को मिथ्या दुस्कृत्य म्हांने,

महाराज पूज्य करे मगला मालाजी ।।अहो० १०।।

४

जीवन चरित्र

अर्हं

श्रीमज्जैनाचार्य
पूज्य श्रीरघुनाथजी महाराज

का

जीवन-चरित्र

॥ दोहा ॥

अखिल गुणों से ओपता, अजर अमर अविकार ।
सिद्धों को सादर पणें, वन्दू वारम्बार ॥ १ ॥
जय जगदम्बा जिनगिरा, अमित महर कर आप ।
मोय विमल वरदान दे, जपूं अहर्निश जाप ॥ २ ॥

सकल जीव रक्षक सदा, कदा कदै ना कूर ।
गाहक सतगुरु होय के, भरो ज्ञान भरपूर ॥ ३ ॥
प्रबल परीषह सहन कर, निपट धर्म निर्ग्रन्थ ।
दीपायो दुनिया महीं; रघुपति पूज्य महन्त ॥ ४ ॥
तास सुजस तरिणी सहिस, रसिक सुनो धर रंग ।
कहन कथा मो उर अथक, उमड्यो आज उमंग ॥ ५ ॥

ढाल १ ली

तर्ज—मल्लिजिन बाल ब्रह्मचारी रे म० ॥

पूज्य श्री रघुपति जस धारी रे, दीपायो जिन धर्म जगत में आछा अवतारी ॥ टेर ॥

सोजत शहर देश मरुधर है मुल्कों में जहारी ।
बसे वर्ण अट्ठारा वारू, सुखिया नरनारी ॥ पूज्य० १ ॥
नथमल साह खांप वल्लावत, सोमादे नारी ।
शीलवती पति भक्ता गहरी, प्रीतम ने प्यारी ॥ पूज्य० २ ॥
अन धन मान मुकरवी पुर में, जोड़ी जसवारी ।
कुमी नहीं है किणी वातरी, माने जन पारी ॥ पूज्य० ३ ॥
सीतापति को सुपन विलोक्यो, सुन्दर सुखकारी ।
सत्तरासे छासट सुदि पंचम माघ मास वारी ॥ पूज्य० ४ ॥

त्रसज्यो पौमणि नन्दन नेको तनुछवि मतवारी।
प्रथमा ढाल रसाल वर्णवी, मिश्री' अणगारी ॥ पूज्य० ५ ॥

॥ दोहा ॥

कर मोच्छव जगजस लियो, पिता परम उल्लास ।
अभिधान रघुनाथमल, दियो सफल कर आस ॥ १ ॥

ढाल २ जी

तर्ज–मोहन गारोरे

लागे प्यारो रे सोमादे नन्दन, जग उजियारो रे ॥ टेर ॥
रस भरिया है नैन रगीला मुखड़ो कामन गारोरे।
गोरवर्ण लच्छन कर लहकै, जबर सितारो रे ॥ लागे० १ ॥
लटकाली चाली मतवाली, दीपे खूब दीदारो रे।
वाहलो लागे सज्जन ने, ज्यों हार हियारो रे ॥ लागे २ ॥
हायो हाथ हुलरावत होगये, सप्त वर्ष लो सारो रे।
पड़वा को पंडित पै उद्यम, करे मभारो रे ॥ लागे ३ ॥
विमल बुद्धि अरु विनयवान को, आयो ज्ञान अपारो रे।
होनहार आदर्श बाल यूं कहे, पुर सारो रे ॥ लागे ४ ॥
सोला बरस की ऊमर होगई, पितु कहे काज सभारो रे।
ढाल दूसरी होशियारी सूं नाम बधारो रे ॥ लागे ५ ॥

॥ दोहा ॥

लायकता से लालजी, लीनों काम सम्हाल ।
वाह वाह दुनिया वदै, बुद्धि किसी विशाल ॥२॥

ढाल ३री

तर्ज--लावणी

विनयवान विद्वान विचक्षण, दक्ष दयालु गुणधारी ।
मोहनगारी सूरत प्यारी, देख खुशी है नर नारी ॥ टेर ॥
मतवारी, यौवनवय वांरी गहरापन अरु हुशियारी ।
अवसर पै मीठी पुनि परिमित, बोली बोलै हितकारी ॥
साह कुन्दनमल बसे शहर में, वैद नैता जाति ज्यांरी ।
रत्न कवर है कन्या कोमल, रूप चूप शोभा भारी ॥
चंपकवर्णी बहुत सलूनी, कमलाक्षी कामनगारी ॥ मोह १ ॥
नथमाल सुत से कर सगपन, शाह कुन्दनमल हरषाये ।
बड़े भाग्य से ऐसे जवाई, आज अहो मैंने पाये ॥
बरस सतरवां लिया कुंवरजी आनन्द में दिन जाते हैं ।
एक दिन बैठा सदर बजारां मित्र मरण सुनपाते हैं ॥
सुनकर सोच कियो अति रघुपति, तन क्षण भंगुर दुखकारी ॥२
जनम मरण का दुख जग जालिम कैसे लगावेंगे कारी ।
मित्र मंडली से यूं पूछे कहदो मित्रों हितकारी ॥

उपाय बतादो अमर होन का, अमर होन मनसा मारी।
सच्चे दिल से पूछ रहा हूँ, साफ झूठ दुनिया सारी।
इसीलिये अब अवश्य होऊंगा झूंठ नहीं सोगन थांरी ॥मोह ३ ॥

॥ दोहा ॥

कहे मुलक सब मित्रगण, कीनों बड़ो विचार।
अमर होवणो जगत में, सखे! जान दुश्वार ॥१॥
दुर्बल ने दुर्लभ सकल, सहल सकल ही शूर।
याते तुम बतलायदो, करसूं काम जरूर ॥२॥

ढाल ४थी

तर्ज—बक्षीजीरा गीतरी।

अचम्भो सुण सब कू आयो रे २ अमर होन की आशा राखे सोमादे जायो ॥ टेर ॥

खिलवत बस सब होय के सरै, इमी निकाली चाल, सज्जनों।
इसी निकाली चाल, चामुंडा माता के चरणों शीश चढावोला ला० ॥ अचभो १ ॥

अमर करेगी ईश्वरी सरे, फरक जानजो नाय, सज्जनों०।
किन्तु काम बणे ओ कैसे आलोचो मन माय ॥ अचम्भो २ ॥

एकाएकी लाड़लो सरे शाहतणो घरचन्द सज्जनों० ।
ब्याह तणी तो हो रही त्यारी, करो न ऐसो द्वन्द ॥ अचम्भो ३ ॥
जोड़ी जुगती मिल गई सरे, सकल सरावे लोग सज्जनो० ।
माया माणो मोज से सरे बालपणारा भोग ।। अचम्भो ४ ॥
बातों इसी न काढ़णी सरे, समझवान छो आप सज्जनों० ।
दाय नहीं आवे नादानी, मित्र करीजो माफ ।। अचम्भो ५ ॥
रघुपति कहे सब झूठा झगड़ा, बिजनस देसू सीस सज्जनों० ।
हर्गिज बात दूजी नहि मानू, पूरू मन्न जगीस ॥ अचम्भो ६ ॥
इति कहि उठ चालिया सरे, सीस चढावन ताम सज्जनों० ।
डरसां मित्र सकल ही मनमे होजासां बदनाम ॥ अचम्भो ७ ॥

॥ दोहा ॥

हाथ पकड़ रघुनाथ को; कहे मित्र की रोल ।
ऐसे अमर न हो सके, लो निज हिय में होल । १॥
रघुपति रहे लाखों कहो, मैं मानूं नहीं एक ।
जो कही सो जचगी हिये, वारूं धरी विवेक ॥२॥

॥ चन्द्रायना ॥

उठ चाल्या रघुवीर इति कहकर जबै ।
सोचे मित्र समाज कांही, करनो अबै ॥
दौड़ जलद नथमाल जहां इसड़ी कही ।
जगदम्बा को सीस चौढे रघुपति सही ॥

ढाल ५मी

तर्ज–ख्याल की

इसड़ी क्यू आई धुन्धी आपने, सुन पुत्र हमारा। टेर ॥
सिकल विकल सुन होयके सरे जरदजात के पास।
आडा फिरिया आपके सरे, पभणे नाख निसांसजी। सुन १ ॥
बिन कारण बदनाम करो थें, समझवान कहलाय।
घर हानि है जग में हांसी. ओ आंखीणों न्यायजी ॥सुन २ ॥
जगदम्बा पे जायके सरे, मरसी दुखियारी।
कमी नहीं किण बातरी सरे सपत बहुसारी ॥ सुन ३ ॥
नकटा निर्लज अकल बिनारा, महा हरामी लोग।
सो मिलके थाने बहकाया. ऊठे यारे रोगजी ॥ सुन ४ ॥
खबर उन्हांरी पाड़सूं सरे, एक बार घर चाल।
माता थारी झुरे झूरना, जीव थयो बेहाल ॥ सुन ५ ॥

॥ दोहा ॥

रघुपति कहे कर जोरिके, आप सुनो अरदास।
घर नहीं चालूं जा बसूं अम्बा के आवास ॥
अमर होन की आसना उमड़ी हिया मंजार।
दूजा नहिं भरमाविया, मेरा खास विचार ॥

ढाल ६ठी

तर्ज—मांड

मरना को डर लागियोजी तात सुनो अरदास।
अमर होन याते जावादो, अम्बा के आवास हो॥ १॥
या अरज हमारी, तात तिहारी चाहूं शुभ आशीस॥ टेर॥
ऊरन कैसे हो सकू जी, उन्नत तुम उपकार।
इकतारी छै आपसूं रे, जाणूं जिन करतार हो॥ या अरज॥
कष्ट विना सुख नहीं मिलेजी, इतनो कांहीं विचार।
अमर करेगी इश्वरी रे, पर्चा पूरन हार हो॥ या अरज॥
दिलगीरी लख आपरी रे मैं तो होगयो दंग।
बिन कारण क्यू छागई रे, आय उदासी अंग॥ या अ० ४॥
आज तलक कीनो नहि कोई, आज्ञा के बिन काम।
ओही कियो मनरे मते, सरे माफी करदो श्याम हो॥ अ० ५॥

॥ दोहा॥

जावादे नहिं जात को, ऊभा उनको घेर।
इतेक आया सकल ही, सज्जनगण तिनवेर॥
खलकत खासी मिलगई, मचरही हाक हिलोर।
शान गमावै सव मिलि, जे जन कीधी रोल॥

ढाल ७ मी

तर्ज--बिना रघुनाथ को देखे

ऐसी क्यों रोल करते हो शरम तुमको न आती है।
लगाया कालजे दवको, छाती भर भर के आती है ॥ टेर ॥
अरे इसान होकर के, होश हैवान सा छाया।
तुम्हीं क्यों ना मरो जाके, उन्हें क्यूं क्या सिखाया है ॥ १ ॥
अगर ये नहीं मानेगा, हमारी क्या गति होगी।
कहने में होश नहीं रखते, अकल क्या भांग खाती है ॥ २ ॥
श्वसुर आदि सकल मिलके, कुवर को रोक रखा है।
किन्तु वह नहीं रुकने का, दुनी सब सिर हिलाती है ॥ ३ ॥

ढाल ८ मी

तर्ज--जगत गुरु त्रसलानंदन वीर

रघुपति कहे सज्जन प्रतिजी, मुखड़े मीठाजी बैन।
जावादो हठ छोड़दोजी, जो व्हो सांचा सैण ॥ १ ॥
हमारी अरज करो मजूर ॥ टेर ॥
मत दग्धो मित्रों भणीजी, चूक रति भर नाय।
मैं म्हारा मनसूं कियोजी, होवन अमर उपाय ॥ कृपा २ ॥
तड़क कहे सारा जणाजी, अकल गई किन गाम।
सामा बोलत आपने जी, शर्म न आवे आम ॥ कृपा ३ ॥

जावादो किस विध मरवा आज ॥ टेर ॥
आज तलक सुणियो नहीं जी, मांड्यो व्यर्थ तुफान।
सीधी तरह चालो घरेजी, क्या समझो नादान ॥ जावादो ४ ॥
वातां इसी नहि काढ़नीजी, दुनियों लोग दुराय।
सज्जन सरमिंदा हुवेजी; ए वातां घर जाय। जावादो ५ ॥
बिगड़ गया छो लाड मे जी, छोडी कुलवट लाज।
दांता लागे खीचड़ीजी, जे राही समाज ॥ जावादो ६ ॥
नीचा नैन करी जवैजी बोल्या रघुपति बोल।
वीरां केरी वातड़ीजी, आछी एय अमोल ॥ जावादो ७ ॥

कवित्त

आप हैं सज्जन सिरमौर जी,
हमारे सारे कथन कबूल करू' कौन नई वात है,
किन्तु मरवा को डर, जग्यो है जिगर बीच,
कीच के समान दूनी झूंठ ही दिखात है।
बरसै जो अपार मेह बसत बहार छावें,
पैन करै वृच्छ हु के आत नहीं पात है।
वैसे आप एक नहीं हमें तो हजार कहो,
पीछे पैर हटे नाहि आज रघुनाथ है ॥ १ ॥
आज लों न कीनों काम कुल को कलक लगे,
बदनामी हु के पंथ पैर मैंन भर्यो है।

वस्तुत. सज्जन को स्वभाव कटु होत याते,
जेते कहे तेते सुनें क्रोध नहीं कर्यो है।
मित्र को मरण श्रोन सुनि गौन अब थान मेहिं,
नहीं कर्यो भक्त केई ध्यान धर्यो है।
अथवा अमर आप करें तो न जाऊं,
कित नहीं तर रुकूं नाहीं एकाचित्त धिरियो है॥ २॥

॥ दोहा ॥

प्रत्युत्तर ना दे सके चुप पकड़ी सब साथ।
होले २ हालिया रसिक पणै रघुनाथ॥

ढाल ६मी

तर्ज--क्या मजा देते हैं यार-तेरे बाल गुगरवाले

कैसे वीर पुरुष रघुनाथ अपना नियम निभाने वाला।
अपना नियम निभाने वाला देखो सोभादे का लाला॥ टेर॥
दुनिया रही देखती सारी, किस की लगी एक नहीं कारी।
धन २ कहते हैं नर नारी पार बिन पुरुषारथ कर डाला॥ कै० १
सज्जन सारा आंसू नाखै, कहो अब जाता ने कुण राखे।
नथमल शाह दीनता दाखै, है कोई इसे राखने वाला॥ कै० २॥
इतने गुण भूषित गुरु राया, भूधर पूज्य गोचरी आया।
देखि रघुपति मन हर्षाया, उनके चरण नमन कर डाला॥ कै० ३

पूज्य श्री रघुनाथ से पूछें, कहिये लाल हाल ये सूं छै।
तन पर तुझ आतुरता क्यूं छै, हम से छोड़ कहो जंजाला ॥कै० ४
पूज्य से बात सकल कहडारी, बोले मधुर ध्वनि मतवारी।
कहता मिश्रीमल अनगारी, ये है जैन जगत उजियाला ॥ कै० ५ ॥

ढाल १०मी

तर्ज—कांटो लागो रे देवरिया

किसने भरमाया बालूड़ा तुझको कहदे हमको बात।
कह दे हमको बात, कैसे अमर करेगी मात ॥ टेर ॥
इन्द्र, चन्द्र, हरिहर, नर राया, काल जाल ते कौन छुडाया।
गजब धाक से नहीं घबराया, इस्यो न जायो मात ॥ कै० १ ॥
नर सुर खुद विद्याधर मरता, काल हुक्म दुनिया पर चलता।
आया मिनट एक नहीं टलता, रक थवा वो नाथ ॥ कैसे० २ ॥
अमर करन शक्ति नही मारी, जानू मैं तरकीबां सारी।
अमर होने की बूटी प्यारी, चल दिखला दू साथ ॥ कैसे० ३ ॥
दिव्य छटा मुनिवर की निरखी, हृद कलियां रघुपति की हरखी।
परखी वस्तु सार प्यार धर आप पसारे हाथ ॥ कैसे० ४ ॥
दो करतारी मानूं थांरी, बार बार जाऊ बलिहारी।
मुनि कहै सत्य जबान ग्यान से, सुधरे सातों धात ॥ कैसे० ५ ॥

॥ दोहा ॥

दया पाल दाखै मुनि, जां उतर्‌या तेहि ठौर।

समजाऊं सारी तरह, श्री जिन ग्यान झकोर ॥
शाह आदि सारी दुनी, पूज्यप्रते धर प्यार ।
कहे समझा दो हे प्रभो, मानेंगे उपकार ॥

ढाल ११मी

तर्ज—थियेटर

बोले पूज्य दयाल सुनो शाहकुमार,
तुझे समझा के आहार फिर मैं करसां ॥१॥
आये स्थानक में सब मुनि साथे,
चर्चा सुचारू चली तिवार ।
बोले शाहकुमार, आप ईश्वर अवतार,
जनम मरण निवार तेरा दास दास दास ॥१॥
देते पूज्य सुज्ञान, ईश्वर कर्ता न मान,
कर्ता कर्म पिछान यही जिनवाणी ।
कहे रघुपति मैं कैसे मानू, सरल चराचर में,
भगवान् विश्व रचाते आप प्रभु माया अपाम,
धर्‌या उन्हीं का जाप टरै पाप पाप पाप ॥२॥

ढाल १२ मी

तर्ज–राधेश्याम

ईश्वर कर्त्ता धरता है, सब सुख दु.ख का देने वाला ।

एक पल मे जग परकाश करें, और पल में पचादे अंधियारा ॥१॥
लय परलय सब हाथ उन्हीं के, घट २ का अंतर्जामी।
जासु कृपा बिन जग भटके, अरु दया होत लहे विश्रामी ॥२॥
वोही जगत का है राजा परजा, और जगत के सभी।
ईश्वर हुक्म अतिरिक्त वृच्छ का एक पत्र नहीं हिलें कभी ॥३॥
ईश्वर कर्त्ता सब धर्मों के, चौड़े ग्रन्थ पुकारे है।
अनन्त शक्ति है ईश्वर की कहो कौन जबर उसको टारे ॥४॥
यह बात निराली अपने मुख से, स्वामिन क्यों फरमाते हो।
मेरे ख्याल से माफ करें पिन उलटी अकल लड़ाते हो ॥५॥
वोही कर्म बनाता है अरु वोही प्रदाता है फल का।
उसके बिगर कुण बता सकै, जो हाल बीतेगा यहां कल का ॥६॥
यह सुन करके पूज्य राजने, ऐसा वचन सुनाया है।
मधुर ध्वनि गम्भीर गिरासे, सुन रघुपति हर्षाया है ॥७॥

ढाल १३ मी

तर्ज–लावनी

ईश्वर को कर्ता कैसे मान रहे लाला,
वह निराकार चिद्रूप सभी से निराला ॥ टेर ॥
है राग द्वेष से रहित, कर्म नहीं काया।
फिर कैसे खलक का ख्याल उसीने रचाया ॥
लेना देना उसे नहीं रचै क्यों माया।

है आनन्द घन महाराज निगम पद पाया।
नहीं जन्मै अरू मरै तजै जंजाला ॥ ईश्वर ॥ १
केई सुखी कई दुखी रक केई राजा।
कई निर्धन धनवान बदन में ताजा।
केई पण्डित विद्वान् मूरख कै जाजा।
केई रोवे दिन रात, बजे कित बाजा।
कई बने हैं चोर केई रखवाला ॥ ईश्वर ॥ २
केई जीव दया प्रतिपाल, जीव केई मारे।
क्या! ऐसा रचा है ख्याल प्रभू जग सारे।
ये ईश्वर को तो दोष व्यर्थ दे डारे।
सब कर्मों आधीन मिले फल प्यारे।
फिर भी मत कहना वही बनाने वाला ॥ ईश्वर० ॥ ३
चोरी करता चोर दण्ड नृप दाता।
कई ऐसा युक्तियें आय हमें सुनवाता।
पर सभी जगत मे रचे पोल का खाता।
जैसे करेंगे कर्म वैसे फल पाता।
ज्यों दारु पीने से बन जाते मतवाला ॥ ईश्वर० ॥ ४
करता धरता कर्म भरम तज भाई।
आठ प्रकृति मूल प्रभू फरमाई।
विविध बधरू वेद विपाक दिखाई।
सुख दुःख उस आधीन उदय जब आई।
इस विध भूधर गुरु किया उजवाला ॥ ईश्वर० ॥ ५

॥ दोहा ॥

ऐसी चर्चा के चलत, वीत गये दिन तीन ।
रघुपति को भूधर गुरु, कियो जैन परवीन ॥
रंजित मन रघुपति त्वरित कर वंदन कहे एम ।
हे प्रभु तव पद कमलते, प्रथक् रहूँ अब केम ॥

ढाल १४मी

तर्ज—हां रे लाला विछिया थारे वाजणा

हां रे ए तो इतनी कही रघुनाथजी,
चट आया निज घर चालरे लाला ।
मात पितु चरणा नमि, कहे वारु बचन विसाल रे लाला ॥ १ ॥
असल वैरागी एहवा, जग जाण्यो जहर समान रे लाला ।
काया माया कर्मी, चंचल ज्यूं पीपल पान रे लाला ॥ टेर ॥
कृपा करो मात पिता, अब आज्ञा दो फुरमाय रे लाला ।
सतगुरु पे अब लेवस्यूं शुद्ध संजम जगछिटकाय रे लाला ॥अ० २
हांरे लाला वचन सुनि बिलखाथया ज्यांरे आंसू ढलक्या नैन रे ला.
एक छोड़ी तो दूसरी, जिद्द पकड़ ली सैन रे लाला ॥ अ० ३ ॥
हारे लाला सिर चुंबन कर मातनी, पाछ्या बोल्या बोलज एमरे ला.
तू बछ आंधा लाकड़ी, मांने छैय दिखावो केम रे लाला ॥अ ४॥

हांरे लाला सज्जनता सारीतरे, थैं तो निपुण निभावन हार रे ला.
व्याह करो अब रग सू , नाहीं करनो अब नाकार रे लाला ॥अ. ५॥
हांरे लाला स्वामी भकड़ा जोगड़ा, जांरी सगत है दुःख दायरे ला.
हांरे लाला कई अटकै उणरे अहा, लागी म्हांरे कलेजे लायरे ॥अ. ६
हांरे लाला तू कुल मण्डन मांयरे. प्यारे तूं कुल चन्द रे लाला।
भक्ति करो भावीतनी, थांरे अधिक हुवे आनन्द रे लाला ॥अ० ७॥

ढाल १५मी

तर्ज—अरनक मुनिवर चाल्या गोचरी

यू मत बोलो रे मोरा मातजी रघुपति कहे कर जोड़ीजी।
काया माया रे झूठी जाणजो, सग चले ना कोड़ीजी ॥ यू १ ॥
आज्ञा आपो जननी रंग सूं छिन लाखीणी जावेजी।
भोग रोग सम जिनवर भाखीया, दमड़ी दाम न आवेजी ॥यूं २ ॥
भव २ भमियो रे पाप प्रसादथी, पायो दुःख अथागोजी।
सुरतरु सरिसा सद्गुरु भेटिया, आज खुल्या मुज भागोजी ।यू ३।
घर रेवण नहीं इच्छा मांयरी, संजम पथ सुखकारीजी।
नारी प्यारी मतलब की सही, आखिर जहर कटारीजी ॥ यू ४ ॥
फसू न हरगिज झूठा फन्द में, नाहक मोह करावोजी।
महर नजर कर नदन ऊपरे, आज्ञा वेग दिरावोजी ॥ यूं ५ ॥

॥ दोहा ॥

नौकर भेज बुलाविया, नथमल साह सुजान।

सजन संबन्धी मित्र गण, भेला मिलिया आण । १॥
समझावे सारा सयन, कुंवर धरै नहिं कान ।
शोकानन बैठा सकल, पड़ियां रांदूया धान ॥ २॥

ढाल १६मी

तर्ज—सुमति सदा दिल में वसो

कहे कुन्दनमल शाहजी नामाता ने जाम,
कुवरजी छोहर बुद्धि छोड़दो । व्यर्थ बनो बदनाम,
कुंवरजी ॥ कहे कु० ॥
आ कांही सूझी आपने, तन पर धारो जोग कुवरजी ।
दुनिया देसी मैणिया, भला न भाखे लोग कुवरजी ॥ क० २ ॥
बैठा पूतों नांवने केम डुबोओ आप कवरजी ।
दुःख पावे छे डोकरी, तात लह्यो सताप, कुंवरजी ॥ कहे० ३ ॥
दरद कई दिल आपरे, चौड़े दोनी सुनाय, कवरजी ।
मांग थारी अन्य परणसी, जीवत मृत्यु गिनाय ॥ कहे० ४ ॥
थोड़ा में समझ्यो सहु, ज्यादा बात झिकाल, कवरजी ।
उत्तर में इन विद कहे, श्री रघुनाथ दयाल, सनेही ॥ कहे० ५ ॥
सजम लेस्यू साहजी, नहीं परणीजन भाव, सनेही ।
दुनिया दो मुखसू कहे, मोमन अधिक उछाव, सनेही ॥कहे ६ ॥
सुनकै सब सुस्ता पड़या, इत भाइ के साथ कुंवरजी ।
रत्नकुवर कइ लाईयों, अरज सुनो रघुनाथ, कुवरजी ॥कहे ७ ॥

ढाल १७मी

तर्ज—नवली चन्दनी हेक

सजम किण विध लेरया हो कवरसा,
अध परणी मुझ छोड़। नेह छोड़ि किम चालिया हो भवरसा,
खास बतादो खोड़ के ॥१॥

जानें न देवसू हो कवरसा सो वातां इक बात ॥ टेर ॥
बिगर गुने छिटकावसो हो कवरसा, सीगत होसी मोय।
दुनियों लोग दुरावसी हो कवरसा, हिये बिमासी जोय ॥ जा०२ ॥
अवर भणी धारू नहीं हो, कवरसा, इण भव में भरतार।
मेरे तो वर एक ही हो कवरसा, नथमल शाहकुमार ॥ जा० ३ ॥
अरज दरज करसो नहीं हो. कवरसा, ले सौ सजम भार ॥
अकन कवारी रेवस्यूं हो कंवरसा. साखसिरी किरतार ॥जा० ४ ॥
वचन सुनी साला तणा हो भवियन रघुपति यू फरमाय।
समझादो सारी तरह हो कंवरसा निज बेनड़ ने जाय ॥ जा० ५ ॥

॥ दोहा ॥

कहे रघुपति राजी मना, बाला उम्मर बाल।
प्रगट प्रतिज्ञा करत ही, खरो राखजो ख्याल ॥१॥
कहने वाले क्रोड है, पालनहार पचास।
जरा न आवें जोरही, वदतों वचन विलास ॥२॥

उम्मर भरजो आदरें, उमंग धरी उर मांह ।
नियम आपणों नेह सूं, दुनिया जास दृढ़ाय ॥३॥

चन्द्रायना

मोरुकवा को ढग रति ना मानजै ।
निज उर दृढ़ता जोयके मन में ठान जै ॥
होय कवारी तास पति अन हो सकै ।
नहीं कलंक की बात वृद्ध सज्जन अखै ॥ १ ॥
भ्रात जायके जरद बात बैनड़ भणी ।
कहदी तजि घमड बात ऐसी बणी ॥
करलो क्रोड़ उपाय कवरसा ना रहै ।
सगपण छोड्यो जेह, सकल सज्जन सहै ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

कथी वात रत्नावति, पति साथ में प्रेम ।
रती न राखे कंवर सा, सती कहासी केम ॥
ओलो कदै न आदरूं, तो लौं तन में प्राण ।
नाथ सुवन विन नाथ मैं, करन किया पचखाण ॥

ढाल १८मी

तर्ज–शिक्षा दे रही जी हमको

कैसे कह रहे जी उनको तात मात तिणवारी ॥ टेर ॥

बड़ी कदर से कंवर साहब को, मैं समझाया जाय।
तदपि एक माने नहि किनकी, कहो कियो कई जाय॥ कै० १॥
मैं भी जाणू इसो घराणों, मिले कठिन से आज।
आखिर हो हैरान छोड़ियों, सगपण कैरो साज॥ कै० २॥
तुझ सन्देसा के उत्तर में कंवर सहाब कहलाई।
राजी खुशी से थें परणी जो, म्हारी नहीं मनाई॥ कै० ३॥
बाई रत्नी इन पर बोली सुनो पिताजी बात।
दूजो परण न नैम हमारे, प्राण पति रघुनाथ॥ कै० ४॥
दूजा नहीं करू जी, के इण भव में भरतार॥ टेर॥
जादा मिल के मुझे सतास्यो, तो तन को कुरबाण।
करदूगी पर मैं न वरूगी मेरी एक जबान॥ दूजा० ५॥
दग रह गई सारी दुनियाँ, रत्नवती को रग।
देखी दौड़ गया रघुपति पै, इस्यो जमायो ढग॥ दूजो० ६॥
अरे कंवर सा गजब करो थें, नारी हित्या आसी।
जो सजम थें लेलीनो तो, फांसी खा मरजासी॥ दूजो० ७॥
तात मात सुसरा अरु साला, रो ग्या रघुपति तांही।
पूज्य भूधर पे आकर दुनियों इसड़ी बात सुनाई॥ दूजो० ८॥

ढाल १६मी

तर्ज—सुन्दर रहिजे महलां मांय नजर लग जायगी

दुनियों दाखे हो साधूजी, आप पधारिये जी।

नहिंतर जबर जुलुम हो जासी, बात विचारियेजी ।। टेर
तुमने रघुपति को भरमाया, उनका सज्जन सब रीसाया ।
अब तो आया के वे आया, ऐसो चेला केरो लोभ के नहीं
वधारियेजी ।। दुनिया० १ ।।
महिमा घट जावे ली थांरी, देसी गाल रार अनपारी ।
वाथवा भाटाकी देमारी, जिन सू रुकवादें नहीं लाभ के होस
सभालियेजी ।। दुनिया० २ ।।
भूधर पूज्य नहीं घबराया, शांति राखो मन में भाया ।
हमने उनको नहीं भरमाया, मेरा पास धणी परमेश्वर काज
सुधारियेजी ।। दुनिया० ३ ।।
इतने रघुनाथ के साथे, मिल के सकल पूज्य पे आते,
उनके चरणों सीस झुकाते, बोले नथमल साह तिवार के मोय
उबारियेजी ।। दुनिया० ४ ।।
मेरे एकाएकी लाल, लेसी सजम ऊठै झाल ।
इनको समझादो किरपाल, ठहरे चार बरस लों और के विपद्
निवारियेजी ।। दुनिया० ५ ।।

॥ सोरठा ॥

सत गुरु दीन दयाल, रघुपत से इसड़ी कही ।
वेद वर्ष लौं हाल, संजम नो अवसर नहीं ।। १ ।।
नैनाश्रुत रघुनाथ, होय कहै नहीं रेवसूं ।
भूधर कहे दिख भ्रात, किम देवों आज्ञा विना ।। २ ।।

ढाल २०मी

तर्ज—झल्लो म्हारी जोड़ रो

चौमासो कीजिए सोजत सुखकारीजी।
सतरैसे तैयांसीए मानो अरज हमारी जी ॥ टेर ॥

चार बरस लग रेवसूं, मन इच्छा चारीजी,
आरम्भ अलगो राखसूं, तन तप जप धारीजी ॥ चौ० १ ॥

सब जन मन में हरसिया यूं अरज गुजारी जी,
पूज्य गुरु से बीनती, कीनी तिनवारी जी ॥ चौ० २ ॥

दे स्वीकृति मुनि पांगुर्‌या, मरु मण्डल मांहीजी,
वरसा ले आया गुरु, दियो ठाठ लगाई जी ॥ चौ० ३ ॥

भण्डारीजी खीमसी, सेवा भलसारे जी।
ज्ञानोद्यम रघुपति करे, आलस ने टारे जी ॥ चौ० ४ ॥

जान पणो जाजो कियो, गुरु कीध विहारो जी।
विरक्त पणे रघुनाथजी, रहै सदन मझारो जी ॥ चौ० ५ ॥

व्याहतणी बातोंकरी, खरी खैंच लगावैजी।
मौन रखै बोलै नहीं, रघुपति निजदावैजी ॥ चौ० ६ ॥

काल कर्यो माता पिता चहूं बर्स मजारो जी।
रत्न कंवर नहीं हान रे, धन एह जमारोजी ॥ चौ० ७ ॥

॥ सोरठा ॥

सारो शहर सराह, रत्न कंवर रघुनाथ ने।
नेम राजुलसी आय, कलियुग में जोड़ी बनी ॥१॥

ढाल २१मी

तर्ज—सुणो ए सहेल्यां म्हारो लूंगारो वेपारी

ग्राम नगरपुर विचरतां, भूधर पूज्य दयाल, सतरे सै सित्यासीए।
सात ठाणे सुविशाल ॥ सुणो० १ ॥
सुनो हो जसधारी जोधाणे, पूज्य पधारिया।
जमियो है जमघट जोर, देस दीवानज खींमसी।
सेवा करे कर जोर ॥ सुनो० २ ॥
इण अवसर रघुनाथजी, छाने से तज के मौन,
पग अलवाने पूजता, गढ़ जोधाने गौन ॥ सुनो० ३ ॥
प्रथम मिल्या परधान सू, हद बिन आयो हेज।
अब मोहिं दीख दिराइये, रतियन करनी जेज ॥ सुनो० ४ ॥
अथक उमग सू आविया, सत गुरु के चरणार।
अनहद आनन्द पामिया, देख गुरु दीदार ॥ सुनो० ५ ॥
कर वन्दन विनती करें, अब तारो गुरुदेव।
सजम धन बगसावियें, सारू चरणारी सेव ॥ सुनो० ६ ॥

ढाल २२मी

तर्ज--होरी

म्हारा हो सत गुरुजी म्हारी विनती अब धारलो तो संजम शीघ्र
दिराओ गुरुजी, वावा बलिहारी २ सुरतिया लागे प्यारी ॥१॥

जनम मरण म्हारा जलद मिटायदो, तो कर्मोंरी फौज हटा दो
गुरुजी ॥ वा० २ ॥

वोत दिना से आस फली है, तो मन की कलियां खिला दो
गुरुजी ॥ वा० ३ ॥

अमर होवन की आस हमारे, तो अमर बूटी वो दिखादो
गुरुजी ॥ वा० ४ ॥

विषय कषाय लगी जो केड़े, उन से बेड़ी कटा दो गुरुजी ॥वा० ५॥

॥ दोहा ॥

मुनिवर मानी विनती, तारण हुआ तैयार ।
अरज करें तब खींवसी, सुनिये प्रवरदिगार ॥१॥

ढाल २३मी

तर्ज—चौकनीमय लांवणी

सचिव संगाते रघुपति आके भूधर गुरु के पैर पड़े ।
अब मोहि संजम शीघ्र दिलादो, भव सिंधू से वेग तरें ।
अहा सुह गुरु मुख से वाणी जान खीमसीजी जोलों ।
हर्षानन्द होय कहे सब से, महावीर की जय बोलो ॥

॥ शेर ॥

घाने बिठाया लाय के निज हवेली तामजी ।

रजा मांगी भूपति से जाय नृप के धामजी ॥
क्या काम क्यूं मांगे रजा, जाहिर करो कहे भूपजी ।
हे नाथ मम गुरुराज पे ले दीख एक अनूपजी ॥

॥ चलित ॥

जब जोधाणे को नाथ इसी फुरमाई ।
है तेरा गुरु सो मेरा कुमी रख नांई ।
जलसे का सब खरच राज से करिये ।
है तुझ को सब अख्तियार रती ना डरिये ॥

॥ दौड़ ॥

आज्ञा भूपती से पाय, दीन्हा हुकुम लगाय, सब सरदारां पै जाय, झट त्यारी करो ॥ १ ॥

घोड़ा एक हजार, हाथी दोय सै शुमार पाली सेना को न पार, दल आन खरो ॥ २ ॥

आये सैंकड़ों सरदार साथे केई कामदार बन्यो ठाठ जो अपार वैरागी को ॥ ३ ॥

जो ओ जवानी के मांही, ओ तो छोड़ के सगाही, जुक्ति जोग की जमाई रंग है इनको ॥ ४ ॥

बड़ो रूप को रूपालो, लागे दुनिया ने वालो, जायो माता ऐसो लालो, धन है जिनको ॥ ५ ॥

॥ मिलत ॥

ज्येष्ठ कृष्ण बुध बीज ठाठ से रघुपति दीक्षा धारी है।
सतरै से सित्यासी बरसे चरणों की बलिहारी है ॥ १
मेड़तिया दरवाजा बाहिर जमघट जबरो जुड़ियो है।
भँवर केसांको लोच रघुपति अपने हाथों करियो है ॥ २
भूधर गुरु के सन्मुख रघुपति ऐसी अरज गुजारी है।
तारो तारो मुझे दयालू आप बड़े उपकारी हैं ॥ ३

॥ शेर ॥

श्री मुखे गुरुराज ने दीक्षा दिवी दयालजी।
देख दुनिया दंग रह गई कठिन वृत्ति निहालजी ॥
दीक्षा लेकर जा विराज्या पूज्य जी के पासजी।
गांधी गड़मल वैद्य नृप को करै यू अरदासजी ॥

॥ चलित ॥

क्या जैन धर्म को मर्म मुझे फरमावो।
है सुनवे की चाय आप दरसाओ।
ले आज्ञा रघुनाथ वाणी बरसावै।
ये थोड़ा मांये सार घणो बतलावें ॥

॥ दोड़ ॥

होवे आतमा को भान, करे जैनागम को ग्यान,

सब जीवां पे समान रखे भाव जो खरो।
बुरो पाप को बतावै, किंतु पापी को न गावें,
दोष आपका दिखावे, चाहे प्राण भी परो।
वस्तु धर्म जो अनन्त छाने उनीमें से तन्त,
चवै कभी न एकन्त धर्म आज्ञा में न हो।

॥ मिलत ॥

षट द्रव्यन को भेद मधुर ध्वनि सुन हर्ष्या नरनारी है।
गढ़मल आदिक सतरा सज्जन गुरु पै समकित धारी है ॥२॥

॥ दोहा ॥

व्याकत लख छोनीपती; वाहवाह वदै बखाण।
छोटी दाई में निपुण, किया गुरु दे ज्ञान ॥

ढाल २४ मी

तर्ज--इन सरवरियारी पाल

सभा समक्षे ताम कहे रघुनाथजी मोरा लाल कहे०।
आज्ञा दो अविलम्ब धरो सिर हाथजी, गुरुदेव धरोसिर० ॥ १ ॥
चार विगय का त्याग जीवूं जहां लौं मुझे, गुरुदेव०।
कारण रो आगार अरज उचरूं तुझे गुरुदेव ॥ २ ॥
मास एक के मांय अट्ठा दिन पांच ही गुरुदेव०।

निरन्तर तप एह करू प्रभु साच ही गुरुदेव० ॥ ३ ॥
सुखे करो अहो शिष्य पूज्य इसडी कही गुरुदेव०।
कठिन प्रतिज्ञा पेख दूनी देखत रही गुरुदेव० ॥ ४ ॥

ढाल २६ मी

तर्ज--पनजी मूडे बोल

है बलिहारी रे मुनिवर ने कैसी ममता मारी रे ॥ टेर ॥
जोबनवय मे जोग रमायो, तज अप्सर सी नारी रे ।
मनमें नहीं मिजाज कठिन तप लीनों धारी रे ॥ १ है बलि० ॥
मरुधर पति आदि सब जनता, लियो अचभो भारी रे ।
कर बदन निज स्थान गये, गुरू कीध बिहारी रे ॥ २ है बलि० ॥
गांव सुरपरे रात विराज्या वानी विमल उचारी रे ।
जन सैंतीस लेय समकित, यूं अर्ज गुजारी रे ॥ ३ है बलि० ॥
बड़ी दीक्षा गुरू अठे दिरावो, मोपे दया विचारी रे ।
पूज्यराज हूँकारो भरियो साताकारी रे ॥ ४ है बलि० ॥
जेतसिंह चांपावत जावे बनको करन सिकारी रे ।
बचनामृत मुनिवर के सुन, उर समताधारी रे ॥ ५ है
बड़ी दीक्षा मुनि रघुपतिजी की, छोटी जैतसी धारी रे ।
ज्येष्ठ कृष्णा नवमी दिन दोनों आनन्दकारी रे ॥ ६ है बलि ॥
जिन २ ग्राम पधारे गुरुवर, उन २ ग्राम मंझारी रे ।
जबरो जिन मारग दीपावै, पर उपकारी रे ॥ ७ है बलि० ॥

नव निधान सम नव ठाणे गुरु शहर मेड़ते भारी रे।
इन्द्रावड़ से अहार करि जब, कियो विहारी रे॥ ८ है बलि०॥

॥ दोहा ॥

सुद नौमी आषाढ की, गौधुलिक गुण गेह।
मुनि मंडल पुर मेड़ते, झवक पधार्‌या जेह॥
भयकारी भैरव भवन, उतर्‌या आज्ञा लेह।
अम्बो भोजक एतले, वाणी यूं पभणेह॥

ढाल २७मी

तर्ज—ख्याल की

क्यू अठै आविया राते भैरव नाहि राखे जीवता॥ टेर॥
भैरव सेलियाजी को शंको, माने नगर तमाम।
किणकी माता खायो अजमो, रात रहे इण धामजी॥ क्यों १॥
नगर मेड़तो मरुधर चावो, है जतियां को जोर।
अठे अड्डो नहीं जमै आपरो, उतर जावेगो तोरजी॥ क्यों २॥
हरगिज नहीं मरसां रहसां रातरां सेवगजी सुणलो॥ टेर॥
मरण को डर रति न मानै, पास धणी सिर गूंजै।
जाय कहो जतियां ने जल्दी शंका है तो बूझेजी॥ से० ३॥
मूंडो लागे है भूंडो आपरो, जतियां ने जीतो॥ टेर॥

बड़े २ विद्वान जती कई, करामात की कूजी।
कुर्ब देवे राजाजी उनके, है लाखां की पूजीजी ॥ ज० ४ ॥
भोला अंबा क्यू आयो रीस में क्या जती चीज है ॥ टेर ॥
इमों अठे अरु जती अठे ही, यह घोड़ा मैदान।
उतर पड़ो मैदान में सरे भली करे भगवानजी ॥ क्या ५ ॥
पूजी राखे पास मे सरे, फेर जती कहलावे।
लिंगधारी इन लोक में सरे, नाहक धर्म लजावेजी ॥क्या ६ ॥
जती जीतना दूर रहा पिण विजनस मरसो राते।
क्यों नाहक में प्राण गवाओ, कांई आवेला हातेजी ॥क्या ७ ॥
मरसों कै रहसां म्हैं रातै, प्रात देखजे भाई।
भूधर गुरु परताप रघुपति, इसड़ी तान सुनाईजी ॥ क्या ८ ॥

॥ दोहा ॥

जिती बात अम्बे सुनी, भणी जतिन के भौन।
गुणी साध आया अछै, यूं कहि निज गृह गौन ॥१॥

ढाल २७मी

तर्ज—सलूनारी

रात पड़ी रवि आथमियों, प्रतिक्रमण कर पूजे सुज्ञानी,
रसिक पणे रघुनाथ सूं। बोल चाल रया बूझ सुज्ञानी ॥१॥
पूज पधार्या मेड़ते।

अतिसयवंत अपार सुज्ञानी, सहन परीसह सूरमा ।
कैसे करे उपकार सुज्ञानी ।। पूज्य २ ।।
पूज्य टाल पच्चखी सवै, अट्ठाई आठों साध, सुज्ञानी ।
मगन सवैं मुनि धर्म मैं, आज्ञा सहित अराध, सुज्ञानी ।। पू० ।।
पहर जाजेरो जावतां, भभक्यो भैरव आय ।
क्यों ठहराया इम स्थानकै, द्यूं सबने पौढ़ाय सुज्ञानी ।। ४ ।।
अमर प्रते रघुपति कहै, किनका स्थान मकान सुज्ञानी ।
वार अनन्त बसाविया, सुनिये धर के कान, सुज्ञानी ।। ५ ।।

।। दोहा ।।

देव द्वार दरसावियो भिन भिन कर गुणवन्त ।
हर्षित ह्वै सुर यूं कहे, सुखे विराजो संत ।।१।।
माफ करो मोटा मुनि, हो गई मम तकसीर ।
धर्म दिपावो शहर में, मैं पिण भक्त सधीर ।।२।।

चन्द्रायण

प्रात होत पुर लोग आया उच्छक मनै ।
देख मुनि दीदार आपस में यूं भनै ।।
ये नहि मरिया संत जबर जसवंत है ।
धर्म दिपासी एह बड़े पुनवंत है ।।

ढाल २८मी

तर्ज--द्रोण लावणी

अजी सत्य धर्म से विजय दुंदुभि बाजै।
महाराज जगत में जस प्रगटावेजी।
सब सुनों भ्रात रघुनाथ पूज्य जिन धर्म दिपावैंजी ॥ टेर ॥
होगई प्रात ही बात सहर सारे में।
महाराज मुनि है परचा धारीजी ॥
आगये दरस के काज बहू नरनारीजी,
इतने में अम्बालाल सेवग भी आया।
महाराज दिया चरणों सिर डारीजी,
अति विनय करी कहे करो माफ तकसीर हमारीजी।
गुरू करी गजब की बात आप नहीं मरिया,
महाराज देव बस में किम आवेजी ॥ स० १ ॥
मुनिराज सुनावैं ज्ञान, सुधारस भरियो,
महाराज सभी जनता गुण गावैंजी।
ऐसा अमोलक सत पुण्य बिन कैसे पावैंजी,
अब धोवन के काज गुरू संचरिया।
महाराज सेवगजी घर बतलावेजी,
गछवासी गये भिड़क वचन बैड़ा सुनवावेजी।

यह फिरे भटकता चोर वीर भगवन् का ।

महाराज नाहक में भेख लजावेजी ॥ सब २ ॥

स्वामी श्री रघुनाथ ठहर कर बोले,

महाराज मधुर मिश्री सू मीठाजी ।

क्यू बोलो जतीजी झूंठ, करम बधजासी चीठाजी,

गुन सागर एक जति जतिन में मोटो ।

महाराज कड़क बोल्यो मद छाकीजी,

क्यू मोड़ा करै तुफान एक नहीं छोड़ूं बाकीजी ।

यहां पोल नहीं मिथ्यात् आय फैलावै ।

महाराज चिड़ी कर उसै उड़ावैजी ॥ ३ सब ॥

हंस बोल्या रघुनाथ जतीजी सुनिये ।

महाराज आप मन में मत राखोजी,

जो करामात को होय कोथलो, झटको नाखोजी ।

जो मरों धर्म पे आज अमर हो जास्यां,

महाराज दयामय धर्म प्रकास्यांजी ।

विन किया धर्म परचार मेड़तो छोड़ न जास्यांजी,

नहीं मरणां को फिकर प्राण मुट्ठि में,

महाराज धर्म की ध्वजा लहरावेजी ॥ सब ४ ॥

जनता कहे शाबास रग है इनको,

महाराज वीर जब ही कहलावेजी ।

धोवन लै रघुनाथ पूज्य पै सीधे आवेजी,

फिर लाये आहार श्री पूज्य पारणो करियो ।
महाराज ज्ञान की ध्वनि जमावेजी,
जो आवे मुमुक्षु उसे धर्म का सार जतावेजी ।
इत जती सहर के मिल के मिसलत कीनी,
महाराज कहो अब कैसे ढावेंजी ॥ सब ५ ॥

॥ दोहा ॥

पहर रात बीत्यां पछै, जती सकल ही रूठ ।
मुनि मारन हित फैंकदी, मिल मिथ्या ही मूठ ॥१॥
धर्म प्रतापै ना मरे, सातिष्टी उत आय ।
दूजी तीजी तुरीय फिर; सातों दिवी चलाय ॥२॥
भूती सातों फिर गई, लिंगधारी के लार ।
करी कब्ज अति कठिन सूं, नहिं तो नाखत मार ॥३
भय पाया भोंदू सबै, यह साधू शैतान ।
क्यूं कर सोचे सकल ही, अटल बचावां आन ॥४॥

ढाल २६मी

तर्ज--कर्म न छूटेरे प्राणियां

प्रात हुआ श्री पूज से, आज्ञा लेही रघुनाथ रे,
धोवण काज पधारिया, ऊभा जतियन के साथ रे ॥ १

रघुपति बोल्या है रग सूं, इतरे कांई विचार रे।
टूटन वाली तो टूट गई, सांधो लागे नहीं तार रे ॥ रघु० २ ॥
दादा फोड़ां रे ऊपरै मानूं भुरकायो खार रे।
सारा जति मिल आविया, नगर सेठां के द्वार रे ॥ रघु० ३ ॥
शाह सिम्रथमल दीपतो, धारीवालज गोत रे।
धन धन अधिकारी सेर में, घट में ज्ञान उद्योतरे ॥ रघु० ४ ॥
जतियां जणावी बातड़ी, आया मिथ्यात्वी साधरे।
गोचा घाले हैं गहकतां, वेगि काटो आव्याधरे ॥ रघु० ५ ॥
सोच विचारी शाहजी, तेड्यो अम्बाने तामरे।
वातां पूछी है प्रेम सू, कांई साधोंरो नामरे ॥ रघु० ६ ॥
आखै अम्बो अवसायजी, आई आ अमोलक चीज रे।
त्यागी वैरागी सूरमा, वावै धर्मोंरां बीज रे ॥ रघु० ७ ॥

॥ दोहा ॥

भैरवजी वस होगया, ताजो तेज निहार।
सात मूठ जतियां तणी, फिरता लगी न वार ॥१
पूज्य गुरु भूधर परम, शिप रघुनाथ सधीर।
ज्यूं गोयम जिनवीर पै; वणियां खास वजीर ॥२

ढाल ३०मी

तर्ज—निहालदे

नवठाणे निर्ग्रंथ है जी कांई, नीको जां रे नेह।

मीठा-बोलां गुण भरया जी कांई, दीपै झिग मिग देह ॥ १
अब के तो आया गुरु मोटकाजी ॥ टेर
झोड़ करी जतियां घणीजी कांई, चाली न एक लिगार ।
अब आया छै आप पैजी कांई, व्यर्थ बढ़ावन रार ॥ अ० २ ॥
चमत्कृति अरु ज्ञान सैं जी कांई, तीजो अपूरव त्याग ।
कुण जीते इन तीन में जी कांई, कहुँ छू घर के राग ॥ अ० ३ ॥
आप चाले लागो मती जी कांई, करिये जाय दीदार ।
शङ्का सारी मेटसीजी कांई, समता रस भण्डार ॥ अ० ४ ॥
अठा ऊपर भीन मानसोजी कांई, तो मरजी छै शाह ।
मैं तो हुकुम में आपरे जी कांई, करसों जू फरमाय ॥ अ० ५ ॥
महता अमी पाल ने जी कांई, शाह कहै झट लाव ।
जब गति अम्बा जायने जी कांई, लायो घर बच्छाव ॥ अ० ६ ॥
मेहता सूं मिसलत करी जी कांई कहै मूतांजी तान ।
मामांसा रा है गुरुजी कांई, जाणे मुलुक तमाम ॥ अ० ७ ॥
ज्यादेती जतियां तणीजी कांई, चवड़ दीसे आज ।
इण कारण साधों थकीजो कांई, प्रेमी सकल समाज ॥ अ० ८ ॥
चर्चा करावो चूपसू जी काई, मालूम होसी सार ।
पक्ष समर्थन फिर करांजी, मेरी सलाह हियधार ॥ अ० ९ ॥

छन्द—पधरी

जचगई साह के हिये जाम, इनपे सरैगो सकल काम ।
जतियों से जाहर करी ताम, चर्चा हित चालौ उन्हीं धाम ॥१॥

सुन मुदित जती लै ग्रन्थ ढेर, सब चलै पूज्य पै ताहि वेर।
यह वात फैलगी पुर तमाम, देखन हित जनता जुड़ी आम॥
महता पुनि साहजी अग्रदोय, जा पूज्य पास यूं कहे सोय।
हम चाहत चर्चा करन श्याम जिनसे हो निर्णय वर ललाम॥
मध्यस्थ रहेंगे विवुध आय, जाहिर कर दीजै आप राह।
कहै पूज्य हमों हरदम तय्यार, पर रहना चाहिये सविचार॥
कहै शाह रहैं वेफिकर आप, कोई कर न सके नाहक प्रलाप।
पूर्वोत्तर पक्ष जूं उभय थाप, हिय मोद बढ्यो सगरे अमाप॥

॥ दोहा॥

आज्ञा दी आनन्द से, भूधर पूज्य कृपाल।
रघुपति के सिर हाथ धर, वत्स! वरोजयमाल॥

ढाल ३१मी

तर्ज—राधेश्याम

जय जिनवीर मनाय, आय के सभाविच रघुनाथ जवै।
पूछो प्रेम से प्रश्न आप, फिर उत्तर देंगे साफ तुम्हें॥
कहै जती चली है सूत्रों में, प्रभु प्रतिमा पुनि पूजा थांरी।
तुम कैसे इसे उठाते हो भव भ्रमणा होवेगी थांरी॥ १॥
रघुनाथ कहै अये मित्रों, यह कथन मिथ्या तुम्हारा है।
नहिं सूत्रों में अर्हत् प्रतिमा, नहीं पूजन अधिकारा है॥

आरंभ से हिंसा होती है, हिंसा से धर्म नहीं हो सकता।
आचारंग अध्ययन प्रथम में, फरमा गये ज्ञानी वक्ता ॥२॥
अर्हन् वा तीर्थंकर प्रतिमा कहि हो तो जाहिर करदो।
जिन प्रतिमा के अर्थ तीन हैं सत्य न्याय से तुम सरधो।
अवधि या मनपर्यय ज्ञानी, कामदेव आदिक जानो।
येही यथारथ बात भ्रात तुम, साफ हृदय करके मानो ॥३॥

क्योंकि चार निक्षेपों के बिन, वस्तु सिद्ध नहीं होती है।
ध्यान रखो जिन आगम पै, जैसे देखो इक मोती है।
नाम द्रव्य अरु स्याप भाव ये उसमें चारों मिलती है।
ऐसे मिलादो प्रतिमा मे, नहीं मानों तो फिर गलती है ॥४॥

जिन प्रतिमा जिन सदृश कैसे, युक्ति कौन जमाओगे।
लक्षण अतिशय उपयोग आदि सब कैसे कहां से लाओगे ॥
प्रतिमा में निक्षेप स्थापना, और तीन उसमे नाहीं।
यदि तीन मिले तो भी जिन सदृश, प्रतिमा नहीं होती भाई ॥५॥

मन्दिर मूर्ति पूजा प्रतिष्ठा, करन विधि आगम मांही।
किस श्रावक ने ये काम किया, अब दो तुम चौड़े दरसाई।
गरचे मोक्ष मिले पूजा से, फिर संजम क्यों लेवेगा।
तप जप तन पै धारण कर क्यों व्यर्थ कष्ट वो देखेगा ॥६॥

दान शील तप भाव धर्म का, चारों वेद बताया है।
कहीं पूजा का नाम नहीं श्री जिनवर ने जतलाया है ॥
ज्ञान क्रिया से है मुक्ति, जिन आगम साफ सुनाता है।

इसके सिवाय तुम लाख करो भला कौन मोक्ष को पाता है ॥
युक्ति पै युक्ति सुनकर के सब जाति झुंड घबराया है।
पोथी पाने लेय क्रोध कर वहां से कूच कराया है ॥
कहन लगी जनता जोरों से जती गमादी है नाकी।
'मिश्रीमल' कहे जय बोलो एक दम से रघुपति बाबाकी ॥८॥

॥ दोहा ॥

महता साह आदे गणा, ओसवाल सरदार।
जती छोड़ भूधर गुरु, लिया सीस पै धार ॥१॥

ढाल ३२मी

तर्ज—हां नार चल खास कचहेरी

हां सुनो अरजी गुरु म्हारी, लाख क्रोड़ जावों बलिहारी।
चौमासो यहां करो दयानिधि दया बिचारी रे ॥ टेर ॥
स्याद्वाद मारग समझाया, सूतां ने गुरु आन जगाया।
ज्ञानामृत बरसाय कियो उपकार अपारी रे ॥ सुनो १ ॥
धरम तणी लागी फुलवारी, सींचा सूं होसी रसवारी।
समकित के दातार आपकी, महिमा भारी रे ॥ सुनो २ ॥
अवसर जान हुँकारो दीधो, सब सकल अमृत रस पीधो।
जनों जनों गुण गान करे, सब सह मझारी रे ॥ ३ ॥

चतुरमास तपं रघुपति ठाया, अरु ज्ञान धन रस बरसाया।
जैन धर्म उद्योत हुओ है, अपरमपारी रे ॥ सुनो० ४ ॥
साह सिमरथमल अरु अभिपाला, घांसीराम आदि सुविशाला।
पांच सयां परिमान हुआ है समकित धारी रे ॥ सुनो ५ ॥
सूत्र आचारंग रघुपति बांचे, श्रोताघन केकीवत राचे।
जानपनो बहु करे प्रेम से बहु नरनारी रे ॥ सुनो ६ ॥
महिमा देख जती दुख पावे, केई तरह के द्वन्द मचावै।
एक चले नहीं उनकी पूज्य कै पुण्य अगारी रे ॥ सुनो ७ ॥
दया धर्म का बज गया डका, घणां जनों की मिट गई शका।
वका होगये पाधरां, बने भक्त सुचारी रे ॥ सुनो ८ ॥

॥ दोहा ॥

जोधाणे से खींवसी, लै लश्कर बहुलार।
सेवा करण श्री पुज्य की, आया प्रेम अपार ॥१॥
भंडारीजी भालियो, रघुनन्दन को ठाठ।
दयानिधि दीपा रहे, भूधर गुरु को पाठ ॥२॥

ढाल ३३मी

तर्ज—धूंसो बाजे रे

यस छायो रे भूधर रघुपति को २ ॥ टेर ॥

नरनारी कहे भंडारी से. पार न पायो गुरु की मति को ॥ १ ॥
सदर बजारां चरचा करके. मान घटायो सब जतियन को।
तपस्या की क्या झड़ियां लागी, दूध उजार्यो सोमा सतीको।
चारसों उठायां अरु मास खमन को नंबर आयो इगती को ॥
स्कंध हुआ है चार इठयासी, बन्ध छुडायो माठी गति को ॥ ज०५
उर्ध्व रेख पद हाथ बिराजै, भाग्य भलो पति रतनी को ॥ ज० ६
औरां की क्या गिनती यांपै, वस किन्हों खेरापति को । ज० ७
कर पर्यूषण गये जोधाणे, सचित्र सिरी मरुधर मणि को ॥ ज० ८
'मिश्रीमल' नित जाप जपे, है, वरदायी रघुपति धनी को ॥ ६०

॥ दोहा ॥

चार मास चहु संघ में गूंज्या सिंह समान ।
वाह ! वाह ! उन वीर को, लियो नहीं अनपान ॥१
पिंजर तन देखे दुनी, पै न शक्ति को पार ।
ज्ञानोद्यम गुरु सेव प्रति, पलपल रहत तैयार ॥२

ढाल ३४मी

तर्ज—गांधणजी री

चार मास अति चूप सूं हो भवियन जी,
साह सिमृथमल्ल सुजान ज्ञान बहु पढ़िया हो भवियनजी ।

कातिक चौमासी आगई हो, भवियनजी,
तप चढ़ियो निर्वाण पूर दिन बढ़िया हो गुणिजनजी ॥१॥
सहर सकल बन्द राखियो हो भवियन जी,
निज निज को व्यापार हरष हिय आन के हो भवियनजी।
पूरण पौषध ठाविया हो, भवियन जी,
चार सै ऊपर चार लाभ बहुमान के हो भवियनजी ॥२॥
सभा अपूरब सी जुड़ी हो भवियनजी,
रघुवीर पूज्य के पास वाणी बरसावे हो भवियनजी।
सेठ सुदर्शन की कथा हो भवियनजी,
श्रीमुख रया प्रकाश सील गुण गावे हो भवियनजी ॥३॥
जसधारी जयमल्लजी हो भवियनजी,
आया परम पुनीत वैरागी वेगा हो, भवियनजी।
कथा सकल निर्मित करी हो भविजनजी,
चौथ मुनि सुविनीत बतावें वेगा हो भवियनजी ॥४॥
याते मैं जोड़ी नहीं हो भवियनजी पूर्ण रसीली टेर,
श्रोताजी मन बस गई हो भविजनजी।
पिन इतनीक सुनाय दू हो भविजनजी,
कथा सम्बन्धित एय बात है रसकी हो भविजनजी ॥५॥

कवित्त

मेड़ता के पास ग्राम लांबिया के वासी आप,
मोहन सुवन तजि नव वधू प्यारी है।

पैर एक बीच सीखे, प्रतिक्रमण जो नाथ,
तात मात भ्रात बात एक ना विचारी है।
बरस पचास लो न कियो है आसन आडो,
वेले वेले पारणो तो जावजीव धारी है।
अगहन कृष्ण बीज, सतरै-सित्यासी हूको,
मेड़ता नगर बहार भये अनगारी है ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

कियो पारणो रघुपति, एक सौ अट्ठावीस।
तप दिन ते चढ़ती रती, पूरण करी जगीश ॥१॥
जस अरु जयमल लाभ युग, ले भूधर सुखकार।
शहर मेड़ता से कियो, वारूं आप विहार ॥२॥
झुर रही है जनता जबर, कर कर गुरु गुण याद।
फिर दरसन होसी कवै, मेटन कर्म उपाध ॥३॥

ढाल ३५मी

तर्ज—गंग श्याम की महिमा अपार

जैन धरम के वीर रघुपति गुण दरिया ॥ टेर ॥
पूज्य सगाते ग्राम भवाल, पैल प्रमाणे आये दलाल,
काटन कर्म जजीर ॥ रघु० १ ॥

सत्य धर्म को कर परचार।
पहुँचे रियां करो विहार, सब जीवन के पीर ॥ रघु० २ ॥
कम धज कुशलसिंह राजान, अबख खान कीना पचखान
भक्त भएयो धर धीर ॥ रघु० ३ ॥
गांव बिखरनीये बड़ तल बसिया, जात आवगी श्रावक
रसिया। हो गये मुनिवर तीर ॥ रघु० ४ ॥
गुरु दीक्षा जयमल को दीन्हीं, विनय सहित उन शिक्षा-
लीन्हीं, टालन अगकी सीर ॥ रघु० ५ ॥
कई ग्रामों को करि सुधार, तन पर कष्ट सह्यो अनपार।
दियो मिथ्या मत चीर ॥ रघु० ६ ॥
जहां पूज्य पगल्या पधरावै, वहां अज्ञान रहन नहीं पावै।
अतिशय ए गम्मीर ॥ रघु० ७ ॥

॥ दोहा ॥

पांच ठाणे से पूज्यजी, कालू तर्फ विहार।
रघुपत को आज्ञा अखी, जा गगराणे सार ॥१॥

ढाल ३६मी

तर्ज—खोटो लालचियो

पांच ठाणे गगराणे पोंचे,
देखि डरिया लोग ए कुण आयारे।

आज पेली पेख्या नहीं कोई,
कैसे है उपयोग, जन घबराया रे ॥ १ ॥
वहां श्रावगी बसे सैंकड़ों,
धर्म दिगम्बर धार, ढिगनहि धाया रे ।
रघुनन्दन जयणा से चालत,
पौंचे सदर बजार, अति ऊमाया रे ॥ २ ॥
सूनी हाट पाट इक पड़ियो,
उतरिया आज्ञा लेय, गोचरी जावे रे ।
आवत देख जडे सब आडा,
चित्त में सबल संदेह, स्थान मुनि आवेरे ॥३
सुन्दर पन स्वाध्याय करे गुरु,
मतों महाजनो कीध, इनपै चालोरे ।
डरता २ पास आया,
रघुपति कहै परसिद्ध, क्या तुम भालो रे ॥४
मैं भालों मुखड्यो क्यूं बांध्यो,
थां आया किण काम, नाम कांई थांरोरे ।
चोर जेम घर २ कई झांकों,
रहो कौन से गांव, कंई व्यौपारो रे ॥५॥
कहे रघुनाथ जयणा कर बैठो,
मैं महावीर का संघ जैन कहलावों रे ।
ज्ञान बताकर काटों सब को,

जनम मरण अपराध, धरम सिखलावांरे ॥६॥
कहे महाजन मैं कैसे मानों,
जैन मुनि को ढ़ंग रति नहीं दीसेरे।
जैन मुनि जगत में रहते,
वस्त्र बिनारो अग मन तन जीसेरे ॥७॥
सामीप यं हैं मुनि मग दो,
स्थिविर कल्प जिन कल्प, सूत्र के मांहीरे।
मुनि सचेलक अधुना विचरें,
राखे उपधि अल्प, अचेलक नांही रे ॥८॥
विविध भांति उपदेश सुनायो,
बहु इर्स्या मन मांहि, व्यर्थही डरियारे ॥९॥
धन्य घड़ी गुरु मिलै जैन का,
यूं कहि पड़िया पांय, मोद मन भरियारे ॥९॥

॥ दोहा ॥

जे आया ते जायने, वात कही समुजाय।
ये हैं मुनिवर जैन के, स्थविर कल्प कहलाय ॥१॥

ढाल ३७मी

तर्ज—आखिर नार पराई है

सब को सुनकर खबर पड़ी, मिले मुनि वन आज घड़ी।

लालचन्द इक कासलीवाल, वो चर्चा कीनी सुविसाल।
उनकी सका सकल हरी ॥ मिले० १ ॥

जिन वाणी की लागी झड़ियां, तपस्यां अनहद थई उन विरियां।
माया भक्ति खूब करी ॥ मिले० २ ॥

एक दिन ऊंट चौरासी आया, डाकू देख सभी घबराया।
रघुपति से यूं अरज करी ॥ मिले० ३ ॥

कहे रघुवीर करो समाई, धर्मतना फल आछा भाई।
सब बैठा मन धीर धरी ॥ मिले० ४ ॥

बाहर मेड़ता से इत आई, डाकू भागा छोड़ सजाई।
सभी गांव की विपद हरी ॥ मिले० ५ ॥

अमीपाल मेहता उत आये गुरुदेव को सीस झुकाए।
दोय दिवस रहि सेव करी ॥ मिले० ६ ॥

ग्रामवासी सब ही हरसाया, पूज्य प्रसादे दुःख विलाया।
सेवा सारे प्रेम भरी ॥ मिले० ७ ॥

॥ दोहा ॥

मास कल्प ऊना रही, उन्नत कर उपकार।
प्रति बोध्या घर दोय से, उत ते कीध विहार ॥१॥
जाजो धर्म जिनन्द को; ग्राम २ घन घोर।
दीपावत मुनि पांगुर्‌या, जेतारन सिरमोर ॥२॥

ढाल ३८मी

तर्ज—मांने दोरो लागेजी लोकड़ली रो साल०

म्हां ने प्यारा लागे जीक २,

स्वामी श्री रघुनाथ मेटियो भ्रमना भागेजी।

जैतारण में आवत जतियां, ऐसो कियो उपाय।

सन्मुख जाय प्रेम सू लाया, एक हवेली मांय ॥ माने० १ ॥

उतरन आज्ञादिवी देर बिन, गोचरि घर बतलाया।

जहर भर्यो ऊनो जल द्वेषी, मुनिवर को वहराया ॥ माने० २ ॥

आहार पाणी कीधा तदन्तर, चारों मुनि मूर्च्छाया।

इतेक आड़ो देकर ताला; जतियों ताम जड़ाया ॥ माने० ३ ॥

रघुपति सोचे दगो हो गयो, रिपु विश्वास में आया।

अब तो जिनवर फते करेला, क्या होवे घबरायां ॥ माने० ४ ॥

नवपद ध्यान धर्यो मन नीके, मुनि सचैतन पाया।

तीन दिवस आडा में बीता, चौथा दिन प्रगटाया ॥ माने० ५ ॥

जे जे जतियां काम कीयो तस, आंखां चक्कर आया।

उठी वेदना सिर में भारी, लोग पूछवा आया ॥ माने० ६ ॥

कैसे वेदना उठी सब कै पूछै प्रेमी भाया।

ते कहे आडा खोलो जल्दी, साधोंने सताया ॥ माने० ७ ॥

तालो खोलत मुनिवर पांचों, दीठा हवेली बीच।

फिट फिट लोग करे जतियां नै, कर्म कमायो नीच ॥ माने० ८ ॥

लोग पड्या मुनिवर के पावों, ऐसी अरज गुजारी।
जति एह मर जासी इनको, राखो दया विचारी ॥ माने० ६ ॥

॥ दोहा ॥

कहे मुनिवर हम ना कर्‌यो, इनपै इसो अकाज ।
ध्यान धरो जिन राजको, जिनसे सुधरे साज ॥१॥
स्वस्थ होत मुनि के चरन, पड्या जती सब आय ।
माफ करो अपराध को तुम मोटा महाराज ॥२॥

ढाल ३६मी

तर्ज—पैलो हो पासो रायवर ढालिए

सका साधांरी सारासैर में, दरसन ने आवे दुनियो चाल ।
मधुर ध्वनि से देवे देसना, झूंठो तो जाणो जग जंजाल ॥१॥
सुणजो भवि प्राणी धरम दया में जिनवर दाखियो ।
हिंसा में मतना मानो कोय, जहर बीजां से अमृत ना हुवे ।
अमृत से कबहुँ जहर न जोय ॥ टेर ॥
भेद द्वादसही जाणों निर्जरा,
जिनमें हिंस्या नहिं किंचित होय ।
आरम्भ में धर्म परूपे भोलिया,
जिन से तो नर भव देसी खोय ॥ २ ॥

श्रद्धा रुचगी है सुल्लभ जीवने,
समकित लिया सूं बढ़ग्यो ज्ञान।
ग्रन्थ अपूरव जतियां आपिया,
तिलक समाणो जग में त्याग ॥ ३ ॥

खबर सुणी नें भूधर पूजजी,
कालू से कीनों ताम बिहार ।
साथे जयमलजी ज्ञानोद्यम करे,
आवे जैतारण दीनदयाल ॥ ४ ॥

बायां भायां रो जमघट साथ में,
जावे रघुपतिजी सन्मुख ताम।
वंदन करता ही भूधर यों कहे,
जैनी बणायो रे सारो ग्राम ॥ ५ ॥

आप कृपा ते सब कुछ होत है,
मैं तो स्वामी क्या करवा जोग ।
देख नरमाई महिमा बहु करें,
ल्याकत बढ़ासी कहै यू लोग ॥ ६ ॥

आया शहर में पूज्य सताब सूं,
सेवा सारे है होडा होड ।
पुण्य पसाये पाया पूजजी,
मनरा तो पूरण कीधा कोड़ ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

दिन इकवीस विराजिया; जैतारण गुरुराज ।
कीध विहार सोजत तरफ, तारण तिरण जहाज ॥१
दीप रूप कुलेस तिहुं, आगेवामें आय ।
चरण भेंट श्री पूज्य का, अरज करे सिर नाय ॥२

ढाल ४०मी

तर्ज—वीरा लूंबा झूंमा होई आइजो

सांने संजम भार दिरावो, टुक महर नजर करवावोजी ॥ टेर ॥
मां महिमा सुनके आया, कर दरसन जी हुलसायाजी ॥ मां १ ॥
भव २ में भटक्या भारी, कर लीनी आतम कारीजी ॥ मां २ ॥
कहे पूज्य पढ़ो जिनवाणी, अवसर ले दीख दिरानीजी ॥ मां ३ ॥
ग्रामानुग्राम गुरु राया, विचरत सोजत मे आयाजी ॥ मॉं ४ ॥
मुनिवर की जोड़ी है प्यारी, लख मुदित भये नरनारीजी ॥मां ५ ॥
वाणी रघुनन्दन वारी, बरसे अमृत सी भारीजी ॥ मां ६ ॥
रत्नावति दरसन आई, पिहुँ दरसन कर सुख पाईजी ॥ मां ७ ॥

॥ दोहा ॥

भरी परिषदा में भलो, आख्यो मुनि उपदेश ।
नेमनाथ राजुल तणो, धालन धरम की रेश ॥१॥

देसनानंतर रत्नवती, कर बन्धन कहे एम ।
नाथ निपुण कहलाय के, भलो निभायो प्रेम ॥२॥

ढाल ४१मी

तर्ज--बन्ना उमराव

पिया म्हारा आप दिखायो मां ने छेह,
नेह रतिना पाल्यो हो मोरा भर्तार ।
पिया म्हारा जोबनवय में जेह,
जोग रमाई चाल्या हो मोरा भर्तार ॥ १ ॥
पिया मोरा इतरो न कियो रे विचार,
किसे भरोसे त्यागी हो मोरा भर्तार ।
पिया मोरा उठे विरहरी झाल,
रात दिवस बड़भागी हो. मोरा भर्तार ॥२॥
पिया मोरा आसू न टूटे आख,
अन्न जल फीका लागे हो मोरा भर्तार ।
पिया मोरा छोड़ो मुझे बिन बाक,
जबरो दु:ख ओ जागे हो मोरा भर्तार ॥ ३ ॥
पिया मोरा भोलप कीन्हीं भूल,
झुर झुर पिंजर हो गई हो मोरा भरतार ।
पिया मोरा चिंता मे चित चकचूर,

छांई न राखी जोगी हो मोरा भरतार ।। ४ ।।

पिया मोरा आस निरासज कीध,

मनकी मन में रेगई हो मोरा भरतार ।

पिया मोरा अब किम होसी निर्वाह,

वातो विरिया वेगी हो मोरा भरतार ।। ५ ।।

पिया मोरा निपट नादानी सांइ,

मन की ममता मारी हो मोरा भरतार ।

पिया मोरा सब सुख दिया छिटकाय,

काया करदी कारी हो मोरा भरतार ।। ६ ।।

पिया मोरा सूरवीरां रा काम,

धन सासूआ जाया हो मोरा भरतार ।

पिया मोरा खूब दीपाजो निज नाम,

यू कही आंसू आया हो मोरा भरतार ।।७।।

॥ दोहा ॥

दयिता की दल गीरता, देखी कहे दयाल ।
क्यों वहिनी विल विल करें, झूंठो जग जंजाल ।। १ ।।
समता रख ममता तजो, भजो वीर भगवान ।
सजो साज संजमतणो, करो पाप पचखाण ।।२।।

ढाल ४२मी

तर्ज--नवीन रसिया

बनजा वैरागन तूं बहिनी, तेरो सुधरेगो जमवार।
सुधरेगो जमवार तू तो लेले सजम भार ॥ टेर ॥
काची काया काची माया, काचा सुख संसार।
सांचो सुख सजस रो जिनजी दाख्यो सूत्र मझार ॥ बनजा ॥
छीजे छिन २ एह हमरिया, लार लग्यो है काल।
झूठा तन धन जोबन झगड़ा, सजनी सूरत सभाल ॥ बन २ ॥
स्वारथियो संसार सकल है, डारो इस पै छार।
मात तात परिवार प्यार है, फेर भर्‌यो जंजाल ॥ बनजा ३ ॥
सतजुग में नबुली साथे निकसी आठूँ नार।
कलजुग में जयमलजी त्यागी नव परणित ही नार ॥ बन ४ ॥
सूरा तो संजम मे जूझे, कायर खाय पछाड़।
सूरा को तो सेल घणेरो, कायर दुक्कर कार ॥ बन ५ ॥
रघुपत की ललकार सुनत ही रत्नावती तत्काल।
प्रीतम आज्ञा धरै सीस पै, पतिव्रता आचार ॥ बन ६ ॥
आज्ञा मांगी मात तात से, लेस्यूं सजम धार।
मिश्री मुनि कहै रग २ है, रत्नावती अवतार ॥ बन ७ ॥

॥ दोहा ॥

करी खैंच माता पिता, रती न मानी तेह।

अवर नार इग्यार को, रत्नावती से नेह ॥१॥
वे पिण होगई साथ में, संजम लेण तय्यार ।
धन्य २ दुनियों कहे, पूरो राख्यो प्यार ॥२॥

ढाल ४३मी

तर्ज—हां रे वाला इन सरवरियारी पाल—

हां रे वाला धन जांरा अवतार चेती वेती बारमेंजी महाराज ।
॥ चे० ॥
हा रे वाला तज पुद्गल परपंच, लेवे सजम भारनेजी
महाराज. ले० ॥ १ ॥
हारे वाला रत्नकुवर के साथ ग्यारा वैनरी मारराज ई० ।
कुल द्वादस दिल धार दीक्षा लेवन खड़ी, महाराज दी ॥ २ ॥
हांरे वाला जीवराज कुललेस, जेठमल जानिया मोराराज जेठ ॥
हांरे वाला रूप दीप आदि पच पुरुष जो पिछानिया मोराराज पु० ।३
हारे वाला सतरा संजम लैन, उमाया दिन एक में महाराज उ० ।
हांरे वाला सतराइठ्यासी जेठ चतुर्थी विवेक मे मोरालाल च० ।।४
हारे वाला भूधर पूज्य दयाल, दीक्षा चढ़ती रती, मोरा राज दी० ।
हारे वाला श्री मुख कीध प्रशंस, धन्य रत्नावतीजी मारराज च. ।।५
हांरे वाला बडी दीक्षा सहवाज दिराई रग में मारा राज दि० ।
हांरे वाला केसरिया कर लीव, कर्मांरां जग में मारा राज ।।क० ६

हांरे वाला रघुजैतसी जयमल्ल कुसल है भला मोरा राज कु० ।
हांरे वाला बीज ससी सम जान, चारों चढ़ती कला मोराराज चा. ७

॥ दोहा ॥

शिष्य सकल में तिलक सम, श्रीरघुनाथ रसाल ।
सतियां में रत्नावति, मुख्या बुद्धि विसाल ॥१॥
चतुर्मास की वीनती, करत चतुर कैई संघ ।
पूज्य प्रभु फरमाइये, अघि को बढै उमंग ॥२॥

ढाल ४४मी

तर्ज—पियोनी अमृत रा प्याला—

भरोनो सोजत चौमासा रो, स्वामी आज हुँकारो,
करके किरपा की ओर सारा ऊभा,
कर जोर स्वामी माथा रा मोर ।
थां सम म्हांरे कुण और ॥ भ० १ ॥
लाभ कमायो स्वामी सोजत में जाजो, वढ़ियो बहुलो परिवार,
रत्न अमोलक सार बरतें आज्ञाजी कार ।
सारा सासन सिनगार ॥ भरोनी० २ ॥
रघुपत जयमल सी जोड़ी लागे जग थोड़ी, म्होटा म्हांरा छै भाग,
बसियो भीणो सुराग, घटियो कुगुरु को आग ।

भगियो मिथ्यात्यरो छाग ॥ भरोनी० ३ ॥
अवसर जानि भूधर एम प्रकासी, मनने राखो उच्छाव,
धर्म दीपावन भाव, बर्ते सोजत सिर पाव।
तरसी भव्यां की नाव ॥ भरोनी० ४ ॥
सात सतोनें बगड़ी हुकुम फरमायो,
सोजत ठाणे जी आठ लागो धर्म रो ठाठ।
काटयो कर्मोरो काट, दीप्यो जिनजीरो पाट ॥ भरोजी० ५ ॥

॥ दोहा ॥

चार मास आनन्द में, रह्यो धर्म जमघट्ट।
गुरु देव का चरण में, नर-नारी को ठट्ठ ॥१॥
पांच ठाणे रघुनाथ को, हुकुम दियो गुरु पर्म।
जावो गढ़ जालोर को, दीपाओ जिन धर्म ॥२॥
धर्म पोथिण वन्द को, जबर जोर है जेथ।
समझाई सुधा करो, सत्वर जाकर तेथ ॥३॥

ढाल ४५मी

तर्ज़—अष्टपदी

आज्ञा ले चलें पुण्य शाली, आये थे जहां सैर पाली।
विपक्षी मुनिवर को भाली, चर्चा हित आया है चाली ॥

॥ दोहा ॥

सूनी हाट बाजार में, उतरिया आज्ञा पाय ।
मधुर ध्वनि रघुनाथजी सरे, चर्चा दिवी चलाय ॥
निरुत्तर हो गये लिंग धारी ॥१॥

भये जग रघुपति, अवतारी, श्रवन जस सुनिये नरनारी ॥ टेर
जती जब रीसमें आगा, पत्थर से मुनि मारन लागा ।
धिक्कारे जनता उन जागा, भेड़ ज्यू सकल जती भागा ॥

सत्वर आया सेठिया; बैठा मुनिवर पास ।
श्री जिनवाणी श्रवण करी के, पाया परम हुल्लास ।
लीवी वे समकित सुखकारी ॥ भये० २ ॥

सास इक तप गुरु आचरियो घनो उपकार उत करिरियो, कोठारी
उदो गुण भरियो, वाड़ो कर अमर सुजस वरियो ।

धर्म ध्यान के कारणे, नौरो आप्यो फेर ।
देख ठाठ रघुनाथ को सरे, जती हो गया भेर ॥
कलप कर कीनो बिहारी ॥ भये० ३ ॥

सुधार्या गांव घणा स्वामी, समदड़ी आये गुणधामी ।
लोग सब पुर वारे पामी, चकित हो कहे अन्तरयामी ॥

क्यों सब बैठा बारनें, जनता कहै झंझलाय ।
आंख्या सूं दीसे नहीं सकई, गांव लपेटयो लाय ॥
परम गुरु बोले सुविचारी ॥ भये० ४ ॥

धर्म से लाय दूर भागे, इति कहि चालै गुरु आगे ।
लोग सब पूठे ही लागे, अग्नि तो ज्वालो ज्वाल जागे ॥

॥ दोहा ॥

पग धरता पुर मांय ने, मिट्यो अग्नि जोर ।
शांति हो गई गांव सारा में, नमे सभी मद मोर ॥
आया गुरु आज्ञा अवतारी ॥ भये० ५

विराज्या केता दिन वांही, चन्द्र अरु नन्दराम भाई ।
पोथिया बन्द धर्म तांई, छोड़ ली दीक्षा हुलसाई ।
श्रावक श्राविका करी सैंकड़ों, त्वरिया कीध विहार ।
गढ़ जालोर जाने के पहली, खबर पौंचगी सार ।
आवे हैं मिथ्यामति भारी ॥ भये० ६ ॥

पोथिया बन्द धर्म धारी, लट्ठ ले आया पुरवारी ।
जावे रघुनन्दन जिन द्वारी, आय उत बोले ललकारी ॥
जावो साधों लौट के, अग्र जाण दो नांय ।

गांव गांव मिथ्यात बढ़ावो, लजो नहिं मनमाय ।
खबर अब पड़जासी थांरी ।। भये० ७ ।।

छन्द--तोटक

रघुनाथ कहै मत झोड़ करो, भव सिंधु न या विधि आप तरो ।
अग बन्धन होवत है तगरो, जिनराज कह्यो है बुरो झगरो ।।१।।
इत तो तुम रोकत आज लगै, पर घूम आये हम बहुत जगै ।
हम बातनतें विश्वास करें, बिन काज किए टुक नाहिं टरैं ।। २ ।।
दे देवेंगे प्रान प्रचारन में, पर पीछे हटें न प्रहारन में,
कहि गौन करें पुर मांहि जबै, लठमारी दियो सिरमांहि तबै ।।३।।
परवाह न कीधी है आपरति धन धन्य तुम्हें रघुनाथ पति ।
सिर खूस भरे, सब चोल भरें, इत नाईन की जब दृष्टि परे ।।४।।
शिव मन्दिर तें मुनि आन खड़े, खवासते पूछ वहीं उतरे ।
विपच्छिन रचहि गैल तजे, मुनि कष्ट प्रदायक साज सजे ।।५।।
दिन तीन गये इस फदन मे, अरि कैसे टरे क्रम बधन मे ।
नहि ठेरनको कित थान मिले, निज न्यायन से नहि नाथ चले । ६

।। दोहा ।।

कुत्ता लगाया काटना, पुनि पत्थर की मार ।
अन्नजल कित ना ले सकें, दे ऊपर से गार ।।१।।

समतां रस भरिया सजल, छलकत छिनभर नाय।
कष्ट सह्यो दिन तीन में, लेखन लिख्यो न जाय ॥२

ढाल ४६मी

तर्ज—चांदाजी

धन वीर व्रती धरम काज कष्ट सह्यो अति भारी।
अति धीरमति अरअर मुख से कह्यो न है बलिहारी ॥ टेर ॥
लोहु लुहान तन मुनिवर के, गुरु ज्ञान मगन है वेधर के,
जब हाकिम आयो सुन करके ॥ धन० १ ॥
नयनों मुनिवर को तन निरखी, हाकिम जद बोल्यो है कड़की
कुण काम कियो ऐसो अड़की ॥ धन० २ ॥
रघुवीर भणी वन्दन कीधी, प्रभु मुझको खबरां नहीं दीधी,
तुम विपत उठाई इण विधि ॥ धन० ३ ॥
कहै रघुपतिजी मीठी वाणी, सब करम गति भोगे प्राणी,
आगम में आख्यो है ग्यानी ॥ धन० ४ ॥
मुनिवर को अब साथे लाके, सुभ स्थान उतार्‌या है जाके,
अब भेखधारी मूडा ताके ॥ धन० ५ ॥
हाकिम ने डुंडी पिटवाई, जो मुनि की करसी लघुताई,
उनें सजा देवूंगा मन चाही ॥ धन० ६ ॥
इतने उनका श्रावक आई, कहै साधु न इन आरामांही।
आगम में प्रभु दरसाई ॥ धन० ७ ॥

॥ दोहा ॥

कहे रघुपति जानो नहिं, जिन वाणी को गूढ़ ।
भूल करो छो भोलिया, ताणी झूंठी रूढ़ ॥१॥
दया पालो सारा जणा; लै निज गुरु को लार ।
साधुपन बतलाय दूं, पंचम काल मझार ॥२॥

ढाल ४७म

तर्ज--पणिहारी

हारे सो ही हान रे अहो भवि जन जी,
जीते जिनरो पक्ष अहो सुनो गुणिजनजी ।
चर्चा करसां चूप सूं अहो भविजन जी,
सारा लोक समक्ष ॥ अहो० १ ॥
ले ले पोथा साथ में, अहो गुणिजनजी,
आया पोथिया बध ॥ अहो० २ ॥
भगवइ सत्तक बीस में अहो भवियण जी,
अट्ठम वदेसे सध ॥ अहो० ३ ॥
सैस इकीस ल चाल सै, अहो भविजणजी, चतुरविद्ध ही संघ
अहो, निर्संका सब हो गया अहो भविजनजी छायो अमित उमंग
सब श्रावक समकित ग्रही, अहो भवियण जी, भेख धारी संग

छोड़, सेवा करे रस रग सू अहो भविजनजी मिलके होड़ा होड़ ॥ अहो० ४ ॥

चोमासो निव्यासीये अहो भविजनजी, कीन्हों चढ़ते भाव, अहो, जिन मारग अति दीपियो अहो भवियनजी सघ लयो उच्छाह ॥ अहो० ५ ॥

॥ दोहा ॥

सात जणां संजम लियो, चढतै मन वैराग ।
चवदे ठाणे रघुपति अधिक वध्यो सोभाग ॥१॥
कर विहार चौमासा को, जोधाणे गढ़ ठेट ।
पूज्यराज भूधर तणी; भलमन कीनी भेट ॥२॥

ढाल ४८मी

तर्ज—अस्सी रुप्या ले कलदार

रघुपति की महिमा अनपार, झिलरही गढ़ जोधाणे सार ॥ टेर ॥
वड़े २ उमराव मुसद्दी, सेवा करण आवे सरदार ॥ र० १ ॥
जैन धर्म की रुचि जिगर मे, श्रवण करत उपजे उपकार ॥र २॥
पाखंडी मद गालन हारे, धाक जमी सारे ससार ॥ र० ३ ॥
भूधर शिष्य के नव शिष्य नामी नवनिधान की ओपमधार ॥र ४
श्रीनारायण रघुपति जैतसी जयमल कुशल और जगमाल ॥ र. ५

रूपचन्द अरु रत्न गोरधन आदे नव भूषित गुणभार ॥ र० ६ ॥
भूधर पूज्य के नव शिष्य ओपे ज्यू पारस के नव गुणधार ।र. ७।
रघुपत जयमल कुसल जेतसी, चारों चावा जगत मझार । र. ८ ।
चारों दिसा में धर्म दयामय जाण लियो जनता जिनवार ।। र० ६
शिष्य प्रशिष्य और उनके शिष्य पूज्य तनो बधियो परिवार ॥ र०
षोड़श वर्ष लग रघुपति कीनी, पूज्य तणी सेवा धर प्यार ।।र०।।

॥ दोहा ॥

अब्द अठारा तीन को, फागन पूनम पूज ।
संदेशो शिष्यों प्रति कह्यो सिंह जूं गूंज ।।१।।

छंद

बोलो भूधर पूज्य तिवारी, सुणलो सब सतों सुखकारी,
अब है आयु अल्प हमारी, तन तज देस्यों ।
रखजो प्रेम आपस में पूरो, होसी भव दुःख को भख भूरो ।
रखजो द्वेष भावने दूरो, मुज सदेशो ॥ १ ॥
करजो रघुनाथ को नायक,
है यो सभी गुणों से लायक, बणसी धर्म सेवा मे शायक ।
कुल जाती को, खप थे ग्यान ध्यान में करजो ।
चुन २ सद्गुण उरमें भरजो, काला कर्म सूं थें लड़जो ।
लह्यो ख्याती को ॥ २ ॥

अब तो सैर मेड़ते चालो, वां पै चौमासो कर डालों।
वाणी वीर तणी वरसालो सुखकारी को ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

साधू साधवी को दिवी, आज्ञाकरण चौमास ।
चार तीस अरु पांच में, करजो धर्म प्रकाश ॥ १ ॥

ढाल ४६मी

तर्ज–महाराजा थारी बोली प्यारीजी

पूज्य की अतिशय भारी जी,
उनपै मैं जाऊ वारी वारी वारी वार हजारीजी।
मुखड़ा की छबि न्यारी न्यारी न्यारी।
अति महिमा भारीजी ॥ टेर ॥

मरुधर मांहें विचरता, गगराणो गुण माल।
असाढ़ सुदी तृतीया को मेड़ते, जावे पूज्य दयाल ॥ पूज्य १ ॥
रघुपति जयमल आदि दे साथे सत इग्यार।
जिसमें नारायण स्वामी को, लागी प्यास अपार ॥ पूज्य २ ॥
धोवण लेवण संत अगाड़ी, गया मेड़ते शहर।
लारे काल कर गया मुनिश्वर, चढ़तभाव की लेर ॥ पूज्य ३ ॥
दस ठाणे सू पूज्यजी, कियो चरम चौमास।
सैर मेड़ते धरम ध्यान को, अधिको हुओ प्रकास ॥ पूज्य ४ ॥

विजयदशमी को कर अन सन पांच पारणे जान ।
वीर थुई स्वध्याय भणाता, कियो पूज्य कल्याण ॥ पूज्य ५ ॥
बरस बराणू केरो आयू, भोगवियो भगवंत ।
व्हाजो जिन मारग दीपायो, था गिरवा गुणवंत ॥ पूज्य ६ ॥
सकल संघ मिसलत कर लीनी, गछ नायक रघुनाथ ।
भेज खेपिया गांव सेहर में, करली पक्की बात ॥ पूज्य ७ ॥
चेत सुकल पंचमी को सोजत, मिल कर चारों संघ ।
अट्ठारे चौके रघुपति को, पूज्य किया धर रंग ॥ पूज्य ८ ॥
दूनो तेज बढ्यो दिन करसो सरस सपदा जोर ।
प्रबल प्रतापी पूज्य चरण को, नसे सबी मदमोर ॥ पूज्य ९ ॥

॥ दोहा ॥

सकल संघ आज्ञा बहे, धर कर मन में प्रेम ।
सुजस वध्यो महि मण्डले, रोहिणी पति के जेम ॥ १ ॥

ढाल ५०मी

तर्ज—नमूं अनंत चोवीसी

गिरुवो गछ नायक, गोयम को अवतार ।
जन जन मुखड़ा ते बोले जय २ कार ।
विचरत बड़भागी उदयापुर की ओर ।
खिरियारी घाटे जाय रह्या गुण भौंर ॥ २ ॥

उत कर्मों रावत चावो चौकीदार,
रघुपत से मांगे चौकी तेह तिंवार।
श्री पूज्य पयंपै धन नहीं रखते पास,
फिर क्या हम देवे सोचो हिय बिमास ॥ २
ते कहें विन दीधां है जाने की रोक,
हट जावो पीछे मरुधर की तज नोक।
आज्ञा विन आगे नहीं जावों कहें पूज,
पाछां नहीं लौटां, वे धड़के कहे गूंज ॥ ३ ॥
तरुवर तल ठेर्या, चालीसों मुनिराय,
तपनी कोतपिया कष्ट सह्यो निज काय,
चले सीत झकोरा बाजे ठंडी वाय पुनि,
भूखा प्यासा मुख कुमलायो नांय ॥ ४ ॥
तृण काष्ट लेन को आवे केई नरनार,
उपदेश सुनी के ले श्रावक व्रत वार।
इक्कीस अठायां आदि तप अनपार,
बहु सोगन लीन्हां प्रेम धरि सुखकार ॥ ५ ॥
इक मास कल्प लौ ठहर्या गुण भण्डार,
उदयापुर सेती आय गया असवार।
करमा निस्सरमा क्यूं तूं रोक्या संत,
नाहक दुःख दीनो खवर पड़ेलातंत ॥ ६ ॥
रघुपति कहै वाणी दुःख देना टुक नांय,

हुवो धर्म ध्यान को मांने लाभ सवाय।
रावत केई कीन्हां मद्य मांस पचखान,
पीपली में लीनो मास पारणो आय ॥ ७ ॥
उपदेश सुनि केई श्रावक समकित लीध,
सुर दुर्ग पधार्या तस ठाकर दु.ख दीध,
सहिया समभावे राते ठाकुर भौन दव प्रबल लागियो,
फैल्यो गति जौ पौन ॥ ८ ॥
डर्‌यो दिल मांहि, राते पड्यो पांय,
जिन धर्म प्रतापे बुझ गई बलती लाय।
मुझ सहर पधारो किरपा कर गुरुदेव,
मैं मूरख दीनों दुख तुमने अहमेव ॥ ९ ॥
पुर पूज्य पधार्या धर्म पोथिया बन्द,
वे आते कीधो सदर बजारां दव,
जीती जस लीधो, किया चार अणगार,
प्रतिबोध्या श्रावक साड़ी चार सो धार ॥१०॥
धन जननी जायो अनड नसावण हार,
सुभ धर्म दृढ़ा वन रघुपति को अवतार।
केई गांव फरसता, राज नगर से होय,
श्री नाथ द्वारे वल्लभ कुली धम सोय ॥११॥

॥ दोहा ॥

जाय सकै नहिं जैन के, सन्त कहूँ उन थान।

पूज्य पधार्या पेखिके, व्रजवासी धर मान ॥१॥
हुकुम मिल्यो महंत को, मत आने दो मांहि ।
पत्थर मार भगायदो, डरना नहिं दिल प्राय ॥२॥

ढाल ५१मी

तर्ज—साहजादी का बाग में दोय नारंगी पकी रे लो

पत्थर फैंकन चालिया, व्रज वासी सारा रे लो ॥ अहो० व्रज० ॥
फतेचन्द्र सिंघी वहां हाकिम सुविचार रे लो ॥ अहो० १ ॥
भेज नफर बोलाविया, व्रजवासी आया रे लो ॥ अहो० ॥
कित जाओ कारण कहो, क्यों रीस भराया रे लो ॥ अहो० २ ॥
आवे साधु जैन का यहां फैन मचावे रे लो ॥ अहो० ॥
कूटी करसां पाधरा सीधा भग जावे रे लो ॥ अहो० ३ ॥
रीस करी हाकिम वदै, नहि राज तुम्हारे रे लो ॥ अहो० ॥
कुण २ रोकन हार है अब वेग पधारो रे लो ॥ अहो० ४ ॥
घोड़े चढ़ हाकिम तदा रघुपति पे जावे रे लो ॥ अहो० ॥
कर विनती उन सर में, सत गुरु ने लावे रे लो ॥ अहो० ५
फिर गोसांई पे जायके, फतेचन्द सुनाई रे लो ॥ अहो० ॥
चमत्कारी साधु अछै, छेड्यां दुःख थाई रे लो ॥ अहो० ६ ॥
गोस्वामी सुस्तो पड़यो चाली कछु नांही रे लो ॥ अहो० ॥
वाणी पूज्य बरसावतां, नमियो कर आई रे लो ॥ अहो० ७ ॥

दोय बरस मेवाड़ में कियो धर्म प्रकासो रे लो ।। अहो० ॥
अट्ठारेसो सात को उदियापुर चोमासो रे लो । अहो० ८ ॥

॥ दोहा ।

भिन भिन कर समलावियो, गुणवन्तां ने ज्ञान ।
सेवा में हाजररया, राणायुत परधान ॥१॥

॥ छन्द-तोटक ॥

चउ मास को नाथ बिहार करें, वर मालव देस विख्यात फिरे ।
जहां तहां जस पायसिरे, प्रथिपाल कई पद आन परें ॥ १ ॥
जिह ओर सूरि रघुनाथ बढ़े प्रतिवादिन के उर छोभ चढ़े ।
भवि हेम हृदै वर ज्ञान मढै कुनयादिक त्रान छिनेक कढै ॥ २ ॥
परवाह नहीं निज प्रानन की, पुनि चाय नहीं रति मानन की ।
ध्वनि जोर जमी रहे ज्ञानन की लहै लोक नये रस जानन की ।३।
जय जेपुर बीच मनाय जरे अविलम्ब गुरु अजमेर खरे ।
फिर घूम लिए सब आडे बरे, बर सिरियारी के घाटे को पार करे ॥४

॥ दोहा ॥

आये मास असाढ़ को, वर काठे की कोर ।
बसे गांव कंटालियो, कमधज राज किसोर ॥१॥

ढाल ५२मी

तर्ज—मास खमन रो मुनि रे पारनो रे

पूज पधार्‌या मध्य बाजार में रे,
उतर्‌या है बंगला केरे मांय रे।
वाणी सुनी ने सुल्लभ प्राणियां रे,
महिमां गुरु की निज मुख गायरे॥ पू०
निर्धन नवल सुवन भीसम वसैरे,
जाति सकलेचा आसोज वाल रे।
दुष्ट परनामी दुर्बुद्धि घणोरे,
कपटी बोलन मे बहु वाचाल रे॥ पू०
नारी मर गई है दुःख माने घणोरे,
घर में माता ने एक बड़ भाय रे।
प्रेम रती नहिं है तीनों मायने रे,
वासर विपदा बीच विलाय रे॥ पू०
मन्त्री है रामचन्द्र नामे भलो रे,
बीजावर्गी जिनरी जात रे।
वासी है वो तो देस मेवाड़नो रे,
प्रेम से रजित सातों धात रे॥ पू०
जोग लेवण री दोनों रे जंची रे,
कौल कर लीनों लैसां साथ रे।

कारज बस निज मित्र गयो गांव कोरे,
लारे आया गुरु गुण गाथ रे ॥ पू०
हुवो वेरागी बाणी सांभली रे;
आज्ञा मातां री लीधी ताम रे।
कोल विसार्‌यो भीसम मित्रनो रे,
दीक्षा लेवणरी लागी हाम रे ॥ पू०
लक्षण विलोकि भणे पूजजी रे,
निश्चय है नहिं दीक्षा जोग रे।
बचन सुनि ने बिलखानन भयो रे,
चित्त में तो आव्यो बहुलो सोग रे ॥ पू०
कृपा करी ने नाथ निवाजिये रे,
मुझसा पामर ने पार उतार रे।
दया विचारी भावी जोग थी रे,
स्वामी दे दीनों सजम भार रे ॥ पू०
बिहार करी ने सोजत सचर्‌यारे,
लारे आयो है मित्री तेय रे।
मिलवारे कारण सोजत पूज पेरे,
बाल पधारो जिनरे नेहरे ॥ पू०

॥ दोहा ॥

भीषम ने भारी दियो उपालंभ उण आय।
वचन चूक किम सुधरसी; आलोचो मन मांय ॥ १

कहै भीषम क्या होगया, ले अब संजम भार ।
तुज पासे लेवूं नहीं, यूं कहि गो निज द्वार ।। २
दांते जा दीक्षा ग्रही, राम सनेही सन्त ।
राम चरण शाहजपुरे, प्रगट्यो खास महन्त ।।३

ढाल ५३मी

तर्ज--उमादे भटियाणी

पूज्य प्रतापी भारी हो, सुखकारी वाणी राजरी ।
समता सारी ईस, ममता मन की मारी हो ।
अवतारी आज्ञा ओपतां, कई जग में विस्वाबीस ।। टेर ।।

बगड़ी कर वर सालो हो ऊजाल्यो मारग जैन को ।
कई टाल्यो मिथ्या फन्द, सोजत रा रेवासी हो सुखरासी
टोडरमल्लजी आया घर आनन्द ।। पू० १ ।।

लेवण काजे आया हो निज बड़ बधव के सासरे ।
कहिं भावज को घर रंग, चौपड़ रमवा लागा हो कहिं बराबरी रा
वैठने । उत वातों चली अभंग ।। पू० २ ।।

वाणी किसी सुणावे हो, मन भावे सारा लोग ने ।
कहि मीठी मिश्री जेम, टोडरमल सा चालो हो करवालों दरसन
आपने । कंई पेख्या बढ़सी प्रेम ।। पूज्य० ३ ।।

टोडरमल टंक सालिहो, कंई चाली आया पुज पै,
सुणवा लगा बखान। सुन बचनामृत सारा हो उजियारा पाया
प्रेम का, कांई आया घर सुजान ॥ पूज्य० ४ ॥

टोडरमल मन भावे वो गुण गावे बारोंवार ही,
कांई सुण की भावज रोल। अब तो सई लेले सो हो,
कई दीक्षा देवरजी तुमे चढ्यो विराग इलोल ॥ पूज्य० ५ ॥

हा है इच्छा म्हारी हो, कई आज्ञा थांरी होय तो,
मैं ले लूं सजम भार। म्हारी तरफ से आज्ञा हो,
नहिं अन्तराय देऊ कभी। सुन उठ्या टोडरमाल ॥ पूज्य० ६ ॥

रघुपति पै हरसाया हो दरसाया अपना भावने,
कहिं पभणों पूज्य दयाल, मायत आज्ञा लावो हो,
फिर दैसां दीक्षा आपने। नित पढ़िये ज्ञान विशाल ॥ पूज्य० ७

बुद्धि विलक्षण जाणी हो कहि धारी शिक्षा स्याम री,
पुनि पढ़वा लागा पास। भोजन वेला नाया हो,
बुलाया पिण आवे नहि, भई भावज अति उदास ॥ पूज्य० ८ ॥

आंख्या से जल राले हों,
कई आलै भांवज बोलड़ा कहि मैं तो खिलवत कीध।
सांची किस विध कीधी हो, दे दीधी तरती मोभणी।
घर चालो अब पर सिद्ध ॥ पूज्य० ९ ॥

मैं नहीं चालन हारो हो,
भौजाई थांरो मान स्यूं, कहीं जीवन भर उपकार।

आज्ञा वेग दिराना हो समझना सब परिवार को।
थैं स्याना छो अनपार ॥ पूज्य० १० ॥

॥ दोहा ॥

डर दिल लाई दौड़गी, सत्वर सा ससुराल।
चवी बात चतुरा सवै, जगी विरह की झाल ॥१॥
झट आया जनिता जनक, भ्रात आदि परिवार।
समझावे सारा सयन, परत नयन जल धार ॥२॥

ढाल ५४मी

तर्ज—दादरा

हां रे सज्जन अब ले ओरे सवरियां,
करम दलन मैं तो कसी है कमरिया ॥ टेर ॥
जग जजाल को जरद हटा के,
सजम लेवागां इन भोली सी उमरियां ॥ हांरे १ ॥
भाग्य भले सुर तरू से गुरु की,
म्हांने अचानक लगी है खबरिया ॥ हां० २ ॥
भव २ में हम भटके खाये,
जैसे पिताजी डोर की चकरियां ॥ हां० ३ ॥
कैसे लालच में मुझे फंसावो,

ब्याह न करू गो मैं तो चढ़ के चंवरिया ॥ हां० ४ ॥
सकल जीवों की रक्षा करेंगे,
लोच जो करेंगे फिर केस भवरिया ॥ हां० ५ ॥
हम आवेंगे न हरगिज घर को,
झटक सिधासों अब गोचरियां ॥ हां० ६ ॥
महर करी झट आज्ञा समर्पो,
बीत रही है अमोलक घड़ियां ॥ हां० ७ ॥

॥ दोहा ॥

राख्यो रहै न बीर यो, तात कहें तिन वार ।
मैं तो सुत संग लेव सूं सखरो संजम भार ॥१॥
माता मासी पिण थई, संजम लैण तयार ।
कार्तिक वदि छट को चतुर, दीक्षा ली दिलधार ॥१॥

ढाल ५५मी

तर्ज—आवो आवो जल्दी आवो

सज्जन आवो हर्ष मनावो, पूज्य राज का गुन मुख गाओ ॥ टेर ॥
जैन बीर रघुपति ने कैसा जैन झण्डा लहराया है ।
मिथ्या मत को मरदन करके स्याद्वाद समझाया है ।
दीक्षा चारों को दिलाई, खुसी जग बीच छाई ।

सेरी ग्यान की बजाई, करी ध्यार की चढ़ाई।
बांया भाया सब ओलू गावो ॥ स० १ ॥

केई गावों में घूम २ कर दया धर्म फैलाया है।
फागुन चौमासी के हित स्वामी सहर सोजत जो आया है।
अर्जुनदासजी जो आया, नगजी माणक सुहाया।
तिहुँ दीक्षा वापै पाया, रंग वैराग का छाया।
ज्ञान ध्यान से प्रेम बढ़ावो ॥ स० २ ॥

वहां से पूज्य पधारे गुर्जर, देश सुधारन गुण दरिया।
कच्छ काठियावाड़ फरस के, फिर मालव को संचरीया।
किया उज्जैन चोमासा, वहां से खाचरोद खासा।
कोटा बूंदी मे प्रकासा, वीर वाणी को विलासा,
मुनि मिश्री कहे सीस झुकावो ॥ स० ३ ॥

॥ दोहा ॥

दिल्ली जम्बू आगरा आदि मुलुक पंजाब।
विचर्या वारूंपणें करन धरम उच्छाह ॥

ढाल ५८मी

तर्ज—तूं तो शिव २ ध्यान लगायरे

पेखो पूज्य तणो परतापरे, अतिशय धारी आपरे ॥ टेर ॥

हिंसा पे जो धर्म बताते, करते आरम्भ की छापरे ॥ पेख० १ ॥
बादशाह के अग्र दिल्ली मे दिया मिथ्या मत कायरे ॥ पेख० २ ॥
सांत छटा मुखड़ानी निरखी, पल में प्रलय है पाप रे ॥ पेख० ३ ॥
कर विहार मरूधर में पधारे, मेड़ते भक्ति अनाप रे ॥ पेख० ४ ॥
तेरह ठाणे चौमासो ठायो, गहरो मेल मिलापरे ॥ पेख० ५ ॥
भीपम को भगवति बचावै, कर मोटी धनियाप रें ।, पेख० ६ ॥
करे कुबुद्धि तर्क अणूती देन गुरु सताप रे ॥ पेख० ७ ॥

॥ दोहा ॥

साय सिमृथमलजी तवै, अरज करैं करजोड़ ।
क्यूं पयूपान करा रहै, यह सिष अहिसम और ॥१।
गुण ग्राहकता वदन में, रंचन दीसे नाथ ।
तदपि आप पढ़ा रहें, नहिं सुधरैं लखवात ॥२॥

ढाल ५७मी

तर्ज—बंभन कारे आठ कुआ नव वावड़ी

अहो श्रावक जी सत्य कथन सब तांहरो,
अहो श्रावकजी पै न कियो कहिं जाय,
अहो श्रावकजी ज्ञान देवन फर्ज मांयरो ।
अहो श्रावकजी आगे भावी वस प्राय ॥ १ ॥

अहो श्रावकजी करन होऊ मारा काम सूं ॥ टेर ॥
अहो श्रावकजी वीर प्रभु जामात ने,
अहो० समझायो घर प्यार ।
अहो श्रावकजी मैं पिण जानूं उन समो,
अहो० इण भीषम रो अवतार ॥२॥
अहो श्रावक जी किणी तरेह का काठ ने,
अहो श्रावकजी कारीगर देत सुधार ।
अहो श्रावकजी एता द्रश मम धारणा ।
अहो० साच बणो व्यवहार ॥ अहो ३ ॥
अहो भवियणजी चौमासो रस रंग सूं,
अहो० रह्यो धर्म ध्यान को ठाठ ।
नूतन केई प्रति बोधिया,
अहो० मिथ्या मतने डार ॥ अहो ४ ॥
अहो० श्रावकजी कार्तिक में कुछ पूजजी,
अहो० खेद पाय तन मांय ।
अहो० जिन सूं व्यार हुवो नहीं,
अहो० अवरांने श्राज्ञा फरसाय ॥ अहो० ५ ॥

॥ दोहा ॥

विहार कियो संत सात ही, भीखम उनके साथ ।
छाने भगवति लै चल्यो, खबर नांहि रघुनाथ ॥१

अवर सन्त भेजी त्वरित, मंगवाली है तेह।
उण दिन सूं श्री पूज्य के, उपनो मन सन्देह ॥२

ढाल ५८मी

तर्ज—मैं दूलारा गीत की

सातां हुवां सूं पूज्यजी जी कांई, कीधो हो मेड़ता सूं विहार।
गांव बलूंदे आविया स्वामी उतर्या हो वहां खास बजार ॥१॥
सुणजोजी महिमा पूजरी ॥ टेर ॥
माजन मिलने आविया, गुरु दाख्यौ हो सखरो उपदेश।
श्रद्धा रुच गई सर्व ने, कांई टाल्यो हो अज्ञान क्लेस ॥ सु० २ ॥
जयतारण हो चालिया, कांई बीलाड़े हो विज्ञान भंडार।
उपसर्ग सय्या मोकला कांई दिन दस हो नहिं लाधो अहार ॥सु०
उदयसागर नामै जति कांई रातै आयो हो मारणरे काज।
पूज्य भरोसे मगनेस रो, कर दीनो ते कुपात्र अकाज ॥ सु० ० ४
भय पामीते भागियो, कांई कड़वा हो फल पापना जान।
अल्प समय में उपनो, कांई रक्त पित्त हो रोग महान् ॥ सु० ५ ॥
दिन ऊगों दुनियां सबै, ढंग देखी हो कीनी बहु रीस।
पूज्य पर्यपै मत कर, ज्यूं होवे हो भाख्यो जगदीश ॥ सु० ६ ॥
दिन पदरा तक ठेरिया, बहु पाया हो श्रावक प्रतिबोध।
भली तरह चर्चा करी, सद्दर्सन हो समझायो सोध ॥ सु० ७ ॥

नोधाणा सूं आविया, श्री जयमलजी हो गणी दर्शन काज।
सोजत सर्व पधारिया, चौमासा फरमाया राज ॥ सु० ८॥
समत अठारे तेरह का कांई राजनगर भीषम चौमास।
तीन ठाणे सूं तहमने, सुन श्रावक हो पाया उल्लास ॥ सु० ६॥

॥ दोहा ॥

जयमल शिष वक्तेश पुनि, भीषम रू वछराज।
राजनगर राजी मना, गये चौमासे काज ॥१॥
जसधारी जयमल प्रते, पूज्य कहे प्रकास।
भोलप कीन्हीं भेजने, तीन्हों ने चौमास ॥२॥

ढाल ५६मी

तर्ज—जकड़ी

पूज्य चौमासो सोजत ठावियो, भली प्रकारे धर्म दृढ़ावियो।
नगजी टोडरमल मन भावियो, विनय करी ने ज्ञान वधावियो॥

तोटक

वधावियो है प्रेम अधिको, इधर भीषम की सुनो।
मेद पाट सुराज नगरे, सग रासिक है घनो॥
व्याख्यान वाणी श्रवण करके हरस पाया जन जनो।

करमगति ना टरै लाखों वीर बचना सूं भणो ॥ १ ॥
जीवा जतिनो पुस्तक स्थान में, बहुत दिनों सूं पढ़िया मिलान मे,
प्रति लेखन करे भीषम मान दे, मगन भयो है उल्टा ज्ञान में।
असजति अवृति केरा, यदि बछे प्राणए, वाथवादे दान उनको
होय समकित हानए, रुच गई भीषम हिये उलट बातें आनए
परूपन वह करत चौड़े, लगी खेंचातान ए ॥ २ ॥
साधुत्रय के श्रद्धा बैठगी लार कई श्रावक कै चैटगी,
भल भायां ने पूज्य की भेट की, बातां सुनादी बरती ठेठरी।
चौमास उतरयां आप मिलियो ग्राम ज्ञासीआट में,
वक्तोजी रह गये लारही, सिरियारी केरे घाट में,
वदना की पूज्य को भीषम झुकायो माथ ए,
किंतु न साता पूछ ही ना दियो सिर पर हाथ ए ॥ ३ ॥
नयनाश्रुत हो भीषम यों कही, आज्ञा खंडित मैं कीधी नहीं,
चति करी ना साधु पण महिं, नाथ निवाज्यो मैं बालक सही।
बाल निजको जानिके प्रभू शरण में ले लीजिये,
गरचे गलती होगई तो दंड भी दे दीजिये ॥
पूज्य पभणे होगई है, श्रद्धा तुज प्रतिकूल जो।
फर विमल उसको दंड लै फिर मानले थई भलको ॥
भीषम भाखे पूज्य सुणी जीए, चुगल कथन पै ध्यान न दीजिये।
कृपा मौपे दूनी राखिये, औगुण म्हारा आगा नाखिये। तो.
नाथ मेरी धारणा वो सूत्र के अनुकूल है।

अगर उनको कहै झूंठी, सख्त उनकी भूल है ॥
अनुकूल कैसे कह रहा, मूरख तुझे क्या ध्यान है ।
धर्म काही वीज जानो, दयारू वह दान है ॥

॥ दोहा ॥

मिश्र काम में मूंन तो, रखते हैं मुनिराय ।
याते श्रद्धा छोर दे, जो तिरवा की चाय ॥१॥
हेतू नय उपयन करी, भीषम आण्यो ठाय ।
दंड देय कर सुध तवै, गुरू लियो अपनाय ॥२॥

ढाल ६०मी

तर्ज—नमूं एक दिवस लंका पति

पूज्य कहै तूं जाय ये, राजनगर के माय ये,
कुछ भाय ये श्रद्धा फिर शुद्धि करो ए ।
ले आज्ञा तिणवार ए, कीनो ताम विहार ऐ समरारहे ।
बगतोजी उत मिल गया ए ॥ १ ॥
बातां चली विसाल ए, कहे बक्कों बाचाल ए,
तूं बालए भली श्रद्धा किम छोड़ दीए ।
फिर जच गई जिय मांहए राजनगर गयो नांय ए ।
मुनि सांय ए छांने श्रद्धा जोड़दीए ॥ २ ॥

दढ दूसरी वार ए दियो नागोर मझार ए,
जय लार ए, मास बारे लो राखीयो ए।
जयमलजी लखहान ए पूज्य प्रते कहे आनए धर ध्यान ए।
राज सुधारो राहने ए ॥ ३ ॥
शिक्षा देत अपार ए मारग में सुविचार ए,
गुण सार ए, जचे एक तिणरे नहीं।
ए बगड़ी सेखे काल ए, आया पूज रसाल ए सुविसाल ए।
संघ करें सेवा सही ए ॥ ४ ॥
भीषम से रघुनाथ ए, चर्चा की इह भांति ए,
धर खात ए, नरनारी तुम्हें साभलो ए।
उदय मिथ्यात सजोर ए, भीसम लयो झकोर ए, तियठोर ए,
वक्त आखिरी तीसरी ए ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

खैंच वचन रघुपति कहै, भीसम ने तिनवेर।
अखैं साख आगम तणी, न्याय बात रसहेर ॥१॥

ढाल ६१मी

तर्ज—चुराकर लेगया कोई मेरी जंजीर सोने की

बताता पाप तू कैसे, दया अरु दान में भोला।
खोल दगसूत्र तो पढ़लै, खायगा नर्क मे झोला ॥ १ ॥

हूर जहां सूत्रों के अन्दर कि, सरबत प्रेमका घोला।
अरे कूतर्की बनकर तूं, उठाया हमने अब रौला॥ २॥
साधु श्रावक के वृत्तों में, फर्क रत्ति मेरू सा जानो।
बताता एक अज्ञानी, चलाके झूंठ का गोला॥ ३॥
दया का विवेचन गहरा, चला है प्रश्न व्याकरण में।
साठ जो नाम है वापें, बताया धर्म का ओला॥ ४॥
भगवती सूत्र में प्यारे, विवेचन दान का देखो।
अभग है द्वार श्रावक का तु गियापुर के अनमोला॥ ५

ढाल ६२मी

तर्ज—पनजी मूंडे बोल

दया दान में पाप बाल कैसे बतलाता है, होश नहि लाता है। टेर
टाव २ सूत्रां में वर्णित क्यों न अमल में लाता है।
वीर वचन के विरुद्ध जाय क्यों कर्म कमाता है॥ द० १॥
धरम रुचि अरु श्री मेघरथ पै, क्यों ना नजर जमाता है।
नेमनाथ भगवान् वाडेसे, जीव बचाता है॥ द० २॥
कुतर्को से काली आतमा, अपने हाथों बनाता है।
फवे नहीं ये वचन फुटरा, लोग हसाता है॥ द० ३॥
नवभांगे हिंस्या नहि करणी, आगम पाठ दिखाता है।
नवभांगा से दया पालणी, कैसे छिपाता है॥ द० ४॥
जीव बचाने के हैं कामी, पाप कैसे छिप जाता है।

पाप करेंगे सो भुगतेंगे, सूत्र जताता है। द० ५ ॥
चोरी करी उसी चोर को, राज पकड ले जाता है।
किंतु उनके मायत को कब सजा दिलाता है ॥ द० ६ ॥
झूठ मूंठ गप्पों के गोले, भोलों बीच चलाता है।
परभव का अये मूर्ख, जरासा खौफ न खाता है ॥ द० ७ ॥

॥ दोहा ॥

कहे भीष्म करुणा कहि, दोय भेद जिनराज।
सावजरू निर्वद सरस, मानो गुरु महाराज ॥१॥
निरवद्य आज्ञा मांय ने, सावज आज्ञा बहार।
मो अनुकम्पा आदर्याँ, वढ़े बहुत संसार ॥२॥

ढाल ६३मी

तर्ज—घनघोर घटा में कमली वाले ने

मेरी तो श्रद्धा सच्ची है कैसे इनका परित्याग करू।
इन पे ही अटल मैं रह करके जल्दी भवसिंधु पार करू ॥ टेर ॥
सावज करुणा करके बीर ने गोसालक को बचवाया।
छद्मस्थ पणे से चूक गये श्रीभगवति में खुद दरसाया। मेरी० १
नन्दन मणिहार ने दान दिया, जिसका फल कैसा बुरा लगा।
मर हुआ विराधक पशु बने, ये ज्ञाता सूत्र से सिद्ध करू ॥ मेरी० २

जिन रखने रैनादेवी की, कर करुणा वो बेमोत मरा।
फिर गया घोर वह नर्क बीच, इसलिए दया को दूर करू ॥ मेरी ३
उत्तराध्ययन मे कहा दान से, नर्क सप्तमी जाता है।
अध्याय चौदवें साफ लिखा, नहि मानू तो मैं नर्क पडू ॥ मेरी० ४
असजति को दान देने से, भगवति पाप बखाना है।
नहि छाना आप भी जान रहे, फिर कितनी बातें पेश करू ॥मेरी ५

॥ दोहा ॥

पुण्य पाप तजना त्वरित, छोरत कर्म कलेश ।
विन त्यागे मुक्ति कहां, जाहिर कह्यो जिनेश ॥१॥

ढाल ६४मी

तर्ज—मेरे मोला बुलाले मदीने मुझे

मेरे स्वामी ये बातें मानो सही, मेरी श्रद्धा रतिभर झूंठ नहीं। टेर
जो मिश्र श्रद्धा आपकी, वह सूत्र से प्रतिकूल है।
आडा देना खोलना ये साधुओं की भूल है।
आहार व्रत में न बाहिर जानो कहीं ॥ मेरे० १ ॥
आस्रव को अजीव कहना ये भी गलती सख्त है।
दान का फल एक ही, संसार वृद्धि फक्त है।
साधु टाल के दान कुपात्र सही ॥ मेरे० २ ॥

गल्त फहमी कर रहे गुरु ? एक मैं न अनेक हूं।
फिक्र तुम्हें करना पड़ेगा, इसलिए मैं देख हूँ।
सत्य कहूं जरा सा झूठ नहीं॥ मेरे० ३॥
फर्क मेरी श्रद्धना में एक भी बतलाइये।
चुगल खोरों के कथन से ऐसे न फरमाइये।
जग छोड़ के आप पै दीख गही॥ मेरे० ४॥
विनय भक्ति हुजूर की मैं, जिगर से करता रहूं।
आज्ञा मुझे मन्जूर है, अरु दिक्कतें सारी सहूँ।
श्रद्धा छोड़ सकूं नहि जेह लही॥ मेरे० ५॥

॥ दोहा ॥

प्रगट कहैं है पूज्यवर, भीषम ने तिणवार।
जुलुम करत मूरख जवर, देत प्रभू पे आर॥१॥
निस्संकित जिन वैन है, त्रिहूं काल त्रय जोग।
तिनको तूं चूका कहै, उदय कर्म के रोग॥२॥

ढाल ६५मी

तर्ज—गोरा वदन मुख चांद सा

बीर वचनों से अगरचे मुढ़ तू बढ़ जायगा।
कर्म का बंधन जड़ा के, खता परभव खायगा॥ टेर॥

महावीर जो चूकि गये, ये लफ्ज कैसे कह रहा।
यहुँ ज्ञान पूरण होय के, प्रभु पाप कैसे बढ़ायगा ॥ वीर० १ ॥
झूठ की शंका से जिनवर छद्मस्थ पन बोलें नहीं।
ये युक्ति भी निर्मूल है, जीता चार कहा जायगा ॥ वीर० २ ॥
दस पूर्वधारी के वचन भी मान्य आगम में कहा।
उपयोग से गरचे कहे तो, सुत केवली कहलायगा ॥ वीर० ३ ॥
दया का दो भेद यह आगम में कहां भी है नहीं।
दया जो सावद्य है फिर, हिंसा क्या पद पायगा ॥ वीर० ४ ॥
आहार होगा वृत्त में तो तप तपेगा कौन नर।
इस युक्ति को खंडन करन अब तर्क क्या दिखलायगा ॥ वीर० ५ ॥
छोड़ दे मिथ्यात्व को दिल में दया को पकड़ ले।
बिन दया जीवन वृथा, दोजख में जा धंस जायगा ॥ वीर० ६ ॥
विश्व के सब धर्मधारी, रक्षा करें स्वीकार है।
बहुत ज्ञानियां का चोर बन तूं, झूठा पंथ चलायगा ॥ वीर० ७ ॥

ढाल ६६मी

तर्ज—ईडर आमा आमली रे

आडो देणो खोलणोजी, जतना सूं मुनिराय।
आज्ञा आगम में सहीजी आचारंग दिखलाय ॥ १ ॥
अज्ञानी छोड़ अणूती तान ॥ टेर ॥
दशवेकालिक,धैन,पचमेजी, टाटी परीच कनात।

आड़ा आदिक आज्ञा लहीजी, दूर करैं मुनि सात ॥ अ० २ ॥
जैना सूं चालत बैठतांजी, भोजन भाषण जान ।
सोवत तिष्ठत वे नहीं जी, जीवां केरी हान ॥ अ० ३ ॥
उत्तराध्ययन छब्बीस में जी, वरज्यो उत्तरन हेत ।
माठाभाव पैदा करैजी, चित्रामादिक सेत ॥ अ० ४ ॥
मिश्र बोल चाल्यां घणाजी, आगम में बहुठाम ।
जिनवाणी जानी नहीं जी, व्यर्थ बनै बदनाम ॥ अ० ५ ॥
धर्म अधर्म भैलाहुवांजी होय मिस्रनी थाप ।
तिण में वाणी वावर्यांजी, लागे बहुलो पाप ॥ अ० ६ ॥
गुण ठाणो मिस्रज कह्योजी दृष्टि मिस्रज देख ।
मिस्र पक्ष वखाणीयोजी, प्रत्यक्ष आगम पेख ॥ अ० ७ ॥
भगवती उत्तराध्ययन में जी असजती ने दान ।
गुरु बुद्धि सूं देवतांजी, लगे मिथ्यात्व महान् ॥ अ० ८ ॥
गुरुता है पिय पाठ छेजी, दान निषध्यो नाहीं ।
नन्दन मणिहारक भणीजी, समकित दूषित जोय ।
याते वीराधक हुवोजी, दान थकी न होय ॥ अ० १० ॥
जिनरख मर नर्कों गयेजी, विषय लपट तेह ।
सो अनुकम्पा तिण जगेजी, देवी साथे नेह ॥ अ० ११ ॥
माहणो २ वचन छेजी, आंख्या खोली जोय ।
कृष्ण श्रेणिक पडवाजी, डूबी पिटाई सोय ॥ अ० १२ ॥
दया केरा रूंखड़ाजी, साधु श्रावक दोय ।
कष्ट पड्यौ छोड़े नहींजी, साख भरे छे लोय ॥ अ० १३ ॥

॥ दोहा ॥

रायप्र सेनी में चल्यो, दान साला अधिकार ।
राय प्रदेसी ने किया, राज भाग जो चार ॥१॥
प्रथम पायो मुकती तणो, देत करम दल काट ।
परत करे संसार नो, रूंध देवे नव घाट ॥२॥

ढाल ६७मी

तर्ज—नणदल ए नणदल थारे चुड़ले रंग घणो

पुण्य सखाही धर्मनो, पुण्ये जय जयकार भीसम ।
पुण्ये पद चक्री तणो, पुण्ये जगपति सार भीसम ॥ १ ॥
पुण्य निपेधे पापीया ॥ टेर ॥
त्रयो दश गुण ठान पै, पुण्य प्रकृति जान, भीसम ।
केवल आदिक मानिये, पुण्य तने परमाण, भीषम ॥ पुण्य० २ ॥
जाज छोड़णा जोग है, होवां सिधु पार, भीसम ।
अधविच में तजसी तिके, डूबां काली धार, भीसम ॥ पुण्य० ३ ॥
पुण्य आदरखो जेतले, होय अजोगी जीव, भीसम ।
फिरतज वो निरसक सूं पुण्य धरमरी नींव भीसम ॥ पुण्य० ४ ॥
मरणंपि सपुन्नाण, उत्तराध्यैयन में पाठ, भीसम ।
पंडित मरण मरतों थकां, काटे कर्मज आठ, भीसम ॥ पुण्य० ५ ॥

आश्रव हेतु छे कर्मना, ताते जड पैचान, भीसम।
एकन्त चेतन माननो, समकित रीह्वै हान, भीसम ॥ पुण्य० ६ ॥
स्वच्छदाई छोड़ दें आरोमत अभिमान, भीसम।
दुर्लभ समकिद जीवनै, अनन्त भवा में मान भीसम ॥ पुण्य० ७ ॥
जुम्माली क्रिया करी, पाल्या सुध पचखान, भीसम।
गर्ज सरी नहीं तेहरी, जिन आज्ञा बिन ज्ञान, भीसम ॥ पुण्य० ८ ॥
वार २ मिलसी नहीं, ओ अवसर बिन मोल, भीसम।
हारे मत हरदम कहूँ, मिथ्या मतरी छोल, भीसम ॥ पुण्य० ६ ॥
वैर रती थांसूं नहीं, भरमायो नहीं मोय, भीषम।
श्रद्धा भ्रष्ट सूं मांयरो, मन मिलैं नहीं सोय, भीसम ॥ पुण्य० १० ॥

॥ दोहा ॥

तुज लारे सब नीसरें, परवा जिनकी नांहि।
श्रद्धा भ्रष्ट राखूं नहीं, सोच लीजे मन मांहि ॥१॥
मुज आतम मुझे तारसी अवर ने तारण हार।
सुद्ध श्रद्धा छोड़ूं नहीं, छोड़ूं प्राण अबार ॥२॥

ढाल ६८मी

तर्ज--खड़का

मानले बात एकान्त धर खांत तू,

तत नहीं पथ नूतन निकालो संत महन्त के सरण भव अतहवै।
पुराकृत पाप को दूर टाले ॥ टेर ॥

वहुत समजावियो, मान तुझ छाविंयो,
पाईयो ज्ञान सो जेर व्हैगो, अङ्क वुरो आईयो, नरक पथ धाईयो।
वाहियो बीज कटु फल ही देगो ॥ मान १ ॥

पच्छ को जोर मत रख मूरख मतैं,
रच नहीं मान हुँ वात केनी स्वच्छ बिन गच्छ में रात इकना टिकै।
काढ़तां वार लागे न जेन ॥ मान २ ॥

सत समुदाय स्वहस्त पैदा करी,
जाय तो जोखम होय किनको, सैकडों वादि मारन मतै ऊठिया।
तनिक डर राखियो नहीं उनको ॥ मान ३ ॥

माहरा वृत ने अचल पालन करूं,
स्वीकृत अकेलो रहन माने लाख लटका करें आय पावां परै।
निश्चय राख सौं तो नहीं ही तौने ॥ मान ४ ॥

वीर समरांगणे कायर वह पड़े,
पान सिडियो सवकूं विगाडै, शिष्य कुशिष्य सुशिष्यदूषित करें।
न्याय के ग्रन्थ चौडै पुकारें ॥ मान ५ ॥

॥ दोहा ॥

चैत्र सुकल नवमी भृगु, संमत अठारा जान।
अब्द सोले बगड़ी विषे, रघुपति गुणमजि खान ॥१॥

गच्छ बारे भीषम भणी, काढ्यो जाण कपूत ।
चतुर पुरुष जाणी जरद, काली तस करतूत ।.२।।

ढाल ६९मी

तर्ज---डोरी तो भागी रे रसिया करतले

बचन सुणी ने भीषम भय लह्यो, गद गद बोल्यो बैण सौभागी
सीगत म्हारी बारे होवसी, आप सकलश सैण; सौभागी ॥ १ ॥
अरजी धारो हो रघुपति मांयरी, गच्छनायक गुरुदेव सौभागी ।
अब नहीं करसू ऐसी परूपना, गुप्त राखसू ऐव सौभागी ॥ अ०
म्हारी माता वे फिर बांजड़ी दो बातां किम थाय अज्ञानी ।
दोय बखत मैं दंडज दे दियो अब तो सजम आय, सौभागी । अ.
सत मिलिने केई बिनवै, माफ करावो राज, सौभागी ।
उपयोग राखसी एह भली तरह, सुन बोल्या गुरुराज सौभागी ।
थे पिण साथे इनरे निकलो, नहिं है अरजरो काम सौभागी ।
भय सब पाई ने सुस्ता पड़गया विहार कियो पूज्य ताम, सौभागी ।अ.
वायु वानैरे गैरो तिणसमे, होती अजैणा जाण सौभागी ।
चंडावल रे मारग छतरियां, ठेर्‌या पूज्य सुजान सौभागी । अ
भीसम आकर फिर चरणों पड़ियो, रुदन कियो अनपार सौभागी ।
एक न मानी परम गुरु तिन समै, श्रद्धा से अति प्यार, सौभागी ।अ.
छत्तीस साधु ने फंटालिया, भीसम जावे सेवाज सौभागी ।
छब्वीस तो फिर आया पूज्य पै, माफ करो महाराज सौभागी । अ.

दंड देईने भेला भेलिया, लारे दससूं फेर, सौभागी।
सात ठाणे सूं स्वामी रूपजी, फटगया गुर्जर लेहर सौभागी ॥अ० ८
बगतोजी नै भीखम दूसरा लीजो भारमल तेह सौभागी।
विचरे गांवों आदर विन तिहुँ, ये विचार्यो तेह, सौभागी ॥अ. ६

॥ दोहा ॥

काम जमे किम मांयरो, इसड़ी मन आलोच।
सिरियारी वाटे थई, गयो मेवाड़े पोंच ॥१॥
रात रह्यो कोहुस्थान के हाजी नामा पीर।
वस हो गयो दुनिया कहै, सत्य न जानहु धीर ॥२॥
गछ बारे टलिया तिके मिलिया साधु और।
भीखम ठाणे तीन दस, जाजो बंधियो जोर ॥३॥

ढाल ७०मी

तर्ज--हां रे चोहटारी चलगत छोड़ दो

हांरे आंतो नूतन पंथ निकालियो,
हांरे आंतो जोधाणा रे मांय।
हांरे ए तो तेरे साधु ठेहर्या हाट मे,
हारे ए तो तेरे ही मिलिहा भाय ॥ १ ॥
हांरे प्यारे निन्नव सगत छोड़ दो ॥ टेर ॥

हांरे एतो देख सिधी फतेचन्दजी,
हांरे ए तो कह्यो हंसी के साथ।
हांरे थांरे जुगति जोड़ी जो मिल गई,
हांरे तुम तो तेरा पंथ कहाय॥ हां० २॥
हां रे एतो तिन दिन सू ए तेरिया,
हां रे ए तो तेरिया गोचरिया जाय।
हां रे ए तो चौड़े दोषलो भोग वे,
हांरे एतो मारग सेवा चाय॥ हां० ३॥
हां रे ए तो सेवा करावे सतियां कनें,
हां रे ए तो बांधे पेटरी पाल।
हां रे ए तो निंदक नामी निकल्या,
हांरे ए तो चलें कपट री चाल॥हां० ४॥
हांरे ए तो श्रावक रत्न करंड सा,
हांरे वांने जहर को बाटको कहाय।
हांरे ए तो निज टाली गिणे और ने,
हांरे ए तो एक कुपातर मांय॥ हां० ५॥
हां रे ए तो देवगुरु ने चूका कहे,
हांरे ए तो निसिदिन औगुण गाय।
हांरे ओतो भेस वदियो है आरे पंचमे,
हांरे यांके दया दान न आवे दाय॥ हां. ६॥
हां रे प्यारे अब सुण जो चित लाइने,

हां रे प्यारे पूज्य तणो अधिकार ।
हांरे ए तो मेड़ते नगर पधारिया,
हां रे ए तो कियो चौमासो सुखकार ॥हां. ७॥

॥ दोहा ॥

सहर मेड़ते से त्वरित, कर विहार मुनि ईश ।
गांव भंवाल बिराजिया, पूरण धर्म जगीश ॥१॥

ढाल ७१मी

तर्ज—सदा तुम जैनधर्म पालो

वसैं कुन्दनमल झांमड़ वांपै तस नन्दन गुणधार ।
चौथमल्ल तन पै चतुराई, ओप रही अनपार ।
प्यार रस भरियो भारी, अवस्था जोवन सतवारी ।
लायकी बोलन की सोहे, सभी सज्जन का मन मोहे ।
मान निज मन का धोये वो ॥ १ ॥
पूज्य को सुजस जगत छायो, भव्य मानव के मन भायो ॥ टेर ॥
खावे वदोला चौथमल नित्य, जमो व्यावको रग,
पूज्यराज की वाणी सुनके आनन्द उपनो अग ।
माता से अर्ज गुजारी, आज्ञा झट देदे महतारी,
पूज्य से सजम लेले सूं, जीवन भर साधू रेहसू ।
झूठ नहीं मुख सूं कैसू वे ॥ पूज्य० २ ॥

माता सुन के रोने लागी, बद्दे लाल ! हालाल !
व्याह करत क्या बनें वैरागी, उठे बिरह की जाल ।
हाल है उम्मर भोली, सुणासी कुण मीठी बोली,
सांगवा औरों के जासी, होगी घर हानी जगहाँसी ।
सयम में सुख क्या पासी वै ॥ पूज्य० ३ ॥
सजम का सुख सब से आला, जानन वाला जाने,
झटपट से तूं आज्ञा देदे माता मतना टारे ।
भोग है रोग खजाना ज्ञानी फिर पाप बखाना,
रोना सब मतलब का कहिये, आखिर में साथ कौन रहिए ।
याते हम संजम गहिये वै ॥ पूज्य० ४ ॥
अति हट से दीक्षा ले लीनी, टोडर शिष्य असीचन्द,
तासु शिष्य गुलाबचन्द के शिष्य चौथ गुणवृन्द ।
लाड़ में रघुपति पासै, विनय से पढ़े ज्ञान जासे,
अठारे सोले की साले, अगहन सुदि पचम सुविसाले ।
आनन्द से मुनि पण पाले वै ॥ पूज्य० ५ ॥

॥ दोहा ॥

पाली होकर पूज्यजी, जावे गढ़ जालौर ।
होय समदड़ी जोधपुर, पोंचे सुजस झकोर ॥१॥
साधु साधवी सकल ही, मिले जोधपुर आय ।
चऊ संघ में चन्द्र सम, रहें रघुपति सो भाय ॥२॥

ढाल ७२मी

तर्ज—खेलण दो गणगोर

सुजस बध्यो घन घोर पूज्य को सुजस बध्यो चहुं ओर ।
अजी ए तो मुनि मण्डल सिर मोर ॥ पू० ॥ टेर ॥
गढ़ जोधाणे जमघट जाजो, महिमा ठोरहि ठोर ।
अजी जेतसी जयमल जोड़, पूज्य की ॥ पू० १ ॥
नगजी टोडरमल रायचन्द से, गहरा ज्ञान झकोर ।
अजी वांरे नेहाचन्द्र चकोर ॥ पूज्य को० २ ॥
केई तपसी केई ज्ञानी ध्यानो, केई व्यवछिया ओर ।
अजी चर्चा में टीकमसीं केरी, जुड़े कौन आजोर ॥ पू० ३ ॥
रत्नकुंवर आदिक सतियां, सीयलवती अनमोल ।
अजी अकनकुवारी कोर ॥ पूज्य० ४ ॥
खीमसी सिमृथ गढ़मल जैसे श्रावक गुण के मोर ।
अजी वे तो सेवा करें करजोर ॥ पू० ५ ॥
वड़ी वायां रो साथ विचक्षण समकित सैठी सजोर ।
अजी वे तो अटल मेरू सम तोल ॥ पू ६ ॥
चार तीरथ की सभा रसीली आफू क्यारी सम ओर ।
अजी देखी उतर्‌या पाखड्यों रा तोर ॥ पू० ७ ॥

॥ दोहा ॥

फतेचन्द सिंघी तणी, रामकुंवर वड़ बेन ।

वीकानेर ब्याही उसे, समकित धारी सैन ॥१॥
वीकानेर की बीनती, रामकुंवर की मान।
आठ ठाणे जयमल गुरु, कीनों प्रथम प्रयान ॥२॥

ढाल ७३मी

तर्ज—म्हारा छेल भंवरिया को कांगसियो

म्हारा परम पूज्य रघुनाथ सादड़ी सैर पधारे रे।
क्रिम क्षेत्र निकारे रे ॥ मारा० ॥ टेर
गोडवाड़ रा जती घणेरो घमण्ड जिगर में आणे रे।
कैसे ढूंढिया आवे इधर वे, संक हमारी माने रे,
यूं बातां बगारे रे, ॥ मारा० १ ॥
सन्त तपोधन अतिसय वाला इगतिस साथे लीधारे।
सोजत सेती व्यार करीने राणावास डेरा दीधारे।
वादी को मान बिदारे रे ॥ मारा० २ ॥
कांठा ने सर करता पडिया काठा परीसह आई रे।
किंतु परवा करी न स्वामी, दूनी बहार बजाई रे।
सूता ने आन जगारे रे ॥ मारा० ३ ॥
जोजावर में जातों जरदी, जतियां पायो मोको रे।
गोडवाड़ में घोचा घालसी, इत साधां ने रोको रे।
रात को लाय लगाड़े रे ॥ मारा० ४ ॥

लाय लगांतां रावत देख्या, जतियांलारे लागे रे।
कपड़ा खोस कूट किया नागा, मूंडा ले पड़ भागे रे।
लोक मिल लाय बुझावे रे ॥ मारा० ५ ॥
प्रात पूज्य उपदेस सुनायो श्रावक वहुला करिया रे।
छोटा मोटा गाव फरसतां, घाणेराव विचरियारे।
दिवसनी बज गई बारे रे ॥ मारा० ६ ॥
प्यास थकी सब ही घबराया, बड़ तल ठेरया आई रे।
पाणी काजे पीरदानजी गया गाम के मांही रे॥
कुबद जतियों करडारे रे ॥ मारा० ७ ॥

॥ दोहा ॥

राजपुत्र को कथन कर, मुनि को गृह में लाय।
घाट कहि पात्रा मंहि; मट्टी दी वहराय ॥१॥
बहिर मुनि पात्रा विरचा, जती कहै जद आय।
क्या झोली के मांयनें, दो साधो दिखलाय ॥२॥

ढाल ७४ मी

तर्ज—चार पोर को दिन हुवोरे लाल

चमक्या सुन चातुर मुनि रे लाल, दगो हुवो है आज।
सुविचारीरे जतियां ने कहे जोर सूं रे लाल॥

तुमे कहो क्या काज ॥ च० १ ॥

साधा ने छेड़ो मती रे लाल, फते पाओला नाय रे।
जे जतियां कीधी जिकेरे लाल ॥
पूछोनी पहले जाय सुविचारीरे ॥ च० २ ॥

जति कहे सू पूछिये रे लाल, जैन धराओ नाम।
सुविचारी रे, मांस लाया किम वैर ने रे लाल ।।
इण ठाकर रे धाम सुविचारीये रे लाल ॥ च० ३ ॥

हाका मांड्या जोर सूं रे लाल, मिलिया लोग अपार।
सुविचारिरे देखो वहरत मांसनेरे लाल ॥
लाजे नहि है लिगार सुविचारिरे ॥ च० ४ ॥

लोक बोक समझे नहीं रे लाल, कहे द्यो झोली दिखाय।
सुविचारिरे, मुनि कहै चालो चौबटेरे लाल ॥
फिर कैसां कोई वाय सुविचारिरे ॥ च० ५ ॥

चोहटा में चारों दिसारे लाल, लोग मचायी रोल।
सुविचारिरे अब साधां री ऊंगड़े रे लाल ॥
देखो पल में पोल सुविचारि रे ॥ च० ६ ॥

॥ दोहा ॥

ठाकुर आयो ठेठ सूं, गढ़ सूं धरि घमण्ड।
रखूं वात जतियां तणी, करूं साध ने भंड ॥१॥

झोली झट दिखलायदो, साधों करो न झोर ।
अठे पोल चाले नहीं, चली घणी सी ठोर ॥२॥

ढाल ७५ मी

तर्ज--हो सरदार थांरों पचरंग लेरयो

मांस इमे नही वैरियोरे, राखो नी विश्वास ! हो सरदार ।
थैं तो पक्षपात तज दोनी म्हारा राज ॥ १ ॥
झोड झूंठो जतियां तणीरे खांत धरी कहां खास हो सरदार ।
थैं तो झूंठ आल मत दोनी मोरा राज ॥ २ ॥
ठाकर कहे झूठी नहि रे, विजनस लाया मांस ।
हो साधूजी थैं तो झटपट झोली खोलो म्हाराराज ॥ ३ ॥
खाली ढोंग बनायनेरे, करो धर्म को नास ।
हो साधूजी थैं तो झूठ सरासर बोलो म्हाराराज ॥ ४ ॥
तड़क कहे साधू जवेरें जो नहि निकल्यो मांस ।
हो सरदार बोलो थैं पीछे कई कर सो म्हाराराज ॥ ५ ॥
जो नहि निकले मास ही रे, देस्या लाख साबास ।
हो साधूजी म्हें तो थांरें पावां पड़स्यां म्हाराराज ॥ ६ ॥
झोली चवड़े कर दिवी रे, गिण के मुनि नवकार ।
हो सरदारा अब तो नजर खोलने देखो म्हारा राज ॥ ७
असल कमोदी पेखियारे, चावल चमकादार ।
हो सरदार अब तो कठे देवो ला लेखो, म्हारा राज ॥ ८

लोक सकल पावां पड्या रे, उतर गया जति नूर।
हो साधूजी अब तो गुनो माफ कर दीजो म्हारा राज॥ ६
धन २ सब जनता कहेरे बाव्या जसना तूर हो।
साधूजी गांव ने आप श्राप मत दीजो म्हारा राज॥ १०
आज पछे साधू थकीरे करां न खेंचा ताण।
हो साधूजी म्हें तो सिल्ला लेख रुपावां म्हारा राज॥ ११
बन्दोबस्त पक्को करीने, गढ़ में गयो राजाव।
हो साधूजी आकर गुरु को सीस झुकायो म्हारा राज॥ १२
पूज्य पास में आवियारे, परठी तेह सामान।
हो गुरुवरजी म्हांने अब तो दन्ड दिरावो म्हारा राज॥ १३
सारो हाल सुनावियोरे, पूज्य करें गुणगान।
हो मुनिराज थें तो आछो धरम दिपायो म्हारा राज॥ १४

॥ दोहा ॥

सन्त सकल सादड़ी सहर, जति आवतां जोय।
ननंनैचा वोहरां निकट बात करी विद्रोह॥१॥
ए आयां इन ग्राम में परसी दुष्कर काल।
वोहरा सब रीसाय के, आया बाहिर चाल॥२॥

ढाल ७६मी

तर्ज—झल्लारी

मत आवो म्हांरे सैर पाछा फिर जावो हो।

सुणो सन्तां आज २ जो आया तो पत्थर मार भगास्यां हो सुजान।
पूज्य पर्यंपै किण कारज वरजावो हो सुणो० ॥
मैं तो आकर जैन की ज्योति जगासां हो सुजान ॥ १
मरजी हमारी नहीं थानेदा मांहि हो, सुणों सन्तां आज २।
पूज्य सुणी ने वहीं तरुतल जा बैठा हो सुजान,
मगन ज्ञान में सब मुनिराय हो सुनो० ।
तप जप खप सब संजम में है सैंठां हो सुजान ॥२
रात पड़ी रवि अस्त होन की विरियां हो, सुनो भवियन
लोग बावल ऊठी अजब अनूंठी आई हो सुजान।
धूल कांकरा उड़ २ के आ पड़िया हो,
सुवरपा बरसी गहरी जोस भराई हो सु० ॥ ३
कपड़ा भींज गये मुश्किल सु पोथ्या बचाई हो सु०,
सीतल अनिल त्ते थर २ कम्पे काया हो सु० ।
और तपस्या परिश्रम जोर जनाई हो केजान,
लोग आन के कंटक बहुत बिछाया हो सु० ॥ ४
समपरीणामें सहन करै गुरुराया हो सु०,
रीस उनों पै रती एक नहीं आने हो सु० ।
क्रांति मचावे वेही बस काया हो सु०,
सुख दु ख निन्दा स्तुति तुल्य ते जाणे हो सु० ॥ ५

॥ दोहा ॥

अटल रहत धुन पै अहो, हंस हंस ह्वै कुरबान ।
वोही वीर वसुधा विषे, रखे अखंडित आन ॥१॥

ढाल ७७मी

तर्ज—पपैया काहे मचावे सोर

धरम का करते वीर प्रचार, हठे न पीछे लिगार । टेर
जती आन के झौड़ मचावे, दे देते पुनिगार ।
पूज्य कहे ऐसे मत बोले, नहीं जैन आचार ।
ऐसे हम कभी न चिढ़ने हार ।। धरम १ ।।
क्यू मुंह पर मुमती बांधी इसमें क्या है सार ।
नाहक भटकी भेख लजावो लज्जा हीन गवार ।
सांग भी दीसे हैं बदकार ।। धरम० २ ।।
कहै पूज्य मत कहो मुमती, मुंहपति इसका नाम ।
मुंहपति मुख ऊपर ही सोवे, जीव बचावन काम ।
सोभा से साधू को नहिं प्यार ।। धरम० ३ ।।
भगवई सूत्र बतावे चोड़े, जयना बिन मत बोल ।
यदि अजैना से जो बोले, सावज वचन निटोल ।
जीव रक्षा को है आचार ।। धरम० ४ ।।
नहीं बांधणी कठे कही है थोनी हमें बताय ।
व्यर्थ वितडावाद किया से, कारी लगे न काय ।
ज्ञान से चर्चा करन तैयार ।। धरम० ५ ।।

।। दोहा ।।

जती जरें जुक्ति सुनि, देत अछत्ता दोष ।
सांत स्वभावी सद्गुरु, रती न आवे रोष ।।१।।

ढाल ७८मी

तर्ज—विणजारा

मूथा तारा चन्द्रका आना, मुनिवर से करत बयानाजी।
यहां कैसे जमाया थाना ॥ १ ॥
रघुपति कहे सुनों सुजाना, यहां करते लाभ कमाना ॥ टेर
क्या तुम लाभ कमावो, ओं हम को भी दिखलाओजी।
गुरुराज दिया है वखाण ॥ रघु० २ ॥
सुन हरस हिये बहु लीना, ले फोज गमन वय कीनाजी।
दिल मन सोभा ठाणा ॥ रघु० ३ ॥
विन युद्ध काम वन जावे, फिर आके गुरु मनावे।
आबू की तरफ प्रस्थाना ॥ रघु० ४ ॥
सूवेदार आन के मिलिया, सब दर्द दिलों का टलियाजी।
लश्कर को पीछे लोटाना ॥ रघु० ५ ॥

॥ दोहा ॥

पूज्य पास आ प्रेम सों, कावड़ियो कर जोर।
अर्ज करें अब दीजिए, समकित मो सिर मोर ॥१॥
दिवस सताइस देखियों, स्वामी कष्ट करूर।
सहर पधारो साथ में, हार्दिक भाव हुजूर ॥२॥

ढाल ७६मी

तर्ज—ख्यालकी

कुण रोकन वारो, आप पधारो स्वामी सहर में। टेर
अर्जमान कावड़ियाजी की, पूज्य पधारे मांही।
बोरा और जती दोनों की चली नहीं अकड़ाई॥
लोंकागच्छ उपासरे सरे उतरया है हुलसाईजी॥ कुण० १॥
घांसीराम पूनमियो आके, चर्चा खूब चलाई।
पूज्यराज की धारणा सरे दाय उनी के आई॥
लोंकागच्छ का लोग लुगाई नम्या चरण चित लाइजी॥कुण० २॥
तपा सवासौ समजिया सरे समकित लीधी धार।
सहर मादरी सरकर लीनों, वरत्या जय जयकार॥
कियो चौमासो चूपसूं सरे बढ़ियो धर्म प्रचारजी॥ कुण० ३॥
चौमासा को व्यार करीने पूज्य पधारया बाली।
गोडवार में घूम २ कर दीन्हों धर्म उजाली॥
सादेराव से सीधा पूजजी सेर फर्सियो पालीजी॥ कुण० ४॥
जोधाणे जयमलजी मिलिया. जीती बीकानेर।
अतिसय धारी आप अन्दाता, जती बनाया भेर॥
खिचन फलौदी और लोहावट तिवरी फरसी फेरजी॥ कुण० ५॥

॥ दोहा॥

जयमल हटजाओ कियो, पूज्य धरम की भेर।

एक बार वजवाईये, जाकर वीकानेर ॥ १ ॥
लघु भ्राता के कथन को; मान्यो करी विमास ।
वीकानेर पधार के, पूज्य कियो चौमास ॥ २ ॥

ढाल ८०मी

तर्ज इणरे बंगलारे हेठे

इणरे चौमासा मांहें रग घणेरो, तो भक्ति करी है भारी ।
हो पूज्यजी थांरी. वोली सुप्यारी २ वाणो कामनगारी ॥
तो सींची धरम फुलवारी, ओ पूजजी हो ॥ पू० १ ॥
वोल चाल में कई थोकड़ा सीख्या ।
तो प्रतिक्रमण अनपारी हो ॥ पू० २ ॥
सूत्र बत्तीसारी हुंडी वणाई ।
तो समझ सके नरनारी हो ॥ पू० ३ ॥
श्रावक श्राविका परम प्रेमालू ।
तो सेवा करे हरवारी हो ॥ पू० ४ ॥
दीक्षा चारों चूंप धरीने ।
लीनी वैराग वधारी हो ॥ पू० ५ ॥
च्यार चौमासारो पूज करायो ।
तो झुर रही जनता सारी हो ॥ पू० ६ ॥

थली प्रान्त में नाथ विचर्या ।
लाभ लियो जयकारी हो ॥ पू० ७ ॥
चूरु दीक्षा दोय दिराई ।
तात पुत्र सुखकारी हो ॥ पू० ८ ॥
ग्रीषम ऋतु लख पाछा फिरिया ।
भीसम पन्थ विनत्रारी हो ॥ पू० ९ ॥

॥ दोहा ॥

निर्जल ग्राम अरु अज्ञ थे, धोवन मिलियो नाय ।
ऊपर महिनो जेठरो, जल बिन तड़फत काय ॥ १ ॥
पांच संतु आयु कियो, पूरण जल बिन जेह ।
धन्य क्रिया मुनि जैन की, सचितन पीधो तेह ॥ २ ॥

ढाल ८१मी

तर्ज--संग चलूं जी पिया

अहो जैन को आचार, खरी कहूँ है खड्ग की धार ॥ टेर ॥
प्राण न्योछावर करै पलमांय ।
किन्तु व्रत को छोड़ै नांय ॥ अहो० १ ॥
अल्प उपद्धि राखै पास ।
रहे आनन्दी नाहीं उदास ॥ अहो० २ ॥

व्यार कियो आया दूजै ग्राम ।
छाछ मिश्रित जल मिलियो ताम ॥ अहो० ३ ॥
आये फलोदी पोकरण होय ।
पूज्य अमरसिंह राजत सोय ॥ अहो० ४ ॥
इतसे आये जयमल साम ।
प्रेम भाव से हुओ इगाम ॥ अहो० ५ ॥
दिवस इकीस विराज्या सर्व ।
स्नेह रख्यो नहि राख्यो गर्व ॥ अहो० ६ ॥
अन्यो अन्य प्रशंसा कीध ।
सतस्वभावी बहु जस लीध ॥ अहो० ७ ॥

॥ दोहा ॥

वधे सु दिन २ चौगुनो, पूज्य तणो परताप ।
जरै अज्ञानी जोयके, थानन खावे थाप ॥ १ ॥
रूपचन्द्र स्वामी गया, सात ठाणे गुजरात ।
तिणकी सुणजो वारता, प्रेम सहित सब भ्रात ॥२॥

ढाल ८२मी

तर्ज—बार बार मैं क्या तुझे बोलूं

रूपचन्द महाराज पधारे गुर्जर गुणवन्ता ।

सात ठाणे से धर्म प्रचारक पूरा पुनवन्ता ॥
सहर लींमड़ी कर चौमासो, ज्ञान मथन कीनो ।
भीखू को जजाल जिगर से छोड़ परो दीनो ॥
गामो गाम दिपाय धर्म को जस जबरो लीनो ।
केई परिषद सहन किया गुरु समता रस पीनो ॥
चर्चावादी जबर ज्येष्ठमल तस सीस जयकारी ॥ १ ॥
हर्ष धरी सब सुनजो प्यारे पूज्य कथा प्यारी ॥ टेर ॥
जड़ पूजक थे जती सवेगी, उणसे रीसाया ॥
विविध उपाय किया न हटै जब आखिर ह्वै काया ।
अमरविजय अरु वीरविजय दो बनकर के मुखिया ॥
अवर पैंतालीस लेके लारे वाद करन तकिया ।
आये अहमदाबाद बादशाह से पत्र लिखिया ॥
हम जो चर्चा करें उसी के बीच आप राखिया ।
स्वीकृत कीनी बादशाह ने हर्षित ह्वै भारी ॥ ह० २ ॥
लेले पुस्तक आन खड़े रहे सभा बीच सारा ।
जमे खुर्सियों ऊपर जाकर देखे सरदारां ।
जेठा स्वामी आप अकेला अर्जी लिख लाये ॥
बादशाह उस खत को पढ़कर बहुत खुशी पाये ।
आप विराजो इसी खुरसी पे जब मुनि फरमाये ॥
हमें बैठना नहीं कलपता आगम दरसाये ।
बादशाह कहे थे क्यूं बैठे, जैनी कहतारी ॥

क्या बैठना कल्पे यह तो पूछ लेवो इनसे ।
सत्या सत्य का निर्णय पाजावो जिनसे ॥
लाजवाब भये पूछान्तर सब ही सरमाये ।
बादशाह ने सब को सत्तर नीचे बैठाये ॥
चर्चा चली बहुत जोरों से जैठा जय पाये ।
खाकर हार भगे मु ह लेके पीछे नहिं आये ॥
समकित सार ग्रन्थ मुनिवर ने रचियो तिनवारि ॥ ह० ४ ॥

वहां से विचरता जेठा स्वामी पालनपुर आये ।
बादशाह की बाड़ी में जा आसन लगवाये ॥
वहां पीर का पर्चा ऐसा जा न सकै कोई ।
जिद करके कितने गये वो, जान साथ खोई ॥
उसी जगह जा आप बिराजे, स्वच्छ स्थान जोई ।
एक अवलिया ठहरा वाड़ी में खबर सहर होई ॥
दौड़ २ के देखन के हित आवे नर-नारी ॥ ह० ५ ॥

रात निकल गई बड़ी फजर को खबर जल्द आई ।
जैन साधु नहिं आज मरा सुन जनता चकराई ॥
दिवान बादशाह दोनों आये चरणां सिर डारे ।
सुना उपदेश दिवान मुनिवर पे सुध समकित धारे ॥
मरुधर को लौटे ले गुरु को छतीस अठारे ।
दण्ड देय पाली में पूज्यजी सामिल किये सारे ।
पूज्य चौमासो जा पालनपुर कीनो सुखकारी ॥ ह० ६ ॥

जेठमल्ल महाराज रहे वां निज इच्छा चारी ।
वादी मान मर्दन को पूज्यजी आज्ञा दे डारी ।
जबर जैन दरसन दीपायो ममता तज सारी ।
आज तलक भी जाहोजहाली छाय रही वारी ।
इन्हीं नाम पै खलकत वहां की जावे बलिहारी ।
पूज्य पधारे फिर मरुधर को जब गति जयकारी ।
एक एक से मुनिवर अधिका हो गये तपधारी ॥ ६० ७ ॥

॥ दोहा ॥

विमलाचार विचार हैं, विमल सुयस विस्तार ।
विमल विवेक वचन पुनि, विमल ज्ञान वर सार ॥

ढाल ८३मी

तर्ज—चन्दा थारी चांदणी सी रात

कीन्हों है स्वामी विचरी बहु उपकार रे,
कांई तनरी रेक सक्ती छीण लखी तवे ।
आया अनुपम सोजत सेखे काल रे ।
कई गादी रेख देन परीक्षा की जावे ॥ १ ॥

सेलि पातरी छोटी चौक मजार रे,
कई कोई रेक आज्ञा बिन न उठाव ही ।

सूर्य अस्त की वेला थई तिवार रे।
काई टोडर रेमल जीते दिखावही ॥ २ ॥
जान अछाया लैली ते गुणवन्त रे,
कांई मेली रे पूज्य उपद्धि पास में।
पचखाण समय में पूज्यराज पभणत रे।
कही पात्री रेक कौनगही उल्लास में ॥ ३ ॥
विनय युक्त कहै टोडरमल सिरनायरे,
कहीं लीनी रैक जाण अछाया नाथ में।
विन आज्ञा क्यों लीधी कहें गुरुराय रे,
कहीं लागे रैंक दान अदत्ता साथ मे ॥ ४ ॥
दण्ड दिरादो म्हांने दीनानाथ रे,
कांई मुल्की रे मून करी रघुवीर जी।
मन में जाण्यो ओहीज गादी जोग रे।
कोई मुखिया ने वात कही धर धीरजी ॥ ५ ॥
हुवा जेतसी सोजत में दिवलोक रे,
कांई उज्वल रेक भावकरी सथार ही।
अट्ठारे से गुण चालिस वैसाख रे।
कांई आयो रेकदिन एक बीस सुमार ही ॥६॥
सेर नागोर जयमलजी महाराज रे,
कई स्थायी रेक सक्ति छीन विराजिया।
तस्य शिष्य रायचन्द्र मुनि वृन्द रे।
कांई गुण कर गिरवा गाजिया ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

अट्ठारे चालीस को रायचन्द जोधान ।
प्रथक् हुवा अति प्रेमते, बहु परिवार पिछान ॥१॥
सामिल कुसलोजी सही राज साथ लखि नेह ।
अट्ठारे चौपन्न को करी जुदाई जेह ॥२॥

ढाल ८४मी

तर्ज—सो भवियां भक्त

पूज्य प्रतापी मिथ्या उतापी आणी समकित रेख,
ग्राम नगरपुर पाटण फर्स्या स्वामी देस विदेस ।
कठिन परीसह सहन किया कीनो नहिं कलेस,
जैन धर्म की ज्योति जगादी, दाख्यो जू श्रमणेश ।
क्रांति मचादी इण कलियुग में समता रख उर सार ॥ १ ॥
भूधर सिस रघुनाथ पूज्य की महिमा अपरम्पार ॥ टेर ॥
चर्म चौमासो करी मेड़ते पाली पूज्य पधारे,
सब संतांने करी सूचना, आन मिलो एक वारे ।
सघ सुधी चमक्यो चित भीतर क्यों ये वचन उचारे,
कानी २ भेज खेपिया समाचार कहडारे,
आन लगे मुनि मण्डल पाली स्वामी करत विहार ॥ भू० २ ॥

साघ कृष्ण आठम के दिवसे श्रीमुख से फरमावे,
खमत खामता सब संघ से सथारा हम चावें,
सघ सुनी सो कानन होकर आंख्या जल बरसावै,
हाल अन्दाता नहिं है अवसर संघ अरज गुजारे।
चिन अवसर हम कैसे कहते सुनो सभी धर प्यार ॥ भू० ३ ॥
साठ बरस जिन सासन सेवा यथा शक्ति कर डारी,
जिनमें जो अतिचार लग्यो है, जो मुझको दुःखकारी।
जास आलोचन आज ऊचरूं सघ साख सुखकारी।
होय निसल्य कियो संथारो, चढ़त भाव तिनवारी,
देही ज्यांरी दिप दिप दीपे देख रह्या नर नार ॥ भू० ४ ॥
सथारो सुन केई सहरा के श्रावक श्राविका आया,
तन मन से वे सेवा सारे तप पचखाण जो ठाया,
साधु साधवी तब आचरियो भले भाग्य गुरु पाया,
कलियुग मे देखो अवतारी सतयुग कर दिखलाया,
जय २ बोलो उसकी भैया कहे मिश्री अणगार ॥ भू० ५ ॥

॥ दोहा ॥

नगजी टोडरमलसां सिस वाईस उदार।
प्रतिसिस्य पैंसठ भला, वर व्रत पालन हार ॥१॥
पर पोते पच्चास हैं, गुण रत्नां की माल।
समणी शिष्या जानिये, दोसे ऊपर चाल ॥२॥

ढाल ८५मी

तर्ज—वे वे मुनिवर तप तपिया

नगजी सामी उदयापुर थकी आया मुखड़े उदास सुगुरुजी।
टोडरमलजी गढ़ जालोर से, पहुधार्‌या गुरु पास सुगुरुजी ॥१॥
भल दीपायो मारग जैन रो, गदगद हो कहे वेण सु०।
चरण परसतां रे हियड़ो भर गयो, आंसू आया नैन सु० ॥ भ० २
कर सिर धर के पूज्य इसी कहै, वच्छ करो मत सोग सु०।
वीर प्रभुनो धरम उजवालजो हो तुम सारा जोग सु० ॥ भ० ३
दिन प्रति आवे साधु दर्स ने, धीरज सबने देय गुरुजी।
मोह कर्म थे किण विधि करिया होकर के गुण गेह सु० ॥ भ० ४
इक्कावन तो मास खमण हुआ, साधु साधवी माह सु०।
पन्न अठायांरी गिणती है नहि, चहुँ सघ रे मांय सु० ॥ भ० ५
स्वमत परमत मांहे विस्तरी।
बात अपूरव एह सु०।
मरणौ जाण्यो रघुपति।
पूजजी ग्यानी पुरुषज जेह सु० ॥ भ० ६ ॥
मरणा सेती दुनिया डर रही।
धन सोमादे लाल सु०।
किया केसरिया मरणा सामने।
काटन कर्म जंजाल सु० ॥ भ० ७ ॥

भीड़ लागी है दरसन की घणी ।
हरसे कर दीदार सु० ॥
देव रूप से आप विराज्या ।
नहि है असातना तार सु० ॥ भ० ८ ॥
धर्म धुरधर पूज्य प्रभावना ।
अतिसय वन्त अपार सु० ॥
चाकर चरणां को मिश्री के ।
सदा आप तणो आधार सु० ॥ भ० ६ ॥

॥ दोहा ॥

साठ चोमासा सामजी, किया ग्राम तेवीस ।
नाम कहूं ते के जुजुवा, सुनिए विस्वावीस ॥

ढाल ८६मी

तर्ज—विणजारा

स्वामीजी कीना वे मेड़ते नगर ।
चोमास चवदे कल्पता चूंप सूं ।
स्वामी कीना वे जोधाणे ।
नवजाणे नेह दीवाणज भूप सू ॥ स्वा० १ ॥
स्वामी कीना वे सोजत सैर ।
इग्यार वहुला जन प्रतिबोधिया स्वा० ॥

स्वामी कीना वे पाली तीन प्रसिद्ध ।
आगम अगणित सोधिया ॥ स्वा० २ ॥
स्वामी कीना वे बीकानेर पिण तीन ।
बीलाड़े दोयज भला स्वा० ॥
स्वामीजी कीना वे जयपुर उभय ।
उमग अवर एकेक चढ़ती कला ॥ स्वा० ३ ॥
स्वामी कीना वे लाड़नूं और ।
जालोर चर्चा कर बहुयस लियो स्वा० ॥
स्वामी कीना वे पुर पीपाड़ ।
नागोर रूप नगर रूड़ो कियो ॥ स्वा० ४ ॥
स्वामी कीना वे पादू जेतारण जास ।
बगड़ी भिलाड़े जाणजो स्वा० ॥
स्वामी कीना वे सवाई जयपुर वास ।
सादड़ी सुद मन आनजो ॥ स्वामी० ५ ॥
स्वामी कीना वे उदयापुर अनमोल ।
पालनपुर उज्जैन में स्वामी० ॥
स्वामी कीना वे दिल्ली कोटा ।
तोल आन अखंडित एन में ॥ स्वामी० ६ ॥
स्वामी दीनो वे समकित सात सौ गाम ।
मिथ्या मत मरदन कीयो स्वा० ॥
स्वामी कठिन परी षट् पाम ।
समता रख जी वस कियो ॥ स्वा० ७ ॥

॥ दोहा ॥

चार विगे टाली चतुर, दिक्षा दिनथी जाण ।
पांच पांच लग पारणो, अभिग्रह धार्यो आन ॥ १ ॥
ऊपर तप जे आदर्यो ते सुणिजो भविलोग ।
पूज्य नाम पर भाव सूं, मिटे सकल तन रोग ॥ २ ॥

ढाल ८७मी

तर्ज--छोटे से बलमा मोरे आज

कैसो तप तपिया पूज्य दयाल सुनता आनन्द आवे ॥ टेर ॥
पांच मास पाली में कीना, मेड़ते चार रसाल । कैसो० १ ॥
चार मास उज्जैन पच्चखिया, चार जोधाणे सार ॥ कैसो० २ ॥
तीन मास इग्यारा आदर्या, दोय मास सप्तधार । कैसो० ३ ॥
मासी तप ईकवीस अन्दाता, पच्च पांच ही लार ॥ कैसो० ४ ॥
अवर छूटकर बहु तप कीनो, जाऊं चरण बलिहार ॥ कैसो० ५ ॥

॥ दोहा ॥

दी दीक्षा निज कर थकी, पूरण पांच सौ बीस ।
ऐसे अतिसयवंत के, चरण नमाऊं सीस ॥ १ ॥

ढाल ८८मी

तर्ज--कई रे जवाब रसिया

कई रे सुगुरु की महिमा सुनाऊं, महिमा सुनाऊ तो पार न पाऊ॥ टेर

महिमा मेरू गिरवर से मोटी, सो बुद्धि तुच्छ कैसे तुलवाऊं ।।कई०
सिंह जिसा उपसर्ग सहन में, कह करके कितनाक गिनाऊ ।।कई० २
सूर्य के सम ज्ञान प्रदाता, उनको लेखन से किम लिख पाऊं ।।कई०३
सागर सम गहरा गुण भरिया मैं तो मूढ़ किताक दिखाऊं ।।कई० ४
अवर भेट नहिं पास हमारे तो पल २ आप भणी मैं ध्याऊ।।कई० ५
शांति भूषण दूषण तन नांहीं, तो उन छवि पै मैं नैन जमाऊ ।।कई०६,
'मिश्री' के परवाह न किन की, मेरे धनी रघुनाथ निभाऊं ।।कई० ७

।। दोहा ।।

संथारो दीपे सरस, पाली पीठ मझार ।
सेवा सारे पूज की, सफल गिने अवतार ।।१।।

ढाल ८६मी

तर्ज—सीता आवे रे घर राग

स्वामी मोटा थांरा भाग, नर नारी दरसन नित आवे धर कर मन में राग ।। टेर ।।

साध साधवी हाजर सारा, सारा श्रावक साथ ।
बायां मीठा स्वर सूं गावे, पूज्य तणो गुण गाथ ।। स्वा० १
महासती जी श्री रत्नकवरजी सोजत में थीरवास ।
वे पिण दरसन काज पधार्‌या, धर मनमें हुल्लास ।। स्वा० २
माघ सुदी ग्यारस दिन ऊघे पूज्य कहे धर प्यार ।
रायचन्दजी आयरया है, नींबली सू कर बिहार ।। स्वा० ३

विस्मय सारा होय गया है, केम जनानी बात ।
उपयोग निर्मल पूज्य प्रभु रो, भांगो ग्यान विख्यात ।। स्वा० ४
सत्य जाणवा भाया बायां, सामे जावे चाल ।
पांच ठाणे सूं स्वामी पधारे जय शिष्य गुण की माल ।। स्वा० ५
राय स्वामी ने बात जणावी, पूज्य प्रकासी जेय ।
जवगति जैना सू चालतो, सत्वर आवे तेह ।। स्वा० ६
तारे ध्यान धर्यो मन नीके लेस्या सुभ परिणाम ।
पंच परमेष्टी नाम प्रभु के, राजत मुख ललाम ।। स्वा० ७

।। दोहा ।।

संवत अठारा ऊपरे, पट् चालीस प्रमाण ।
माघ शुक्ल ग्यारस प्रथम, पहर पूज्य निर्वाण ।।१।।
जनता रह गई जोवती, कृपा नाथ कल्याण ।
शोकानन सारा भया, पूज्य तणे अवसान ।।२।।

ढाल ६०मी

तर्ज--आज आनन्द घन जोगी सर आया

रायसामी दरवाजे सुणियो, ध्यान करी सिर धुनियोरे लो ।
अन्तराय रेगई मिलवा की, हाहा मुख से भणियो रे लो ।।१।।
पूज्य परम रघुपति स्वामी अन्तर्यामी प्यारा रे लो ।
गुणधामी सिव पद का कामी, जैन धर्म उजियारा रे लो ।।२।।

गुणी रागी सोभागी सूरा; पंचम आरा मांही रे लो।
ऐसा वेरागी बिरला होसी धर्म की बाहर बजाई रे लो॥ ३॥
उच्छव दूध को कर श्रावक गन, चन्दन चिता के मांही रे लो।
संस्कार पूज्य तन को करियो, नाम करन के तांई रे लो॥ ४॥
सुयश सुगन्धि महक रही है आज तलक सुखदाई रे लो।
ऐसा प्रचारक जैन वीर कोई जनमेगी कब माई रे लो॥ ५॥
तस पाटे टोडरमल्ल छाजे, गुण गिरवा वरदायी रे लो।
इन्द्राजजी तपसी इनका सोभा वरणि न जाई रे लो॥ ६॥
भोपत स्वामी भव भय हारक, गिरधर पूज्य कहाया रे लो।
धर्मचन्द सिमधर्म धुरधर, मानमल महा राया रे लो॥ ७॥
तच्छिस्य भूषित सकल गुणां कर बुद्धमाल गुरुराया रे लो।
तासु चरण रज 'मुनि मिश्रीमल' पूज्यतना गुण गाया रे लो॥ ८॥
मोसति सारू जोड़ बनाई, जिती सुणी लिखी पाई रे लो।
न्यून्याधिक को मिथ्या दुष्कृत, सघ साख द्यू भाई रे लो॥ ९॥
गुणवन्ता का गुण सुनकर के सज्जन हर्षित थासी रे लो।
दुर्जन मन में खूब जलेंगे, और करेंगे हांसी रे लो॥ १०॥
६ ९ ९ १
सम्मत् रस निधि ग्रह भू अब्दे प्रथम पक्ष श्रावण प्यारो रे लो।
कृष्ण ग्यारस जल गुरु दिन पूरण मगल मय अधिकारो रे लो॥ ११॥

॥ कलस ॥

देश मरुधर भूप कम धज, श्री उमेद सुचंग है।

गुडा केसरिसिंहजी को रसिक सारो संग है ॥
पूज्य की गुणसाल जोड़ी वृद्ध गुरु की महर है ।
पूज्य के परताप मिश्री मुनि के सुख लहर है ॥ १ ॥
चौपई चढ़ती कला ये बीज शशि सम थावही ।
विद्वज्जनों के हृदय मन्दिर में जु बहुत सुहावही ॥
सात सोमानन्द आनन्द कन्द श्री रघुवीर की ।
समुदाय वृद्धि कीर्ति लहै नित इस प्रतापी धीर की ॥ २ ॥

|| श्री वीतरागायनमः ||

पूज्य श्री रघुनाथ पच्चीसी

(स्वामीजी श्री चौथमलजी म० सा० रचित)

तर्ज—सहेलियों ए-वन्दो रूडा साधु ने....

इण जम्बूद्वीपे जाणिये, भरत खेतर रे माय । लाल रे ।
जिहां शहर सोजत सुहामणो, तिहां रघुपति म्होटा थाय लालरे १॥
पुज रघुपतजी दीपता, आरा पांचमा माय लालरे ।
गुण जांमे भरिया घणा, मासू पूरा कह्या किम जाय-लालरे ॥टैर॥
बालवये बुद्धि घणी, घणा चतुर सुजान, लाल रे ।
श्लोक छन्द शीख्या घणा, मीठी ज्यांरी बाण लाल रे ॥ पु० २ ॥
पाछली रात रा मन चितव्यों, कारमो कुटुंब शरीर, लाल रे ।
मरकर मैं कठे जावसू-तरे नयणे छूटा नीर, लाल रे ॥ पु० ३ ॥
अमर होवणे कारणे, धरणो देवू देवी के थान लाल रे ।
वात भूधरजी आयातणी, इतरे सांभली कान, लाल रे ॥ पु० ४ ॥
वांदी ने वाणी सुणी, रींज गया मन माय, लाल रे ।
सगाई ज्यांरी कीधी हुति, छभोडा दी छिटकाय, लालरे ॥ पु० ५ ॥
कला घणी कविता तणी, पछे जोड़िया भूधरजीरा गुण; लालरे ।
साधु श्रावक राजी थया, ज्यांरी बुद्धि ने कविता सुण लालरे ॥पु ६
वर्ष सतरह में समजिया, जस फेल्यौ ठामो ठाम, लाल रे ।
खींवसी भण्डारी सांभल्यो, श्री रघुपतजी रो नाम, लालरे ॥पु. ७

शहर जोधाणे तेड़िया, खींवसी राजी हुवा देख, लालरे।
वर्ष दिवस ज्यां राखिया, शीख्या ज्ञान विसेख लालरे॥ पु० ८॥
माता सोमादेजी रा लाडला, जेठ बीज बुधवार लालरे।
सतरे से सतियासीये, लीनो सजम भार, लालरे॥ पु० ६॥
मोच्छव दीक्षा रो हुवो घणो, श्रावक हुवा हुंलास, लालरे।
शहर सोजत रा सूरमा, पूज भूधरजी रे पास, लालरे॥ पु० १०॥
धीर गभीर गुणी घणा, वांद्या भूधरजी रा पाय, लालरे।
पडिक्कमणो साधों तणो, मू डे कियो घड़ीरे माय लालरे॥पु. ११॥
विगे त्याग पच्चखाण किया घणा, घणा किया मासखमण तप ठाट
लाल रे।
विनयवंत बखाणिया, शहर जोधाणे दिपायो पाट, लालरे॥पु १२॥
साधु श्रावक रागी थका, भुधरजीरी जगा थाप, लालरे।
उपकारी म्होटा थया, घणो मित्थ्यात दियो उत्थाप, लालरे॥पु. १३
गांव नगर विचरे जठे, हुवे नर नारियों रा थाट, लालरे।
देश विदेश वाणी सुणवातणी, घणा जोवे जिणोंरी वाट,
लालरे॥ पु० १४॥
सेंठा आचार गोचार में, ज्यारी शाख भरे परपूठ, लालरे।
न्याय सहित चर्चा करे, कजियों देखने जावे उठ, लालरे॥पु. १५॥
केशरजी गुरु भाई बड़ा, छोटा जैतसी जाण लालरे।
जयमल्लजी घणा दीपता, तपसी घणा गुणवान, लालरे॥पु० १६॥
कुशालोजी पिण लाडका, भली गुरु भायों री जोड़, लालरे॥पु १७॥
भेला हुयों धर्मध्यानरी, वातों करे घर कोड, लालरे॥ पु० १८॥

भव जीवों रे पंचम काल में, छे तीर्थंकर समान, लालरे।
शिख जीवणजी छे बड़ा, ज्यांने मिलिया गुणोंरी खान,
लालरे ॥ पु० १९ ॥
टोठर अमीचदजी आदि दे, चेला घणा विनीत, लालरे।
आचार पाले डरे पापसु, चेला बाइसासू प्रीत, लालरे ॥ पु० २० ॥
उपकार कियो घणो भरत में, टाली मिथ्यात री छोत, लालरे।
नरमाई खिमिया घणी, दीसे बांधसी तीर्थंकर गोत, लालरे ॥पु २१
ज्ञान सूत्र को उद्यम घणो, वलि लिखवा तणो विशेख, लालरे।
आयो ग्राहक नहीं जाणदे, ज्यांने समझावे अवसर देख,
लालरे ॥ पु० २२ ॥
रात दिवस रहे ध्यान में, ज्यां में गुण भरिया है अनेक, लालरे।
पूरा मैं किम वर्णवूं, म्हारे जीभड़ली एक, लालरे ॥ पु० २३ ॥
दुखमीआरे मो भणी, मिलिया जिनजी सम आप, लालरे।
ज्ञान-दर्शन-चारित्र बधे, सो पूज्य तणो परताप, लालरे ॥पु० २४॥
सवत् अठारे चोइस में, जेठ वदि अष्टमी ताय, लालरे।
मैं गुण गाया श्री पूज्य ना, शहर बिलाड़ा रे माय, लालरे ॥पु.२५॥
"ऋषि चौथमल" करे विनती, आणी भाव प्रधान, लालरे।
तह मन्ने तह चित्त से, धरूं आपरो ध्यान, लालरे ॥ पु० २६ ॥

नोट—यह स्तवन सवत् १८२४ का ज्येष्ठ वदी ८ को बिलाड़ा में बनाया है।

पूज्य स्वामीजी श्री १००८ श्री चौथमलजी म० सा० ने आपश्री मारवाड़ मेड़ता पट्टी का भवाल नामक गांव में जन्म लिया, कुन्दनमलजी झांमड़ के सुपुत्र और जड़ाव बाई के अग जात थे। बन्दोले खाते हुए अर्थात् पाणिग्रहन के पहिले पुज्य श्री की वाणी सुणकर १८१६ मार्गशिर्ष सुदी ५ को पूज्य श्री के शिष्य अमीचदजी म० और अमीचदजी के शिष्य गुलावचदजी म० सा० के शिष्य बने। आप बड़े विद्वान, लेखक और महान् मारवाड़ी भाषा के कवि थे। व्याख्यान भी आपका वड़ा मनोहर था, श्री राम चरित्र, श्री कृष्ण चरित्र, पांडव चरित्र आदि म्होटे व छोटे ४५ ग्रन्थों का निर्माण किया। तथा स्तवन, सज्झायों आदि अनेक बनाये। लगभग १ लाख श्लोक के अनुमान पद्यमय कविता निधान मस्तुत है। आपके ८ शिष्य थे।

पूज्य श्री रघुनाथजी म० सा० नी गुण छत्तीसी

लेखकः-श्री चौथमलजी महाराज

तर्ज—हमीरीयानी

प्रथम जिनेश्वर पाय नमु
सत्तगुरु लाग सू पाय रे भविक जन ।
गुणवन्त गुरु ना हूँ गुण करु रे,
अखर आंण जो ठायरे ॥ भविक ॥ १ ॥
पूज रघुपतिजी जगमें दीपतारे,
दीपे ज्यांरी अमृत वाण हो ॥ भविक ॥
आचार ज्यांरो निरमलोरे,
न्याय मारग रा जाण हो ॥ भविक ॥ २ ॥टेर॥
इण द्विज भरत जम्बु दिप में रे,
मुरधर देशज माय हो ॥ भविक ॥
राज-काज छाड़े सिंघ ज्युं रे,
जीव दया दिल मायरे ॥ भविक ॥ ३ ॥
गांव नगर तो छे घणा रे,
सोजत शहर सिरदार हो ॥ भविक ॥
जिण में रघुपतजी बसे रे,
बुद्धि तणो विस्तार हो ॥ भविक ॥ ४ ॥

उत्पात री बुद्धि करी रे,
मन में करीयो विचार रे ॥ भविक ॥
कियाथी आयो किया जावसूं रे,
खबर नहीं छे लिगार रे ॥ भविक ॥ ५ ॥
एक दिन मरणो आवसी रे,
जिनमें फेर न सार रे ॥ भविक ॥
दलगिर मन में हुवा घणारे,
जिव ने कुण आधार रे ॥ भविक ॥ ६ ॥
एतो तरण तारण को नहीं रे,
कनक कामणी लार रे ॥ भविक ॥
जामन-मरण मिटाग्ने रे,
अमर करे ससार रे ॥ भविक ॥ ७ ॥
देवी चामुण्डा नो छे देहरो रे,
घणो देसों जाय रे ॥ भविक ॥
अमर होणो संसार में रे,
इमडी देवे बताय रे ॥ भविक ॥ ८ ॥
पूज भूधरजी पधारिया रे,
दर्शन किधा छै जाय रे ॥ भविक ॥
वाणी-भीन्न करने सांभली रे,
वखान पूरण थाय रे ॥ भविक ॥ ९ ॥
पूज्य भूधरजी ने इम क्यो रे,
घरणो देसों देवीरे जायरे रे ॥ भविक ॥

जो देवी सांची हुवे रे,
अमर करे जग साय रे ॥ भविक ॥ १० ॥
देवी तो पोते ई मरे रे,
बिजाने अमर करे केण रे ॥ भविक ॥
अमर हुवा ने कमो उठिया रे,
कयो भूधरजी सामों एम रे ॥ भविक ॥ ११ ॥
रघुपतजी मन में जाणियो रे,
साची छै ए बात रे ॥ भविक ॥
ए पुरष मोंने तारसी रे,
बिजो सरव मिथ्यातरे ॥ भविक १२ ॥
श्रावक ना व्रत आदरिया रे,
लग्न लागी छै विशेष रे ॥ भविक ॥
दर्शन करे वाणी सांभले रे,
पिण ससारियां ने उठियो द्वेष रे ॥ भ० ॥१३॥
संसारियों मन में जाणियो रे,
रखे छोड़े घर-बार ॥ भविक ॥
सूंस दिरायो दर्शन जाणरो रे,
इस विध लागा छै लार रे ॥ भविक ॥ १४ ॥
रंग लागो जांरो धरमरो रे,
चन्दर कला चढती जेमरे ॥ भविक ॥
जिके ए वरजीया किम रहे रे,
ज्यों रो लागो धर्म सूं प्रेम रे ॥ भविक ॥ १५ ॥

ईम करतां दिन निसरे रे,
खोजत शहर मभार रे ॥ भविक ॥
चार खण्ड सूं दिपता रे,
जस फेल्यो ससार रे ॥ भविक ॥ १६ ॥
तिम काले ने तिण समेरे,
भंडारी खींवसी दिवान रे ॥ भविक ॥
बुद्ध घणी रघुवीर नी रे,
तेडिया छै इम जाण रे ॥ भविक ॥ १७ ॥
जिसड़ा सुणिया जिसा देखीयारे,
बुद्ध तणो छे निधान रे ॥ भविक ॥
नाय दिवान कने राखिया रे,
कुरब घणो चढते वाण रे ॥ भविक ॥ १८ ॥
रघुपतजी सजम आदरे रे,
खुली है वेराग री खान रे ॥ भविक ॥
जोधाणे जेठ बद बीज ने रे,
दिक्षा लिधी मोटे मड़ाण रे ॥ भविक ॥ १९ ॥
रघुपत उठे गोचरी रे,
सुमत-गुप्तरा जाण रे ॥ भविक ॥
सूजतो आहर पानी,
देखने रे वेरे चतुर सुजान रे ॥ भविक ॥ २० ॥
सरतो सरतो दाखवी रे,
इम वेरे मुनिराय हो ॥ भविक ॥

घर घर फिरता गोचरी रे,
ऊच नीच मजभ मांय हो ॥ भविक ॥ २१ ॥
गज हस्ती नी करे गोचरी रे,
विगे प्रमुख विशेष रे ॥ भविक ॥
दातार गाढ़ करे घणो रे,
पिण वेरे अवसर देखने ॥ भविक ॥ २२ ॥
इण हीज वस्त्र पातर जांण जो रे,
तिन हीज औषध आहार हो ॥ भविक ॥
भिन्न भिन्न बुझीने चौकस करे रे,
करड़ो इसो आचार रे ॥ भविक ॥ २३ ॥
गोचरी कर पाछा वलिया रे,
थानक विराजिया आय हो ॥ भविक ॥
आहार करण रे अवसरे रे,
दर्शन करे कोई जाय हो ॥ भविक ॥ २४ ॥
आहार पाणी अलगो मेल ने रे,
करे जिण सूं उपकार हो ॥ भविक ॥
भीन्न भीन्न वाणी सुनाय ने रे,
पछे करे आहार हो ॥ भविक ॥ २५ ॥
वाणी सुन हरषित हुवे रे,
समझे चतुर सुजान रे ॥ भविक ॥
कईक मग सेरिया सारखा रे,
न समझे रूढ अयांण रे ॥ भविक ॥ २६ ॥

केईक चर्चा करवा वणी रे,
आवे रघुवीरजी रे पास रे ॥ भविक ॥
उत्पातरी बुद्धि करी रे,
समझावे छै तासरे ॥ भविक ॥ २७ ॥
कोइक क्रोध वशे करी रे,
बोले वचन कठोर रे ॥ भविक ॥
रघुपत खिम्या करे घणी रे,
वली सूत्रों रो भारे जोर रे ॥ भविक ॥ २८ ॥
परिपो देवे कोई मांयलो रे,
वले अन्धेरो जाण रे ॥ भविक ॥
समों वे वे रघुवीरजी रे,
ज्यांरे नाय मारग रो निशानरे ॥ भविक ॥२९॥
कोई जिन मति चरचा करे रे,
कोई अनमति आण रे ॥ भविक ॥
झलके नहीं रघुवीरजी रे,
गुण रत्तनों री खाण हो ॥ भविक ॥ ३० ॥
पोथीया बन्द रामति हुतारे,
चरचा करी धर धीर रे ॥ भविक ॥
उलटो मारग छोड़ाय ने रे,
ज्यां ने समझाया रघुवीर रे ॥ भविक ॥ ३१ ॥
चार तिर्थ उथा पिया रे,
विपरित श्रद्धा आण रे ॥ भविक ॥

ज्यांने रघुवीरजी हटाया रे,
किय़ांइ लग करु बखाण रे ॥ भविक ॥ ३२ ॥

नाम-करम रा अर्थी हुवे रे,
जिके गोपे छे अणा चार हो ॥ भविक ॥

सांच झूंठ रो निरणों नहीं करेरे,
इसड़ो राखे छे अन्धकार रे ॥ भविक ॥ ३३ ॥

खुशामदी तो जेकरे रे,
जिणरे पेट भरण रो कोड़ रे ॥ भविक ॥

रघुवीर खुशामदी नहीं करे रे,
ज्यांरी संगत देवे छोड़ रे ॥ भविक ॥ ३४ ॥

भावे साधु-साध्वी होवे रे,
श्रावक श्राविका जोय रे ॥ भविक ॥

झूठाजे झूठो करे रे,
सांचां साथे मोय रे ॥ भविक ॥ ३५ ॥

न्याय मारग सूं निरणो करे रे,
गावा गूबारी नहीं वात रे ॥ भविक ॥

अनाचार गोपे नहीं रे,
दीपे रघुपत साखिया तरे ॥ भविक ॥ ३६ ॥

मोटा उपकारी रघुवीरजी रे,
प्रसिद्ध सब संसार रे ॥ भविक ॥

जिभ्या एकने गुण घणा रे,
केतां नी आवे पार रे ॥ भविक ॥ ३७ ॥

सम्वत अठारे पच्चिस मे रे,
गांव सुरपुरा माय हो ॥ भविक ॥
पूज रघुपतिजीरा गुण किया रे,
चौथमल मन लाय रे ॥ भविक ॥ ३८ ।